नियम।

(१) पत्र का अग्रिम वार्षिक मूल्य सर्व साधारण से १॥) विद्यार्थियों से १) संवाद द
ताओं को मुफ्त भेंट होगा।

(२) विज्ञापन की छपाई एक बार के लिए प्रति ३) तीन मास के लिए =॥ छः मास
लिए १० पं० ७) तथा साल भर के लिए ८)॥ प्रति पंक्ति ले लिया जावेगा। इस
अधिक समय के लिये पत्र व्यवहार करना चाहिये।

(३) विज्ञापन की वितरण कराई एक बार के लिए ५) लिया जावेगा। कोई पत्र के प्रा
पृष्ठ में समाचार होना आवश्यकीय है। शीर्षक में पत्र का नाम ग्राम अवश्य छप
रहना चाहिये। पत्र निकलने के १० दिन पूर्व ही विज्ञापन भेजना उचित है।

(४) पत्र का समस्त रुपया मैनेजर "जीवन" तथा परिवर्तन या समालोचना के समा
चार पत्र व पुस्तकें "सम्पादक जीवन कानपुर" के पते पर भेजना चाहिये।

(५) जो महाशय लेखों द्वारा "जीवन" की सहायता करेंगे यदि उनके प्रकाशित होने
वाला पत्र अमूल्य लेखकों को भेंट किया जावेगा। वर्ष के अंत में सब का फोटू छा-
पकर प्रकाशित होगा उत्तमोत्तम लेखकों को पुरस्कार तथा उपाधि देने की भी
व्यवस्था की गई है।

(६) लेख शैली में सम्पादक को घटाने बढ़ाने का अधिकार होगा। गुमनाम कोई लेख न
छापे जायेंगे क्योंकि दूसरे लेखों का सम्पादक उत्तर दाता नहीं है।

(७) एजेंटों को २०) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा। विशेष बात चीत पत्र द्वारा निश्चय
होना चाहिए।

पता
जीवन कार्यालय
गिलिस बाजार — कानपुर

हिन्दू जाति का मुख मासिक पत्र ।

वर्ष १] ज्येष्ट १९६८ वा. जून १९११. [अंक १

निवेदन ।

वन का प्रथम अंक आज प्रकाशमान होकर सेवा में भेजा जाता है। अब तक पत्र निकालने में कई बाधायें उपस्थित रहीं। सबसे बड़ी अड़चन तो यही थी कि हमारा प्रार्थना पत्र दो मास के पश्चात् स्वीकार हुआ ; उस के लिए पूरी २ जांच की गई, किन्तु अंतमें फल यही हुआ जो दो दिन की जांच से हो सका था। इसके लिए हम पाठक वर्गों से क्षमा चाहते हैं। 'जीवन' अब नियमानुसार प्रकाशित होता रहेगा।

इसके संबंध में हम स्थानीय जिलाधीश और कोतवाल को धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने उचित जांच कर अपना कर्तव्य पालन किया और पत्र प्रकाशन की आज्ञा दी।

आगामी मास से ' जीवन ' को सर्वांग सुंदर बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया जावेगा। हमें विश्वास है कि हिन्दी साहित्य के समस्त लेखक इसपर यथा साध्य कृपा करते रहेंगे और हमारे प्रिय ग्राहक पत्रको स्वीकार कर हमें उत्साहित करेंगे।

जीवन का द्वितीय अंक वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा।

प्रकाशक.

प्रार्थना ।

अहो नाथ सर्वेश पिता माता
भ्राता पति,
कोइ न विनती सुनत लखत
प्रभु कस न विपति अति।
कब को हारे पर्यो दुहाई
देत दीनजन,
दीनबन्धु महाराज लेत नहिं
सुध केहि कारन ॥

हिन्दू जाति का मुख मासिक पत्र ।

वर्ष १] ज्येष्ठ १९६८ वा. जून १९११. [अंक १

निवेदन ।

वन का प्रथम अंक आज प्रकाशमान होकर सेवा में भेजा जाता है। अब तक पत्र निकालने में कई बाधाएं उपस्थित रहीं। सबसे बड़ी अड़चन तो यही थी कि हमारा प्रार्थना पत्र दो मास के पश्चात् स्वीकार हुआ ; उस के लिए पूरी २ जांच की गई, किन्तु अंतमें फल यही हुआ जो दो दिन की जांच से हो सकता था। इसके लिए हम पाठक वर्गों से क्षमा चाहते हैं। 'जीवन' अब नियमानुसार प्रकाशित होता रहेगा।

इसके संबंध में हम स्थानीय जिलाधीश और कोतवाल को धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने उचित जांच कर अपना कर्तव्य पालन किया और पत्र प्रकाशन की आज्ञा दी।

आगामी मास से 'जीवन' को सर्वांग सुंदर बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया जावेगा। हमें विश्वास है कि हिन्दी साहित्य के समस्त लेखक इसपर यथा साध्य कृपा करते रहेंगे और हमारे प्रिय ग्राहक पत्रको स्वीकार कर हमें उत्साहित करेंगे।

जीवन का द्वितीय अंक वी० पी० द्वारा भेजा जावेगा।

प्रकाशक.

प्रार्थना ।

अहो नाथ सर्वज्ञ पिता माता

भ्राता पति,

कोई न विनती सुनत लखत

प्रभु कस न विपति अति।

कब को द्वारे पर्यो दुहाई

देत दीनजन,

दीनबन्धु महाराज लेत नहिं

सुध केहि कारन ॥

मेरे अघ औगुन गिचारि गए
गति सुधरी है,
अधम उधारन यानि कौन
जिग विदित करी है।
हो तो जुपै सुशील सुमति
सदगति अधिकारी,
तो करतो क्यों है अनादरित
आस तिहारी।
करि लेतो अपने करमन को
आप भरोसो,
निरलज बनि केहि हेत तुमहिं
कहतो प्रभु पोसो॥
सुनियत बानर रीछ निशाचर
तुम अपनाए,
हौं तो मानुस मुहि कैसे बनि
है बिसराए।
यद्यपि अहौं कपूत तदपि
उनके कुल केरो,
जिनसों सिखि धनुर्वेद कियो
तुम मान घनेरो॥
फिर! हमरे संग नाथ सकुच
को काज कहा है,
चितवहु कृपा चितौनि न तो
अनर्थ महा है।
जैसे तुम सब शक्तिवान भूपति
भूपन में,
तिमि हम हूँ सिरताज निकाम
न निर्लज्जन के॥
जुपै निराश करहुगे
मुख मोरहुगे,

नाम पतित पावन अपनो
प्यारे बोरहु
पाले हम पै नाहिं, दया निज
यश पै ध
विनय हमारी सुन लीजे अरु
भिच्छा दीजै
देव दयामय दुःख भंजन
दशरथ कुल
प्रनत पाल! प्रनेश! प्रेमनिधि
प्रभुवर प्या
अब दुख नाहिं सहिजात दुहाई!
राम दुहा
बेगि प्रान हरलेहु कितौ बस
होहु सहाई
तुम्हरे हू बहुधाय बने हम
दास जगत के
औवें प्रेत समान हाय परिमन
मति हत के।
तव पद पंकज प्रेम सुधा
जानत हू त्यागैं,
मृग तृष्णा महं जान बूझि
पशु इव अनुरागैं॥
वार २ छल खाहिं तहूँ
धावहिं विषयन को,
सब कोई शुभ सिख देहिं न
थिर राखहि निज मनको।
जौन दुष्ट जन है इंद्रिन की
करत गुलामी,
तेहि समुझावै कौन भांति
हे त्रिभुवन स्वामी,॥

हा ! हा !! निज जीवन सर्वसु
हम किनपर वारैं,
जे कबहूं सुधी भृकुटिन सो
इत न निहारे ।
जिन के सुमन समान अंगपर
हिय बखान हैं,
तिनहीं कहं हम गनत परानहु
के परान हैं ।
जे भाखहिं केवल स्वारथ हित
ठकुर सुहाती,
तिनहीं मीत न मिलन हेत
हुलसाते यह छाती ।
मुख देखे की प्रीति रीति
जिनकी जग गाथे,
तन सुमिरन हित दृग मूंदत
तिनकी सुध आवै ॥
पेद वचन ते अधिक जमैं
कपटिन की बातें,
समुझत बूझत हू प्रिय सूझत
तिनकी घातैं ।
लोक लाज परलोक भीत धन
बल सुधि हा हा !!,
तिनहीं को अनुराग अगिनि
महं बीजन स्वाहा ॥
ताहू पै समुझत आपहिं हम
शुद्ध सुधरमी,
दीसहुगे नहिं कहा निरखि
हमरी बेशर्मी ॥
प्राहण

अथ सत्यम् ।

❊ जीवन ❊

प्रत्येक व्यक्ति समुदाय समाज या देश जब तक वह अपने कर्तव्यों का यथावत् पालन करता रहे, जब तक उस के अंतरात्मा में जागृत भाव स्थिर रहे, जब तक अपने उद्देश्य पूर्ति का उसको ध्यान रहे या ऐसा करना वह अपना लक्ष समझे, तब तक उसे जीवित कह सके हैं। जीवन का भाव ऐसा प्यारा भाव है; जीवन शब्द से वह सार्व भौमिक अर्थ टपकता है कि जिस में कोई विरुद्ध सम्मत्ति नहीं होसकी। वैयाकरणों ने इस शब्द की मीमांसा यों की है "जीव, भ्व, प्राणे" (कविकल्पद्रुम) तथा 'जीव्यते अनेन तत् जीवन' अर्थात् जिस करके मनुष्य जी सका है उसका नाम जीवन है इससे आशय यह है कि जागृत अवस्था को जीवनावस्था कहते हैं जागृत अवस्था से तात्पर्य यह है कि मनुष्य चैतन्यता का व्यवहार करता रहे, उसकी अभ्यान्तरिक नाड़ियों में शुद्ध रुधिर का प्रवाह हो, उस में सब प्रकार से प्रकृति की साम्यावस्था वर्तमान हो, वह अपने धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक हानि व लाभ को शुद्धान्तःकरण से समझे। उसकी तामसिक, सात्विक, और रजोगुण मय वृत्तियां शांत हों तथा इनके मूल कारण चिन्त विचार और कल्पना पर वह गंभीरता पूर्वक विचार करे। कवि कहता है:—

श्लोक ।

यावद् वायुस्थितो देहे,
तावज्जीवन मुच्यते ।
मायान् हन्ति जगत्प्राणो
जीवनम् हन्ति जीवनम् ॥

अर्थात् जब तक जागृत अवस्था विद्यमान है तब तक निस्तब्ध होने पर भी पुनः सजीव होने की आशा है । जिस प्रकार जगत्प्राण वायु प्राण को नष्ट कर देता है उसी तरह सार्वभौमिक जीवन व्यक्तिगत जीवन को नष्ट करने की शक्ति रखता है ।

इससे यह सिद्ध हुआ कि व्यक्तिगत जीवन से सामुदायिक जीवन प्रबल है, सामुदायिक से जातीय जीवन प्रबलतर है और इसी भांति समस्त देश का जीवन सर्वोत्तम है ।

'जीवन' की स्थिति में जीवन व्रत पालन करने के लिए भिन्न २ हेतु हैं, यह वह शक्ति है जिस का भाव प्रगट होतेही मनुष्य में ज्ञान उत्साह (*Solidity*) उत्पन्न हो जाता है—हमारे हिन्दू शास्त्रों में उनकी यों विवेचना की गई है ।

श्लोक ।

" विद्या शिल्प भृतिःसेवा,
गोरक्षं विपणिः कृपी ।
वृत्ति भेदं कुसीदंच,
दश जीवन हेतवः ॥

अर्थात् (१) विद्या (२) शिल्प कला (३) नौकरी (देश भाइयों की सेवा) (४) सेवा (निष्काम कर्म) (५) गोरक्षा (६) व्यापार (७) कृषि (८) रोजगार ((राजनीति पटुता) (१०) जीवन यह जीवन के दस हेतु हैं ।

हम ऊपर दिखाचुके हैं कि देश जीवन में योग देने से हमारा सब कल्याण है । अब विचार यह कि वर्तमान हम कौन हेतु से अपना जीवन कर रहे हैं । विद्या रूपी सूर्य्य का हमा में कैसा प्रकाश है ? शिल्प कला की कैसी है ? नौकरी से कितने मनुष्यों व भरता है ? इत्यादि ।

उपरोक्त प्रश्नों के मीमांसा से स्पष्ट होता है कि हमारे भारतीय जीवन में अ शोचजनक और आश्चर्य दायक परिवर्त गया । नौकरी और कृषि को छोड़कर जीवन हेतुओं से हम सर्वथा अनभिज्ञ हैं हैं और अब उनकी केवल छाया मात्र रह है किन्तु जैसा कहा गया है कि जब जागृत अवस्था विद्यमान है तब तक निस्त होनेपर भी पुनः सजीव होने की आशा है तदनुसार यदि तात्विक अवस्था को पहुंचा कर भारतवासी अपनी स्थिति का पता लग ले तो अब भी उन के जीवन के शुभ अ मंगलप्रद होने की संभावना है ।

भारतवासियों का सांसारिक जीवन इ समय व्यक्तिगत रूपसे ही व्यतीत हो रहा लोग दरिद्र होकर अपने २ स्वार्थ में इत माते हो गए हैं कि धर्म और जाति से उनक कुछ नाता नहीं, उन्होंने इतिहास की ओ से भी अपनी आंखे एक दम फेर ली हैं तथ

पुरातन वेद पुराण के प्रमाण की भी वह कुछ परवाह नहीं करते। संसार के अन्य देश आज जिस उपाय के अवलंबन से नित्य प्रति उन्नति कर रहे हैं, हमारे महाप्रभु अंग्रेज शासकों की आज जिस कारण विजय पताका समस्त भूमंडल में फहरा रही है, उनके गुणों का कुछ आदर्श न ले कर अवगुण ही परखना मानते हैं। इस प्रकार माली के पौधे की भांति उन की व्यापक उन्मत्तता को अपने उद्देशों रूपी औषधि द्वारा निर्मूल कर देने के लिए, जीवन के महत्व को लोगों के हृदय पट पर अंकित करने और जाति सेवा द्वारा जीवन व्रत पालन करने के लिए "जीवन" आज पत्र रूप में उपस्थित होकर भक्त प्रह्लाद की भांति भगवान की शरणागत लेकर प्रार्थना करता है।

श्लोक।

नाहंबिभेम्य जितेऽति भयानकास्य,
जिव्हार्कनेत्रभृकुटी रभसोग्रदंष्ट्रात्।
आंत्रस्रजः क्षतजकेसर शंकुकर्णा,
निर्ह्राद भीतदिगिभादरिभिन्नखाग्रात् ॥१॥
त्रस्तोस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्र,
संसार चक्र कदनाद्ग्रसतां प्रणीतः।
बद्धःस्वकर्म भिरुशत्तम तेंघ्रिमूलं,
प्रीतोऽपवर्ग शरणं ह्वयसे कदानु ॥ २ ॥

अर्थात्-स्वामी! जिसमें अति भयंकर मुख और जिह्वा, सूर्य के समान नेत्र भृकुटी का वेग और उग्र दाढ़ें हैं जिनके पेट में आंत की माला धारण हुई है; जिनके कांधे के बाल रुधिर से लथड़े हुए हैं; जिनके कान शंकु की भांति हैं; जिनसे उत्पन्न होने वाले शब्दसे दिग्गज भयभीत हो जाते हैं; जिनके नखों के अग्रभाग शत्रुओं को विदीर्ण करने वाले हैं-ऐसे तुम्हारे भयंकर रूप से मुझे तो कुछ भय नहीं है।

नाथ! मैं दुःसह्य और उग्र संसार चक्र में दुःख से भयभीत होचुका हूं क्योंकि हिंसक लोगों ने मुझे कर्मोंसे बांध कर डाल दिया है। जगत्पते! मुझपर प्रसन्न होकर संसार के दुःख दूर करने वाले अभय रूप अपने समीप मुझे शीघ्र बुलाइए।

सम्पादकीय कर्त्तव्य।

संसार के प्रत्येक विचार और तत्व की मान और मर्यादा चिरस्थाई बनाने के लिए समाचार पत्रों का सम्पादन तथा उनका प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। यह बड़ा ही महत्व पूर्ण विषय है। इस पर ध्यानपूर्वक करने से संसार के अन्य प्रकार की विषय वासनाओं से अलग होना पड़ता है। यदि यह शुभ कार्य उत्तम रीति से सम्पादन होजाय तो वह समाज में पूर्ण लाभकारी तथा हितैषी बन सकता है। इस कारण मनुष्य के सब कार्य धर्मोपकार की इच्छा या सीमा बनाने का हेतु इस के बस में हो जाता है। यद्यपि इस शुभ कार्य में विघ्न करने वाले अनेक प्रकार की कठिनाइयां हमें दिखाई पड़ती हैं, परंतु सम्पादक कर्त्तव्य [illegible]

दिलाया जाता है; अनीति की ओर उसकी प्रवृत्ति होती है तथापि इनसे बच कर रक्षा पाना उसका परमधर्म होता है उस समय तुच्छातितुच्छ भावों को बढ़ावा देना उस का कर्तव्य नहीं है।

नोट-जैसे इस प्रकार के संवाद बिना समझेबूझे प्रकाशित करना जिसे पढ़कर देश में एकदम जोश फैल जावे तथा उसका परिणाम अच्छा नहो और उन्हे ऐसे ढंग से लिखना जो गाली गलौज से भराहो। ऐसी उत्तेजना से उसकी कीर्ति मे धब्बा लग जाता है।

व्यर्थ गपशप मारने से उसे अलग रहना चाहिए। उस को बिना विचार किए नई खबरें प्रकाशित करने के भाव को रोकना चाहिये (क्योंकि ऐसी दशा में बहुतसी असत्य होती हैं और उनका बुरा प्रभाव पड़ता है) किसी हेतु की व्याख्या करते हुए उसे व्यर्थ आक्षेपकी शरण न लेनी चाहिये। उस में किसी तरह से पक्ष सम्बन्धी तरफ दारी कदापि न होना चाहिये।

प्रत्येक विषय में उसे साधारण समाज की सम्मति समझ कर राय देनी चाहिये। (शिक्षित समुदाय की सम्मति ही सर्व साधारण के विचार हो सके हैं क्योंकि देश व जाति की जिम्मेदारी अधिकांश इन्हीं पर है)

आक्षेप सुन्दर और प्रिय शब्दों में होना चाहिये।

उसका यह कार्य बड़ाही गवेषणा पूर्ण कार्य है अतः उसे नितांत नम्र और हार्दिक शीलवान होने की आवश्यकता है। उसे परमात्मा ने साधारण समाज पर अपना आधिपत्य जमाने का अवकाश प्रदान किया है।

साधारण समाज को उचित मार्ग निर्देशन करना, असत्य और अनीति का मायास्वरूप प्रगट करना, निर्बलों की सहायता अत्याचारी का सामना कर उसे नीचा दिखाना और ठीक मार्ग पर चलने वालों का सदैव पक्ष लेना सम्पादन का मुख्य ध्येयहै।

किन्तु उक्त कर्तव्य को सम्पादन करने के लिए पूर्ण योग्यता और विज्ञता की आवश्यकता है। उसे इस स्थूल विद्या को सूक्ष्म विद्या में अध्ययन करना होता है। कर्मक्षेत्र में अवतरित होते समय सूक्ष्म विचारों से स्थूल तथा अन्त में स्थूल से सूक्ष्म विचारों में लय होना ही सार्थक और नियमित जीवन है। इसी लिए मनुष्य का जन्म दिया है और यह काम ही अन्य योनियोंसे मनुष्य में विशेष है।

बात यह है कि मनुष्य का शरीर ही एक प्रकार का प्रेस है, उसमें दशों इंद्रियां ही कम्पोजीटर हैं। प्रत्येक संस्कारित्व वर्ण और स्वरही भाषाहै। इस भाषा का नामही शब्द ब्रह्म है इसके प्रूफ संशोधक (भ्रम सुधारक) ज्ञानेन्द्रिय हैं। प्रत्येक इंद्रिय द्वारा निर्धारित विचार ज्ञानेन्द्रिय द्वारा संशोधन होते हैं। इस प्रेस में जो विज्ञापन छपता है उसे तत्व दर्शन कहतेहैं मनुष्य

का मनही यथार्थ में प्रेसमैन है । मनका काम केवल प्रकाशन करने का है । इस भाव प्रकाश द्वारा संसार के बड़े २ कार्य होतेहैं और इसी दूसरे शब्दों में "साहित्य" कहते हैं। संसार की प्रत्येक आविष्कार की हुई वस्तु ही सम्वाद है और इन सम्वादों का एकत्रित होना ही समाचार पत्र है । प्रत्येक वस्तु की दूरदर्शिता द्वारा दशा दर्शनाही सम्पादकीय सम्मति है । ईश्वर ऐसे समाचार पत्रों और उनके भाव संपादकों की सदैव उन्नति करे । ।क्रिमाधिकम ।

भगवान् गौतम "बुद्ध" का चरित्र ।

(१)

भारतवर्ष के प्रसिद्ध राज्यधानी कपिल वस्तु का राज्य उस समय शाक्य वंश के शुद्धोदन (शुद्धधान) नामक राजा के आधीनथा। उसकी रानी माया देवी बड़ी सुशीला और सुहृदया थी । हमारे चरित्र नायक भगवान गौतम बुद्ध उन्ही के पवित्र रज और वेथ से उत्पन्न हुए ।

परमात्मा को जब किसी के तेजमय जीवन से कोई गूढ़ अभीष्ट सिद्ध कराना होता है तो एक विचित्र प्रकार की शांति, प्रगाढ़ दंपत्ति प्रेम का भाव उपस्थित हो जाता है यही दशा इस समय शाक्य घराने की थी।

पुरातन परिपाटी के अनुसार 'असित' नामक ऋषि को बालक दिखलाया गया। महात्मा जी उसे देखकर रो उठे और विशेष आग्रह पर उन्होंने यह व्यथावर्णन की।

" राजन ! तुम को प्रसन्न होना चाहिये । तुम्हारा पुत्र अत्यंत श्रेष्ट और सगुण मयहै एक समय होगा जब यह सारे संसार को मोक्ष मार्ग दिखलायेगा । वह निराश्रयों का आश्रय,धन हीनो का सर्वस्व और भूले भटके पथिकों का पथ मार्ग होगा इसका सारा जीवन परोपकार ही में बीतने की सम्भावना है।

सर्व सम्मति से बालक का नाम सिद्धार्थ रक्खा गया । और युवा होने के उपरांत उसकी माता इस नश्वर शरीर को त्याग परमधाम सिधार गई।

(२)

हठात् उस वीर बालक का विवाह कोली की राजकन्या यशोधरा के साथ कर दिया गया । उस के महल में भोग विलास की सम्पूर्ण सामिग्री उपस्थित की गई ताकि सांसारिक वासनाओं को छोड़ उसका चित्त निराश न हो जावे।

परन्तु यह वाह्य आडंबर उस के चित्त को वश में न करसके । सिद्धार्थ ने एकदिन अपने पिता से नगर भ्रमण की आज्ञा मांगी आज्ञा स्वीकृत होजाने पर रथ में चढ़ वह बाहर निकला । एक स्थान पर उसे एक वृद्ध दिखलाई दिया । सिद्धार्थ को यह प्राकृतिक दृश्य प्रथम ही देखने का सौभाग्य था अतः वह आश्चर्यान्वित होकर सार-

थी से पूछने लगा कि-"यह किस प्रकार का मनुष्य है ?"

सारथी ने सविनय निवेदन किया कि-यह वृद्धावस्था के चिन्ह हैं । बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था जीवन के प्रधान अंग हैं ।

इन शब्दों ने सिद्धार्थ के हृदय पर एक विचित्र प्रभाव डाला । आगे उसे एक रोगी हांफता हुआ दिखाई दिया । राजकुमार ने पुनः सारथी से वैसाही प्रश्न किया सारथी ने इसकी भी यथार्थ दशा बतलाकर उसके शंका का समाधान करना चाहा । किन्तु समाधान होने के स्थान पर उस के हृदय की पूर्ण प्रफुल्लता फीकी पड़ गई तथा जीवन सुखभोग से घृणा होगई ।

न मालूम ईश्वर की क्या इच्छाथी कि उसी समय मार्ग में एक लाश जाती हुई दीख पड़ी ।

राजकुमार उस निर्जीव देह को देखकर कांप उठा । मित्रों और सम्बन्धियों को विलाप करते हुए देख कर उनसे वह व्याकुल होकर पूछने लगा कि "क्या संसार में यही एक मृतक है ?"

नहीं राजकुमार नहीं प्रत्येक जन्मधारी व्यक्ति एक न एक दिन इसी प्रकार पंचतत्व में मिलाना है ।

इस भाव ने उस के हृदय की कोमलता को समूल ही विध्वंस कर डाला उसने मन कहा—" ऐ जीवधारियों तुम्हारे व्यर्थ को धिक्कार है तुम्हारी मोह निद्रा पर शोक होता है । चेतो? अभी सबेरा है"

(३)

सांसारिक आमोद प्रमोद सिद्धार्थ के लिए अब निष्फल हैं । सिद्धार्थ अब माया लिप्त राजकुमार नहीं रहा, वरन अब उस ने हृदयस्थ चेतनशक्ति के प्रकाश को समझ लियाहै । अब गृहस्थी, कुटुम्ब परिवार की ममता को छोड़कर अपने जीवन रक्षा के लिए एक सुनियमित मार्ग का अन्वेषण कर एक विचित्र और परमोपयोगी कार्य साधन के लिए तत्पर है । उसे मालूम होचुका है कि सांसारिक सुख दुखदाई है, सुवर्ण के पात्र में विष है । मृत्यु भवितव्य और आवश्यक है ।

सिद्धार्थ की इच्छा उस बाह्य तत्व के निरीक्षण करने की हुई जिस के वशीभूत हो कर मनुष्य अनुचित कर्म कर बैठतेहैं । अतः उसने रात्रि को श्रमण नामक एक महात्मा से मुलाकात की इस मुलाकात से उस के आंतरिक भाव और दृढ़होगए । वह समझ गया कि बिना रात्रि हुये दिन नहीं होता । नेति शब्द का रूप उससमय उसके हृदय में खचित होगया और वह देश धर्म की सेवा का मूल्य पिता की इस आज्ञा से अधिक समझ कर एकान्त वास करने को उद्यत हुआ । वह एक बार अपनी प्रिय पत्नी को भेंट लेना विचार कर अपने महल में लौट गया और चाहा कि अपने प्राण प्रिय पुत्रको गोद में लेकर चूम ले । पर उसे सोते देख वहभी न कर सका और वहीं गंभीरता के

साथ कंथक नामक अश्वपर सवार होकर जंगल की राहली।

(४)

नगर के बाहर आकर उसने गेरुए वस्त्र धारणकर लिए चन्ना सारथी के हाथ घोड़े को पितृगृह में भेज दिया। किन्तु उसका राजकीय रूप बाह्य भिक्षुक भेष से छिप नहीं सकाथा। उसे आते देख लोग उसे सर्वथा अभिवादन करते थे। राजगृह नामक नगर में आकर उसने प्रथम भिक्षा रूप से अपना जीवन व्यतीत करना निश्चय किया उस नगर के राजा बिम्बसार ने उसे पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश कराने की चेष्टा की किन्तु सफल मनोरथ न हुआ और सिद्धार्थ ने उस के शंकाओं को भी पूर्णतया समाधान कर दिया उसके उपदेश का सारांश यह था।

राजन् तुम्हारी इस कृपा के लिए धन्यवाद देता हूं। दान का फल बड़ा है सात्विक दान को देकर मनुष्य परमार्थ मोल लेता है। किसी तरह से मैंने भी ऐसा करने का साहस किया है।

विषय भोग रूपी अग्नि स्वयम् हृदय में स्थित है उसमें आसक्त हो जाने से घी का काम होता है अर्थात् अग्नि भभक उठती है और हृदय में सर्वस्व को स्वाहा कर देती है।

इसके लिए पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता है। बंधन में अधिक समय तक रहना उचित नहीं। बुद्धिमान मनुष्य को विषय वासना को त्याग औरों के लिए आदर्श बनना चाहिए। राजा सिद्धार्थ की बिनती कर और यह प्रतिज्ञा करवाकर कि अपना अभीष्ट सिद्ध करने के उपरान्त पुनः इसी स्थान से वापस आना पड़ेगा। विदा हुआ।

(शेष अग्रे)

वर्तमान दशा।

(लेखक पं० महावीर प्रसाद "मधुप" कानपुर)

कैसे माया के जाल में भूले पड़े,
हम हैं हमको तो कुछ भी खबरही नहीं।
जिसने पैदा किये यह दोनों जहां,
उसकी हमको है बिलकुल खबरही नहीं॥

काम क्रोध व मोह में हम हैं फंसे,
लोभ दुख ने अंग हमारे कसे।
आप स्वार्थ के चिन्त में कैसे धसे,
दीन दुखिया की कुछ भी खबरही नहीं।

कोई गांजा व चांडू में माते फिरे,
कहीं पायें छुरा गुप्ति फांसि गिरे।
कभी बाहर अंग दिखाते रहे,
कहने सुनने का कुछ भी खयालही नहीं।

कभी नाचने गाने में खोते रहे,
कभी खाने व पीने में खोते रहे।
कभी निंद में सोते दिनों को रहे,
इसे हालों के दुख की खबरही नहीं॥

याम धर्म का दिलसे विसारे हुए,
र्षा मत्सर को चित्त में धारे हुए।
च्चे जीवन का आनन्द छांड़े हुए,
कहते इस पर भी हमसा यशरही नहीं ॥

धिक जीवन! तुम्हारा धनी जन सुनो,
धनको जोड़े वृथा चित्त में क्या गुनो।
प्यारे जीवन को अच्छा बनाओ सुनो,
इससे बढ़कर के कोई आनंदही नहीं ॥

ऋषि भीष्म के जीवन को चित्त धरो,
सदा राम व कृष्ण को याद करो।
बुध शंकर दयानन्द का आदर करो,
जीवन सुधारेगा इसमें कसरही नहीं ॥

वीर लक्ष्मण का आदर्श लेके चलो,
अंग धर्म भरत्थ की भस्म मलो।
शीश राजा हरिश्चंद्र को धारलो,
जीवन सुधरेगा इस में कसरही नहीं ॥

जैन आर्या सनातन का ध्यान तजो,
बौध शैवी मुसल्लम से दूर भगो।
त्यागि ईर्षा दया धर्म हो में धरो,
जीवन सुधारेगा इस में कसरही नहीं ॥

उम्र आधी तो सोने में मिट्टी हुई,
बाकी चौथाई बालक पने में गई।
बाकी हिस्से में भी ईश्वर भक्ती हुई,
जीवन सुधरेगा इसमें कसरही नहीं।

जैसा जीवन सुनाये सुना तुम करो,
लेख उसके हमेशा विचारा करो।
सांचे आनन्द से चित्त धारा करो,
जीवन सुधरेगा इसमें कसरही नहीं ॥

यह जीवन समाचार प्यारा तुम्हें,
सीख देवेगा उम्मीद पूरी हमें।
जो हैं अनपढ़ विचारे सुनादो उन्हें,
जीवन सुधरेगा इसमें कसरही नहीं ॥

“ साहित्य सभ्यता का प्रधान अंग है ” ।

(लेखक—महात्मा पं० बालकृष्णजी भट्ट प्रयाग)

सभ्यता के संबंध में सब लोग सम्मिलित हो एक सी सम्मति में समान सहमत हो सो नहीं है, तथापि साधारण साहित्य Literature प्रत्येक देश और समाज का इस बात की साखी भररहा है कि जो जाति जितनाही सभ्यता की सीमा तक पहुंची है वहां उतना ही साहित्य सर्वांग पूर्ण रहा। देश एक समय सभ्यता की अंतिम सीमा तक पहुंच नीचे गिर गया और अब कोई बात ऐसी न रही जो उसकी पुरानी सभ्यता के घमण्ड की बानगी हो। केवल साहित्य ही वहां के उत्कर्ष की झलक देता हुआ चिरस्थाई रहता है। इतनाही नहीं वरन यह भी कि कब कितनी उन्नति वहां के लोगोंने किसर विषय में की थी।

जिस देश में लोग अधिक भोगलिप्त

और आमोद प्रमोद रत रहे; वहां के साहित्यमें शृंगार रसकी विशेष छान बीन और तरक्की पाई जायगी। जहां शौर्य, धैर्य, युद्धोत्साह विशेष रहा वहां का साहित्य वीररस प्रधान होगा-एवम् जहां और जिस समाज में सब लोग विशेष शांतशील,पूजा, पाठ, ध्यान, धारणा, जप तप और आत्मिविषय भाव पूर्ण रहे-वहां के साहित्य में केवल शांत रसको छोड़ और कुछ न होगा। जहां के लोग अधिक चतुर रस; तराश खराश, गप्प गप्प मारने में प्रवीण रहे हैं गे वहां के साहित्य का प्रधान अंग हास्यरस होगा। केवल इतनाही नहीं, किंतु देश का उत्थान और पतन साहित्य पर निर्भर है।

वीरत कवि ने अपनी कविता के ओरसे यूनान देश को स्वच्छन्द कर दिया-यह किस से छिपा है कि भूषण कवि ने ऐसे उत्तेजक कवित्त शिवराज की प्रशंसा में रचे, कि शिवाजी को म्लेच्छ वंश पर बड़ी उत्तेजना आई-औरंगजेब की चटकीली लाखों सेना को छार में मिलाय दक्षिण में अपना प्रभुत्व उन्हों ने स्थापित करही डाला। कवि अपनी प्रतिभा से छिपी से छिपी बात जान लेता है।

जानीतेयन्नचंद्रार्कौ,
जानते यन्नयोगिनः।
जानाति यन्नभर्गोपि,
तज्जानाति कविःस्वयम्॥

अर्थात्—" जगत के कर्म साक्षी सूर्य और चन्द्रमा जिसे नहीं जानते, अपने योग बल से सर्वज्ञ योगी जन जिसे नहीं जानते, कहां तक कहें घट घट में व्यापक सदाशिव जिसे नहीं जानते उसे कवि स्वयम् क्षणभर में जान लेता है।"

वृहत्कथा सरित्सागर में योगानन्द और वररुचि कात्यायन की कथा में लिखा है कि एक दिन एक चितेरे ने योगानन्द को एक चित्र लाकर दिया जिस में राजा और उस की पटरानी का चित्र एक ही में था, चित्र बड़ा मनोहर और सजीव सा मालूम होता था। राजाने प्रसन्न हो, बहुत कुछ इनाम दे उसे विदा किया और चित्र राजमहल में टँगवा दिया। कात्यायन को किसी काम से राजमहल में जाना पड़ा। भीत पर तसवीर लटकी देख, राज महिषी के लक्षणों से पूर्ण उसे पाय, अपनी प्रतिभा से एक तिल की कमी उसकी जांघ में देख, बना कर चले आये। योगानन्द जब महल में गया तो तिल का निशान रानी की जांघ मे देख अचरज में आया। नौकरों से पूछने पर मालूम हुआ कि तिल कात्यायन बना कर चले गये। अब इसे संदेह हुआ कि रानी के गुप्त स्थान में तिल को मेरे बिना दूसरा कौन जान सकता है। अवश्य यह पापी नराधम कात्यायन मेरे अन्तःपुर से कुछ लगाव रखता है तो इस कर्म चांडाल को अब जीता न छोडूंगा। क्रोध से जलताहुआ मंत्री शकट ल को बुला के सब हाल कहा और आज्ञादी कि, कात्यायन को मरवा

ो ? मंत्री ने कात्यायन को विद्वान् और
ण समझ और राजा की निर्विवेकी
द पर पछताता हुआ कात्यायन के बदले
ी दूसरे मनुष्य का मरवाय अपने घर
छिपा रक्खा । एक दिन योगानन्द का
राजकुमार हिरण्य गुप्त वन में आखेट
गया था, रास्ता भूल गया, सांझ हो
उसी समय एक सिंह उसे देख पड़ा
नी जान बचाने को एक पेड़ पर चढ़
ा और विचार में था कि इसी पेड़ पर
ी तरह रात काट, सवेरे घर चले जावें
। क्षण भर में सिंह का डरवाया एक
छ भी वहां आ पेड़ पर चढ़ गया और
हुए राजकुमार से मनुष्य की बोली में
ा 'मत डरो ! तुम मेरे होगए, मैं मित्र
ह न करूंगा' और करार होगया कि
हले दोपहर और दूसरे दो पहर हम तुम
ारी जाग कर बितावें'

राजपुत्र ने कहा-"पिछले दोपहर में
जागें गे तुम पहरा दो-"यह कह राज
ार सोगया । थोड़ी देर बाद सिंह ने
कर रीछ से कहा हम तुम पशु की
ि बिरादरी हैं, यह ! हम तुम दोनों का
है, इसे ढकेल दो हम इसे खाकर चले
ैं तुम्हारी जान बचे-रीछ ने कहा-'वि-
सघात महापाप है, उस में भी मित्र से
ऐसा न करूंगा । सिंह निराश होगया ।
दोपहर जब रीछ के सोने की पारी
ह फिर आया और राजकुमार से
'रीछ को नीचे गिरा दो मैं उसे खा,

तृप्त हो चलाजाऊं, तुम प्राण संकटों से
बचो । सिंह की बात पर कुमार राजी हो
गया और उसे ढकेला चाहता था कि रीछ
जाग उठा और कहने लगा तुमने विश्वास
घात किया, मैं तुम्हें मारडाल सक्ता हूं पर मैं
ऐसा न करूंगा, किन्तु इस विश्वासघात के
लिए तुम्हे शाप देता हूं कि तुम्हे उन्माद हो
जाय और जब तक यह हाल न खुले तब
तक तुम पागल रहो'। भोर होते राजकु-
मार घर लौट आया । पुत्रकी यह दशा देख
राजा दुःखी हो बोला "मुझ निर्विवेकी को
धिक्कार है, इस समय यदि कात्यायन
होते तो इसके उन्माद का कारण बतला
देते ।" शकटाल कात्यायन के प्रगट करने
का अच्छा अवसर देख बोला 'महाराज !
मैंने आपका कोमल स्वभाव जान उसे
नहीं मारा' शकटाल कात्यायन को लेआया
और कुमार को देखतेही उन्हों ने बतला
दिया कि इसने मित्र से विश्वासघात किया
है उसीका यह फल है ।' योगानन्द ने पूछा
'तुमने यह कैसे जाना' कात्यायन बोले
'जैसे रानी के जांघ का तिल जान गयाथा।
राजन् ! लक्षण अनुमान और प्रतिभा से
बुद्धिमान छिपी से छिपी बात जान लेते हैं'
योगानन्द अत्यन्त लज्जित हो मनही मन
पछताने लगा – राजकुमार के शाप की अ-
वधि पूरी होगई, चंगा होगया । पिता पुत्र
दोनों लज्जित हो कात्यायन वररुचि के पांव
पर गिड़गिड़ाने लगे और बहुत कुछ उनका
सत्कार किया । इससे स्पष्ट है कि कवि की

भा अद्भुत है जिस के बल वह अपनी
शैली में न जानिये क्या २ दिखा
है।

' नाम रूपात्मकं विश्वं,
यदिदं दृश्यते द्विधा।
तत्राद्यस्य कविः कर्ता,
द्वितीयस्य स्वयं भुवः ' ॥

कवि कल्पना के द्वारा जिस वस्तु को
ा निर्धारित करता है। एक यह और
रा दृश्य जगत—दो तरह की सृष्टि है,
में पहली का विधाता कवि है, दूसरे
ब्रह्मा है।

यदि वाल्मीकि और व्यास न होते तो
ायण और भारत की कल्पना के बिना
रचन्द्र और पाण्डव तथा कृष्ण को कौन
नता ? हम लोग प्रकृति की साधारण
टनाओं को प्रतिदिन देखा करते हैं किन्तु
न के प्राकृत तत्वों को दूसरों को समझा
हीं सके। कवि की प्रतिभा उस का इस
रह से वर्णन कर देखायेगी कि उसकी
क तस्वीर आदमी के चित्त२ पर में खिंच
यगी। हम लोग संसार के सब पदार्थों
देखते हैं किन्तु वैसाही जैसा सादे की
दूक को जिस में हीरा बन्द पड़ा हो।
दूक का आकार उसका लम्बान चौड़ान
य देखते हैं, पर सन्दूक का ताला खोल
की कुंजी कवि ही की प्रतिभा में है।
सी तीव्र कुंजी से संदूक का ताला खोल
र गुप्त हीरा जो उसमें बन्द है पहले आप
र देखता है फिर दूसरों को भी उसकी
परख इत्यादि बतलाता है।

कवि मानों सौन्दर्य का प्रतिनिधि स्व-
रूप है। पदार्थ मात्र में जो कुछ निकाई और
लोनाई है उसे चुन अपनी कवित्व शक्तिको
उस पर काम में लाता है। सच तो यह है
कि साहित्य की सृष्टि ही निराली है विज्ञान
दर्शन आदि सब एक प्रकार साहित्य में
समावेशित हो सकते हैं जो अंग्रेजी में
Literature के नाम से कहे जाते हैं;
किन्तु प्रधानतः कवि की प्रतिभा का प्रति-
फलही साहित्य का द्योतक कहा जायगा।
जो जिस विषय में विद्वान हैं उनको उस
विषय में पूरा आनन्द मिलताहै किन्तु उन
के आनन्द की मिठास की उपमा मिसरी के
टोरे से दी जासकती है कि दोनों को उस
के पीसने में पहले फोस मिल लेना है तब
उसकी मिठास का स्वाद मिलताहै। काव्य
के मिठास की समता द्राक्ष के साथ दी जा-
सकती है जिस में दांतों को किंचित् क्लेश
नहीं होता—जीभ पर रक्खा कि गले भीतर
पहुंच—अपनी मिठास से मनको तृप्त कर
देता है।

काव्य रस का आनन्द ही कुछ निराला
है। सब उस आनन्द के अनुभव के पात्र
नहीं हैं।

"[illegible] ज्ञा न न कर्षता
न च [illegible] पुरुषा कवि [illegible]
[illegible]।"

काव्य की सुन्दर देवी ' अनुराग ' के
[illegible] सुन्दर और पुरुष भी बड़ी [illegible]

ाघु है। जैसे प्रामाण ग्रन्थ काव्य के नहीं
हो सके वैसे ही पुरुष भी वही उस के गुण
को परख कर सके हैं जो नागरिक सभ्य हैं
तो सिद्ध हुआ कि सभ्यता का प्रधान अंग
साहित्यही है।

शारीरिक पराक्रम।

(लेखक०—श्रीमान मो० दौरास्वामी आयंगार)।

देश बांधवों !

भारत वर्ष किसी समय अपने शारीरिक पराक्रम के लिए समस्त संसार में विख्यात था यहां की पूर्व राजधानी इसी व्यायाम संबंधी पराक्रम के नाम से ही संबोधन की जाती थी। अयोध्या नाम केवल इसी कारण पड़ा है कि उसकी उपमा योग्य सारे भूमंडल में कोई नजर न था (अ—योद्धा) महाभारत में कौरव और पांडवों के समय तक हम पराकममें अग्रगण्य थे किन्तु पश्चात् अपने दुर्भाग्य से हम उस ओर से असावधान होगए और अन्य विषयों की भांति इस विषय में भी परदेशियों के आधीन हो गए। छान्दोग्योपनिषद में स्पष्ट लिखा है।

" यलंवावविज्ञानाद्भयोऽपि इशतं विज्ञान बलामेकोवलवाना कंपयते स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवति "

" तथा बलेन पृथ्वी तिष्ठति बलेनान्तरिक पर्वता बलेन देव मनुष्या बलेना तृण वनस्पतयः।

अर्थात् एक बलवान पुरुष सैकड़ों वि[illegible]नियों को अपने पराक्रम से कंपित कर दे[illegible] विज्ञान की अपेक्षा बल से सर्वदा श्[illegible] और बली होने से ही उठकर खड़ा हो[illegible] है। बल से ही पृथ्वी अन्तरिक्ष तथा[illegible] और पर्वत समूह परम देव मनुष्य प[illegible] तृण वनस्पति आदि समस्त कि[illegible] हुआ है।

इस लेख में Physical cul[illegible] र्थात् " अपने स्वास्थ्य को किस प्र[illegible] रना चाहिये " इस विषय में मैंने र[illegible] तक अनुभव किया है-लिखा जाय[illegible]

हमारे ऋषियों ने जिस व्यायाम (व[illegible] की पूर्व काल में उत्पति की थी उसे[illegible] व्यायाम को मैं ६ वर्ष से १६ वर्ष [illegible] तक करता रहा। १८ से २६ वर्ष की[illegible] तक मैं ने कुश्ती लड़ी इस कुश्ती में[illegible] से मद्रास प्रदेश के बहुत से पह[illegible] रास्त हुए।

२६ वर्ष की आयु में मेरे पिता[illegible] वास हो गया। उस समय विवस[illegible] छोड़ ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करन[illegible] जमींदारी, कृषि आदि की ओर [illegible] इसके बाद विलायत का ईगन से[illegible] (मद्रास) आकर अपना पराक्रम [illegible] लगा। उसे मैं ने देखा किन्तु चित्त [illegible] उस समय यह विचार उत्पन्न हुआ [illegible] यह लोग गोश्त आदि खाकर अपने[illegible] को इतना बलवान बना सके हैं तो [illegible] दाल भात आहार करने वाले हिन्दो[illegible] को यह शक्य नहीं है।

प्यारे भाइयों ! उस समय का आप वि- चार करें कि आप के पुरुषे जंगल में रहकर कंदमूल फल खाकर कैसे बलवान और कर्मी होते थे-यह आपने पुस्तकों में अ- वश्य पढ़ा होगा।

मद्रास में प्रो० राममूर्ति नायडो का खेल अगस्त १९०६ से आरंभ हुआ। मैं ने राममूर्ति जी से मिलकर कहा " हम और आप दोनो हिन्दू जाति मे उत्पन्न हैं। अच्छा हो यदि दोनों मिलकर काम करें क्योंकि अभी इससे अधिक पराक्रम संसार को दिखलाना है "। किन्तु दूसरे दिन के ४॥ बजे श्रीयुत राममूर्तिजी ने बुलाकर कहा कि"ब्राह्मण कुछ नहीं कर सके इसके लिए गोश्त आदि खाना पड़ता है " इन शब्दों ने मुझे हताश करदिया और अंत में मैंने २० अगस्त १९०६ को उक्त महानुभाव को एक चेलेंज (ललकार) देने का साहस किया पर उचित उत्तर न मिला। इसके बाद भी मैंने उन्हें बंबई आदि नगरों में कई बार ललकार दी पर निष्फल हुई।

आखिरकार २६ फरवरी १९०६ को कल- कत्ते के स्टेटसमॅन द्वारा मैने समस्त भारत वर्ष को ललकार All India chalange दिया इसपर राममूर्ति नें उत्तर देकर मुझे कलकत्ते बुलाया उस समय मैं बंबई में था मैने कहा कि कलकत्ता व बंबई में बुलाना ठीक न होगा उचित है कि आप बीच स्थान (दरभंगा) में आ जावें इसके लिए हम पुरष्कार रूप से (१०००) रुपया यहां के दीवान के पास जमा किए देते हैं।

इसका कोई उत्तर मिलते न देख मैं ने एक और नोटिस Solicitors दिया इस पर मुझे २१ ता० तक कलकत्ते बुलाया हुआ किन्तु वह १९ ता० को ही कलकत्ते से रंगून चले गए। भारत वर्ष को हम क्या ! सारे संसार को चेलेंज देने को तैयार हूँ जिस स- मय और जहांपर जिसका चित्त चाहे मैं उ- पस्थित हो सकता हूं।

" अंग भूषण प्राणाय योगासन वीर्य बल सिद्धिः "

प्रत्येक वस्तु का कारण या कर्ता प्राणा- याम (दम है) प्राणायाम से योग की उत्पति हुई। योगासन८८४ हैं। ८८८४ योगासनों ने ८४ दंड प्रगट किए। और ८४ दंड से ही २१ बैठक नियत हुए हैं। व्यायाम रूपी शक्ति का उपयोग कर शारीरिक बल प्राप्त करने से देह का मूल्य जाना जा सक्ता है। रेशमी वस्त्र आदि ढकने से शरीर की ऊपरी शोभा होती है।

जितना योगी मनुष्य को अभ्यास विद्या द्वारा लाभ व अनुभव होता है उतनाही व्यायाम करने वाले को शारीरिक पराक्रम से हो सकता है, अन्तर केवल इतना है कि पुरा- तन समय में जो कंदमूल आदि हमारे पूर्वज खाते थे उससे उनका मस्तिष्क अध्यात्म विद्या की ओर लगजाता था किन्तु आज कल के भोजन (गोश्त दाल भात आदि)से ऊपर को जाते हुए भी स्थिति से नीचे गिर पड़ने का भय रहता है। इस लिए जितना न्यून (Limited) होसके भोजन करना चाहिये। अधिक भोजन से विशेष लाभ नहीं।

मैं स्वयम् ३ दिन में १ सेर चावल खाता हूं तथा पाव भर दूध प्रातः और पाव भर शाम को लेता हूं।

१०० दण्ड और २०० बैठक करने वाले को आधा सेर दूध, पांच बादाम तथा छटांक भर शकर व्यवहार करना चाहिये।

व्यायाम के बाद ऊपर का पसीना निकल कर सूखजाने पर स्नान करना चाहिये। स्नान करते हुए भी जल में अधिक समय तक न रहना चाहिये क्योंकि जल में मनुष्य का रक्त खींच लेने की शक्ति है स्नान के समय ५-७ मिनट जल में रहना उचित है।

स्नान कर बदन ढांक हवा में थोड़ी देर अवश्य रहना चाहिए किन्तु अधिक समय तक हवा में भी न रहना चाहिए। जलकी भांति हवा में भी कांति खींच लेने का गुण है। मिट्टी के भीतर नाना प्रकार के शाक भाजी आदि उत्पन्न कर मनुष्य को बलवान बना देते हैं, उस में सब प्रकार की शक्ति विद्यमान है।

मनुष्य जिस वस्तु को पाने के लिए निरंतर उद्योग करे वह उसे अवश्य प्राप्त होगी। मैंने शारीरिक बल के अभ्यास में किसी को गुरू नहीं किया था किन्तु ईश्वर की कृपा तथा अपने हार्दिक प्रेम के कारण जान सका हूं। मुझे विश्वास है कि यदि मेरे भाई कथनानुसार अभ्यास करें तो वह मुझ से अधिक बलवान हो सके हैं। ईश्वर वह दिन फिर दिखावे जब भारत वर्ष में बलवान पुरुष उत्पन्न होने लगें। किमधिकम्।

स्त्रियों के लिये।

प्यारी बहनों सेविका का हृदय केवल इसी लिये है।

हमारा भारत सर्व… दशा पर भी अपनी … गरी की उपमा में कभी २ निराशाही… ता है। पठन पाठन शैली में वर्तमान … स्थानुसार भी राजकीयादि भाषाओं… किसी तरह न्यून नहीं है—इन सब … कारण यदि आप विचारें तो हमारी … स्त्री के तारतम्य का फल प्रतीति हो… पूर्वकाल में जैसी विदुषी राजविद्या… दाता देवियां थीं, अपने प्रताप से … सन्तानों को चक्रवर्ती धुरंधर विद्वान… डालती थीं। रामाश्वमेध में श्री सीता… महारानी ने पुत्र लवकुश द्वारा जगद्वि… श्रीमहाराज रामचन्द्र के भी रणभूमि… छक्के छुड़वा दिये और और अपनी … विद्या तथा वीरता का परिचय जैसा … दिया है उसकी पूर्ण कथा जानकी वि… में वर्णित है।

श्री महाराज रामचन्द्र जी की … जिस समय भूमंडल में प्रकाशमान हुई वह केवल सीयस्वयम्बर के धनुष भंग निर्भर थी। जिस समय श्रीमहाराज जी की मिनिस्टिरी कौंसिल (राज दरबार) इतना मना २ कर अपने ओर पास कर चुकी थी कि श्रीरामचन्द्र

राजपद के योग्य उत्तीर्ण होगये—वहां पर श्रीमहाराणी केकई ने (जो पण्डिता थीं) सर्वथा अस्वीकार किया कि-राजविद्या की परीक्षा के विना उत्तीर्ण किए (जब कि मैथिल, किष्किन्धा लंका आदिके दयम ब्राह्मण अपना अधिकार स्वतंत्रता पूर्वक फैलाते चले आरहे थे और अयोध्या केवल संकीर्ण अवस्था पर रहगई थी) रामचन्द्र को राजसिंहासनाधीश करना कदापि उचित नहीं है।

श्री महाराज चक्रवर्ती परशुराम को शारंग धनुषमात्र के प्रदान से चक्रवर्ती श्री रामचन्द्र जीने संमानित होते भी अस्वीकार किया और तपस्वी भेष धारण कर चौदह वर्ष का वनवास विषयक राज्य विद्या की परीक्षार्थ हठात् वोट पास हुआ।

स्वयम्वर।

उस समय किसी योग्य वीर, धीर, विद्वान, तपस्वी, आदि गुण युक्त पुरुष को अपना पति स्वीकार करने की प्रथा प्रचलित थी जिसका अधिकार स्त्रियों की योग्यतापर निर्भर होता था-जो अल्पायु वाले पति को भी दीर्घायु बनाने में समर्थ थी जैसे सावित्री अथवा किसी दृढ़ प्रतिज्ञा पर-जिस में वीरता की कठिन परीक्षा होती थी-पिता अपनी योग्य पुत्री को विजई वीर के अर्पण करता था यथा द्रौपदी सीता इत्यादि।

इस अन्तिम प्रथा के अवरोध से हमारे विश्व विजई पताका रूपी सूर्य को,मुसलमानों के आगमन रूपी केतु से ग्रहण लग गया और जिस ग्रहण के मोक्ष पर विचार करते करते श्री गोस्वामी तुलसी दास, कबीर, नानक, दादू, पलटू, जगजीवन आदि महात्मा तथा श्रीस्वामी दयानन्द जी सरस्वती प० गुरुदत्त M.A. विद्यार्थी भारतुन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, राजा राममोहन राय, सर रमेश चन्द्र दत्त आदि विकट विद्वान विचार २ देश में लय होगए किन्तु इस दशा पर भी निर्मूल नहीं हो सका है। प्रताप गर्ल स्कूल फरीद कोट के कार्याध्यक्ष बाबू रामरत्तामल वकील ने "हिन्दू जाति की सेवा" के न. २ के पैम्फलेट में "हिन्दू कौम जिन्दा रहेगी? नामक पुस्तक वितरण कराई है जिस से विदित होता कि "हिन्दू जाति का ६६ लक्ष समुदाय १० वर्ष में कम हुआ तो२२ कोटि ३३३३ वर्ष में व इस से भी कम समय में नाश को प्राप्त हो जायगा। हा कैसा भयानक दृश्य है!! जब तक हमारे (स्त्री जाति के) अधिकार पर ध्यान था, महाभारत में सर्वस्व नष्ट होने परभी ५६ कोटि यादवंश। (केवल एक जाति की) संख्या उपस्थित थी।

देश में विधवा धर्म पर विचार केवल लार्ड वैंटिंग की दया से करना पड़ा क्यों कि स्त्रियों के आत्म त्याग की परीक्षा बन्द हो गई (सती होना रोका गया। बस! स्त्रियों के सत्य धर्म मर्यादा पर वज्रपात होगया, यहां तक कि हाटों, गलियों में स्त्रियों की बाढ़ आने से भारत के जान के लाले पड़ गए)

स्त्री जाति सब प्रकार से जन संख्या विशेष होने परभी विद्या में हीन होने के कारण किसी उच्च सभा की पात्र, सदस्या या अधिकारणी होने की कोई योग्यता नहीं रखती। जिब्राल्टर के डाक विभाग में एक स्त्री १० वर्ष से अफसर है इस को ५५० पौंड अर्थात् ८२५०) रु० के हिसाब से मासिक वेतन मिलता है इस स्त्रीजन संख्या विशेष, कार्यसाधन में दक्ष, यहां लों कि योरोप की सी महाराणी विक्टोरियाजी का यश तो स्मरणीय रहेगा पर भारत में भी अनेक बेगम, महारानी ताल्लुकेदारिन तथा जमींदारिन स्वयम् राजकीय कार्यों के कर्तव्य पालन में सराहनीय है।

पर खेद! कि हम स्त्रियों का कोई वोट न म्युनिसिपालिटी के सदस्यों के चुनावपर लिया जाता है, न हमारा नाम डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की कमेटी ही में आता है। लेजिस्लेटिव आदि कौंसिलों का क्या!

आशा है कि सोशल कांफ्रेंस हमको सुधारेगी। इस अवसर पर धन्यवाद सरकार को है जिस ने हमारी शिक्षा पर कुछ ध्यान दे रूमाल आदि काढ़ने और व्यवहारादि की शिक्षा के स्कूल स्थापन कर दिये हैं यद्यपि उसकी टेक्स्टबुक कमेटी अभी तक स्त्रियों के हाथ नहीं हुई।

पुरुषों के अध्ययन में परिश्रम विशेष के कारण बहुधा स्त्रियां इस ओर ध्यान नहीं देतीं और अपनी मर्यादापर अपने पति के उच्च पदाधिकारी होने के कारण किसी की नहीं सुनतीं। प्रातः से सायंकाल तक उन को वस्त्रपर वस्त्र बदलने के ठाठ, जेवर की सफाई रखने से दम मारने की फुरसत नहीं मिलती कि पठन पाठन पर ध्यान दे सकें। पति जी के पद पर सब टीम टाम घमण्ड व इतराना है. पर अनेक पारिव्राजक यात्रियों का मत है कि जितना जेवर पूर्व काल में स्त्रियों के पास था अब उस का शतांश भी नहीं रहा!

हमारी कन्याओंकी शिक्षा धार्मिक रीति पर सारे कर्तव्यों पर थी। शिक्षा पितृ गृह पर निर्भर थी जिसके मूल उद्देश्य हों थे (१) रुग्ण की सेवा के योग्य रोचक रसायनिक क्रिया जानकर शुद्धता से अपनी जिम्मेदारी पर यथा पथ्य का विचार, भोजन पकाना (२) कर्मकाण्ड में अपने गोत्र के ऋषियों के सूत्रानुसार क्रिया तथा संस्कारों को जानना (संस्कारों की त्रुटि से ही गोत्र की उपासना या कृत्य व्यवहार करना दुर्लभ हो गया है)

षोड़स शृंगारके स्थान पर माया जंजाल ने समर्थता दर्शाना आरम्भ कर दिया है जिस का परिणाम हिन्दू जाति की अवनति होगा।

अशिक्षा के अंधकार मय निशा पर मिथ्या उपासनाओं के मेघाडम्बरों ने ऐसा आच्छादित कर दिया है कि सद्‌मार्ग (आत्मिक शक्ति) का जानना सत्यप्रकाश और मनोरंजक रूपी सूर्य के उदय के बिना अति दुर्गम होगया है। कविवर

परिषद शय्य, अवकर्म साधक, मिथ्या शुद्ध ... परिषद में दीन पामर मनुष्यत्व के द्वार ... से सत्यधारी जीवों की उत्पत्ति ... की इतिश्री ही प्रतीत होना संभव है। ... शिक्षा में हीन माताएं कठिन रोग ... करा, दूषित शिक्षा के कारण बालक ... असिद्ध संस्कारों के द्वारा तेज हीन नि- ... काया रोगी बनाने की पाप भागिनी ... ती है।

अतः स्त्री जाति मात्र को उन की अ- ... के कारण ऐसे गुप्त रोगों ने घेर ... है जिसे वे लज्जावश हो अपनी पीड़ा ... किसी के संमुख प्रगट करना भूल पाप ... संतानहीन बन मिथ्या व्यवहार ... हस्तगत हो भूत पिशाच की उपासिका ... जाती है।

शिल्प शिक्षाविहीना स्वगृह की स्व- ... ता दर्शाने में असमर्थ प्रतीत होती है। ... हार पर्व आदि कठिनता से मिलते हैं ... गृहस्थों में इनकी विशेष आवश्यकता ... इस कार्य के पूर्णार्थ शिल्प शिक्षा आव- ... यकीय है।

स्त्री जातिकी सुख सामिग्री साधनार्थ ... स वर्ष महिला परिषद ने अपना उज्वल ... प श्री प्रयागराज में धारण कर समारोह ... साथ दर्शाया था परन्तु यह न जाना ... या कि वर्ष भर में केवल बैठक ही मात्र ... हुआ करेगी या इसकी कोई कार्य कारिणी ... सभा भी नियत हुई है। बिना उपाय (आ- गेनिजेशन) के किसी कार्य का चलना असंभव है।

भारतीय शिक्षित देवियाँ! आपको मु- झसे इस लेख द्वारा मिलने का प्रथम अ- वसर है। ऐसे नवीन वर्षारंभ में नवीन "जीवन" धारण कर, आप लोग मुझे आशीर्वाद दें कि स्त्री जाति की सेवा करने की पात्र सेविका बन सके। जातीयता के परस्पर व्यवहार साधन की अति गंभीर शैली को चतुर्मास (वर्षा) में मांगलिक जाति श्री दुर्गेश्वरी की उपासना में तत्पर होते हैं इस महान सम्मिलन की महिमा ही महाभारत का कीर्तिस्तंभ है।

यदि एक त्योहार शुद्धाचरण द्वारा वे- दानुसार पुस्कल सामिग्री से अग्निहोत्रादि संयुक्त स्वगृह में वर्णाश्रम की मीमांसा करि परस्पर चतुर्वर्ण मर्यादा पालन में त- त्पर होजाय तो मुख्य कल्पवृक्ष की जड़ मिलने में क्या संदेह है।

भारतीय वीरांगनाओं! तुम्हारी सुधि को तब तक कोई न लेगा जब तक अपने पैरों से खड़ी होना न जानोगी। इस मुर्दा हिन्दू जाति ने क्या तुम्हारी पुकार सुनी। एक पश्चिमीय स्त्री ने भारतीय शिक्षा के पत्तों को सींचने में बड़ा परिश्रम किया पर जड़ में न रस पहुंचाने से व्यवहार विरुद्ध प्रतीत हुआ।

इसके अतिरिक्त अब इन निर्बल हिन्दू संतानों के उद्धार योग्य भी नहीं उठता अतः मेरी प्रार्थना है कि ...

शिथि वृद्धा थक गई है इसके परिश्रम पर
ध्यान दे मर्यादा को जाने न देना दान ऐसा
दो कि हिन्दू यूनिवर्सिटी का सर्व प्रकार
मान होजाये तब यह जीवन सुफल जानों।

स्वदेश सेविका

वि० देवी (कात्यायन वधू) ऋषिकुल

वर्तमान स्थिति ।

(१)

सामुदाइक व्यापार का अधःपतन ।

जिस समय हम भारत वासियों के सामुदाइक व्यापार की ओर ध्यानदेते हैं जो बिटिशि कंपनियों के सर्वथा अधिकार में होते हुए भी भारत वासियों के हाथ में है तो हम को यह जानकर बड़ी उत्कंठा होती है कि एक समय भारत वर्ष अपनी सामुदाइक शक्ति के लिए समस्त संसार में विख्यात था। पूर्व बंगाल के जलमय मार्ग की ओर भ्रमण करने से विदेशी जहाजों पर आश्रित होने के साथ ही अपनी रक्षा और तेज चाल के लिए स्वदेशी बोट की भी शरण लेनी पड़ती है।

यद्यपि चिटगांव ढाका आदि जिलों के मल्लाह बड़ी बहादुरी के साथ अपनी नौकाओं को कभी २ स्टीमर के समान तेज से तेज लेते हैं तब भी उन की पूंछ न होकर विदेशी लिए प्रति अपना प्रभाव जमाते ही ... मई भाई के कारण पूछे जाते हैं पर यह साक्षी चाल तक उन को जिंदा रख सकी है। आओ सब इसका यथार्थ हाल जानने लिए इ[illegible] का सहारा लें।

अंग्रेजी राज्य के पूर्व भारत वर्ष संसार सामुदायक व्यापार में सब से बढ़ा व[illegible] उसकी सुविशाल स्थिति पूर्वार्द्ध के [illegible] थी; इसके आलीशान जहाज कराची [illegible] गांव तक-४००० मील तक-विचरे [illegible] उस के बंदर व लंगड़ १००० की ता[illegible] था उनमें से कुछ अपने जातीय जीव[illegible] प्रसिद्ध थे। व्यापार द्वारा अगणित [illegible] करने के कारण जल विभाग में सबसे ब[illegible] शक्तिमान माने जाते थे। मडगास्कर, सं[illegible] जावा, सुमत्रा, बोर्नियो पीगू और क[illegible] आदि अन्य देश उसके मातहत हो[illegible] यहां का व्यापार उस समय चीन, मला[illegible] अरब, तथा फारस के सब प्रसिद्ध नगर[illegible] अफ्रीका के पूर्वीय किनारों की तरफ ज[illegible] दूर २ देशों से देन लेन था उसका व्या[illegible] शिया खंड मेंही न होकर सारे संसार [illegible] यहां तक कि योरोपीय सभ्यता के प्र[illegible] न्द्र रोम राज्य के साथ भी था। देश[illegible] का संपूर्ण सामुद्रिक मार्ग उसके ब[illegible] जहाजों में मल्लाह सब देशी नियत[illegible]

किन्तु श्वेतांगो के आगमन [illegible] इस देश की सामुदायक शक्ति [illegible] साथ घटने लगी और लगातार [illegible] अंग्रेजों के साथ हिलका टिसर[illegible] होने के कारण हम व्यापार रोज[illegible]

हमारी व्यापार शक्ति, जो किसी समय हमारे गौरव का कारण थी-मिट्टी में मिलगई और आज हम उन बड़े जहाजों के बनाने के बदले छिछली नाव बनाने में भी असमर्थ हो गए। बड़े२जहाजी बंदर दैव विडंबना से आज शिकारी गोड़े बन गए। हमारी सुगठित स्वदेशी विदेशी व्यापारिक आंधी के प्रवाह से ऐसी तहस नहस हुई कि कोई भी निशान बाकी न रहा और भारत वर्ष का यह पूर्व दर्शन, आधिपत्य अन्य देशों पर शासन और व्यापार शक्ति स्वप्नवत् प्रतीत होने लगी।

(१) हमारे पूर्व सामुद्रिक यशका प्रमाण शास्त्रों में भी पाया जाता है। समुद्र यात्रा का पूरा २ विवरण ऋग्वेद में है इसकी कथा महा भारत में भी वर्णित है। बंगाल का जलमय प्रान्त प्राचीन समय से ही जहाज बनाने की शिल्प कला के कारण विख्यात है। महात्मा कालिदास के रघुवंश में भी लिखा है कि एक समय राजा रघु के यात्रा में बंगाल का राजा नौसाधन-जिस के हाथ में एक बहुत बड़ी जहाजी ताकत थी-आड़े आया और रघु ने उसे गंगा के बीचधारा में परास्त किया (देखो ४-३१ रघुवंश)।

(२) भारत वर्ष के कच्छी और गुजराती मल्लाह उस समय भी सर्वत्र भ्रमण करते थे। २१०० वर्ष पूर्व अरब और सीलोन के बंदर गुजरातियों के ही अधिकार में थे। १७०० वर्ष पूर्व हिन्दुओं के बड़े २ जहाज पूर्वीय अफ्रीका, अरब, और फारस के बंदरों में पाए जाते थे सोकोत्रा द्वीप के उत्तर की ओर और हिन्दुओं ही की बस्ती थी।

१५०० वर्ष पूर्व "फाहियां" नामक एक चीन का यात्री यहां आकर १५ वर्ष घूमा फिरा। यह जहाज द्वारा गंगा से लंका, लंका से जावा, तथा जावा से चीन गया था, जिन में भारत वासी मल्लाह लगे थे। दक्षिण भारत के पांडय और चेरा राजधानियों और रोम राज्य से पारस्परिक व्यापार होता था।

महावंश नामक सीलोन का बौद्धों का लिखा हुआ इतिहास कहता है कि विजय सेन नामक एक बंगाली वीरने अपने योद्धाओं सहित लंका में जा कर विजय पताका जमाई थी।

उस समय यहां के बंदर जो भारत वर्ष की धवल कीर्ति को उज्वल बना रहे थे। उन में से कुछ के नाम निम्न लिखित हैं। लखपत, दमण, बरौच, वल्लभी, दयपुर, कोचीन, मासुली पटम, सप्तग्राम, और तमालिप्त १४०० वर्ष पूर्व एशिया के उत्तर खण्ड में यूफेटस नदी के हीरा बंदर पर भारत वर्ष और चीन के जहाज समान रूप से टिका करते थे उसी समय इंडस और कच्छ के जाटों ने बैरान की खाड़ी को आबाद किया था।

स० १२३८ वि० में "हयून शंग" नामक यात्री ने स्वयं देखा था कि फारस के मुख्य २ नगरों में हिन्दू व्यापारियों की भांति रह कर अपने धर्म निष्ठा को स्वतंत्रता पूर्वक सम्पादन करते थे। ग्यारहवीं शताब्दि में सोमनाथ पूर्वीय अफ्रिका और चीन के लिये प्रधान केन्द्र (बंदर) बन गया।

उस समय गुजरात के राजपूत केवट कितने बड़े जहाज बना सके थे इसका प्रमाण मि० फेयर ब्रोडरिक साहब के मुख शब्दों द्वारा मिलता है स० ६४८ में जब यह महाशय भ्रमण के निमित्त भारतीय महा सागर होकर निकले तब उन्हें ७०० मनुष्य बैठने के योग्य एक हिन्दोस्तानी जहाज पर चढ़कर जाना पड़ा था। इस प्रकार के जहाज प्रायः काठियावाड़ से चीन तक मिलते थे।

इसके बाद भी जब भारत वर्ष का शासन यवनों के हाथ में आया हमारी सामुदायक शक्ति किसी प्रकार नहीं घटी उस समय भी जाट भारतीय व्यापारी फारस के किनारे आबाद थे।

स० ४७० में वास्कोडिगामा ऐसे मल्लाहों से मिला था जो नक्षत्र के जरिए से दिशायें परखते थे उन के पास कंपास और दूसरे आवश्यक औजार उपस्थित थे।

स० ४५८ में (Albuquerquo) मि० अल्बकर्क महाशय ने हिन्दू भाष जावा के लोगों में प्रज्वलित देखे थे। समग्र द्वीप उस समय परमेश्वर नामक एक हिन्दू राजा द्वारा शासित होता था।

(क्रमशः)

" जीवन "

(ले० श्रीयुत बेनीमाधव शर्म्मा)

" जीवन " है इस सब का जीवन,
बिन जीवन नहिं जीवन है।
जीवन को अपनाओ मित्रों!
यह जीवन का जीवन है॥
ज्यों बिन जीवन सरित सरोवर,
जीवन उसमें वास करें।
त्यों बिन विद्या के जीवन से,
ज्ञानादिक सब दूर रहें॥
यह " जीवन " भी उस विद्या को,
तुम सब में फैलायेगा।
बनके सच्चाहितू तुम्हारा,
जीवन सफल बनायेगा॥
" रहे हिन्द का जीवन स्थिर "
मूल मंत्र यह " जीवन का "
जीवन का रक्षक जो जीवन,
है कृतज्ञ-जीवन उनका॥

योग।

(लेखक-श्रीयुक्त रावत भूपसिंह जी चंदेल

जिस प्रकार दृष्टान्त में अपार प्रशि के अन्तर्गत किञ्चित कारणों के वशीभूत होकर जलकण प बुदबुदे, तरंग या फेन, सागर ही में समु से तथा आपस में एक दूसरे से भिन्न मासते हैं पुनः उक्त कारणों अर्थात् वायु के बंधन से मुक्त होते ही फिर अपने २ नाम और रूपका परित्याग करके उदधि से अ भिन्न हो तथा उस निधि से अपना योग

---

(१) जलके मध्य में वायु आदि के प्र भिन्न हो जाने से इत्यादि कारण होसके हैं। सम्पादक.

रके यह आप ही अपार अम्बुधि होजाते नाम रूप की द्वैधता दूर होजातीहै और नको अद्वैत पद प्राप्त हो जाता है अर्थात स जल राशि में युक्त होकर या उस से की भाव को प्राप्त होकर पूर्ण रूपसे वही होजाते हैं परन्तु जो जल कण, तरंग, फेन तथा बुदबुदे उक्त कारणों या वायु के बन्धन से मुक्त नहीं होते उनका समुद्र के साथ योग नहीं होता अर्थात् एकी भाव को प्राप्त न होकर अपने२ नाम को परित्याग नहीं कर सके हैं। उसी प्रकार दृष्टांत अपार ब्रह्म रूप रत्नाकर में अनन्त जीव जल कण, तरंग, फेन तथा बुदबुदे समान किंचित कारण रूप प्रकृति या वृत्ति के वशीभूत होकर ब्रह्म से तथा आपस में एक दूसरे से भिन्न२ भासमान होवे हैं। पुनः इस कारण प्रकृति या वृत्ति के बन्धन से मुक्त होते ही अपने२नाम रूप का परित्याग करके सच्चिदानन्द ब्रह्म ही होजाते हैं; परन्तु जो जीव प्रकृति की परवशता से मुक्त नहीं हुए वे स्वपरपर्यंत अपने २ नाम और परित्याग नहीं कर सके। अर्थात् बंधन से मुक्त नहीं होसके हैं। जिस क्रिया के करने से जीव का सच्चिदानन्द ब्रह्म के साथ योग (जुड़ना) या एकीभाव होकर तन्मयता प्राप्त होती तथा वृत्तियों का निरोध होता है उस क्रिया को योग या योगाभ्यास कहते हैं और उस के प्रतिपादक शास्त्र को योगशास्त्र कहते हैं। अधिकारी और मोक्ष का प्रापक शास्त्र साथ का संबन्ध है और आनन्द दायक योग रहस्य उसका विषय है साधक उसका साधन सम्पन्न अधिकारी है और उसका परम प्रयोजन मोक्षहै। अथवा जिस प्रकार गणित शास्त्र में एकही जाति की दो या अधिक व्यक्तियों (संख्याओं के संयुक्त हो जाने अर्थात मिल जाने या एकी भाव हो जाने से एक व्यक्ति (संख्या) पैदा हो जाती है उस को योग फल कहते हैं। और उस क्रिया का जिसके द्वारा सम्मेलन होता है योग कहते हैं। इसी प्रकार जीव और ब्रह्म एकही जाति दो या अधिक (जब जीव संख्या एक से अधिक ली जायेगी। (*) व्यक्तियों का योग, एकता, एकी भाव, या मिल जाना जो योगाभ्यास मार्ग से होता है और दोनों के सम्मेलन से जो योगफल रूप एक सच्चिदानन्द रूप सिद्ध होता है उस को ब्रह्म कहते हैं। उस क्रिया को जिस के द्वारा एकीभाव या सम्मेलन होता है योग या योगाभ्यास कहते हैं और उसके प्रतिपादक शास्त्र को योग शास्त्र कहते हैं।

योग की अवश्य कर्तव्यता।

ऐसा कौनसा आस्तिक विद्वान् मनुष्य है जो यह नहीं चाहता कि (१) मेरा कभी नाश न हो (२) सदा चेतन अर्थात ज्ञान स्वरूप बना रहूं (३) सदा आनन्द स्वरूप

(*) क्योंकि यथार्थ में ब्रह्म एकही है।

सम्पादक

बना रहूं, यह तीनों बातें (१) सत (२) चित (३) आनन्द अथवा अस्ति भांति, प्रिय अलगर दर्शाती हैं। इन तीनों का एक रूप जो ब्रह्म है उस में जुड़ जाने से अर्थात् उस के साथ योग करने, सम्मिलित होने या युक्त होने या एकी भाव हो से प्राप्त हो सकी है। इस कारण से भी योग अवश्य करना योग्य है।

(प्रश्न०-) योग का यथार्थ रूप क्या है?

(उत्तर०-) योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। अर्थात् चित्त की वृत्तियों के निरोध करने को योग कहते हैं।

योग शास्त्र में चित्त वृत्तियों के अत्यन्त निरोध की रीति सिखलाई जाती है।

तात्पर्य यह है कि जब वृत्ति रूप वायु आदि कारणों करके ब्रह्म समुद्र में तरंग, फेन, बुदबुदे आदि की भांति अलगर नाम रूप (संसार) भासता है और जब योगाभ्यास से वृत्ति रूप कारण का विरोध या नाश होता है तो स्वयं ब्रह्म ही होकर प्रकाशमान होता है।

योग की अवश्य कर्तव्यता अनेक, योग ग्रन्थों तथा शिष शेष, पातंजलि, वेदव्यास वशिष्ट आदि बड़ोंर की कर्तव्यता से स्वयं सिद्ध है तथा विचार दृष्टि से पक्षपातरहित होकर देखने से भी ज्ञात होता है कि प्रथम क्रिया के करने ही से पश्चात् किसी विशेष कार्य की सिद्ध दायक क्रिया का ज्ञान पैदा हुआ है। एक छोटा मोटा दृष्टान्त इस के समझने समझाने के लिए यह है और उस को अधिक तर सर्व साधारण जानता और मानता है।

तथा सौ वर्ष हुए कि स्टिफिन्सन नामक एक अंग्रेज अपने पीने के लिए (Tea) एक बर्तन को आग पर चढ़ा पानी में पका रहा था। उस बर्तन का ढक्कन से ढका हुआ था। थोड़ी देर ढक्कन बर्तन के मुख पर उछलकूद मचाने लगा अर्थात् अपने स्थान से किंचित् उठ २ कर फिर उक्त बर्तन के मुख पर बार २ गिर पड़ता था। इस क्रिया को देखकर उसे यह ज्ञान पैदा हुआ कि यह भाप ढक्कन को ऊपर उठा देती है अब उस के उठाने वाली भाप ढक्कन के ऊपर उठ आनेपर चारों ओर अपने निकलने का मार्ग पाकर निकल जाती है ढक्कन के सहारे होकर बर्तन के मुख पर आ गिरता है और भाप के निकलने के रास्ते को अर्थात् बर्तन के मुख को बंद कर देता है। तब भाप फिर उस को उसी प्रकार ऊपर उठा देती है और उसी प्रकार वह फिर बर्तन के मुख पर आ गिरता है। इस क्रिया को बारंबार उस ने देखकर जाना अर्थात् उस को इस बात का ज्ञान पैदा हुआ कि यह भाप भी बड़ी बल (ताकत) रखती है और इतने मात्र जल की भाप इतने प्रमाण भार के ढक्कन को उठा सकी है। इसी ज्ञान के होने पर उसने रेलगाड़ी निकाली क्रिया करके २ उसके पश्चात और

प्राप्त होते २ उस में दिनों दिन उन्नति होती चली आई। यहां तक कि जो रेल गाड़ी प्रथम ही प्रथम बनाई गई थी उसमें और आजकल की रेलगाड़ी में ज़मीन व समान का अंतर हो गया है। तात्पर्य यह है कि प्रथम क्रिया हुई तत्पश्चात् ज्ञान हुआ अर्थात् ज्ञान क्रिया जन्य है और योग स्वयं एक क्रिया है और यह विना क्रिया के सिद्ध नहीं होता इस कारण योग प्रथम और ज्ञान तत्पश्चात् पैदा हुआ है। ऐसा सिद्ध होता है अतएव प्रथम योग की अवश्य कर्तव्यता सिद्ध होती है। अब अधिकारी पाठकों की यह इच्छा होगी कि योग क्रिया की क्या विधि है। इसका जानना आवश्यक है इस लिए उस की विधि यथावकाश वर्णन करने की चेष्टा करना उचित है। यहां तक संक्षेप में योग की अवश्य कर्तव्यता सिद्ध की गई है।

जापान और भारत। *

टे से जापान देश ने जिस समय चीन को जीता, तब से वहां के इतिहास और लोकनियंत्रित अर्वाचीन सुधार की ओर समस्त भूमंडल का ध्यान लगा है। इस जापान युद्ध से तो जापान ने विशेष रूपसे पृथ्वी भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। जापान के विषय में कुछ न कुछ संवाद भारतवासी तथा अन्य प्रान्त के मनुष्य पढ़ाही करते हैं। जिस असामान्य कारण से सारे संसार का ध्यान जापान की ओर लगा है उस के अतिरिक्त कितनेही अन्य कारणों से हिन्दोस्थान का ध्यान जापान चीन और कोरिया आदि देशों की स्थिति की ओर है। कहीं भी दो मनुष्य लड़ने लगें तो तमाशगीरों, दोनों के लड़ाई से अपना लाभ कर लेने वाले लुटेरों और लड़ने वाले दलों में से एक की ओर सहानुभूति रखने वालों का ध्यान उस लड़ाई की तरफ लगता है उनमें से प्रथम केवल मजा देखता है। दूसरा संधि अनुमान कर अपना स्वार्थ कार्य साधता है, और तीसरा अपने ओर होने वाले की हार जीत देखकर दुःख सुख मनाता है। उपरोक्त लिखित युद्ध में हम तीसरे प्रकार के प्रेक्षक हैं। चीन जापान के आपस के लड़ने पर हम को बुरा लगा किन्तु इस जापान युद्ध में हम केवल तमाशगीर तथा उदास प्रेक्षक न रह सकने के कारण जापान के विजय प्राप्त करने से हमें अत्यन्त आनन्द हुआ।

इसका कारण देखने के लिए हमें दूर जाने की आवश्यकता नहीं कुछ भी हो। जापान एशिया खण्ड का एक राष्ट्र है। अब युरोपीय राष्ट्रों में एक दूसरे प्रति अभिमान है, किन्तु एशिया खण्डान्तर्गत एकके दूसरे राष्ट्र प्रति इतना अत्यन्त और वर्णनातीत अभिमान

---

* मराठी भाषा के जापान देशाचा इतिहास का हिन्दी अनुवाद।

है। तवमी पक खंड के समान व्यसनी क होने से चीन जापान आदि देशों पर हम कुछ न कुछ सहानुभूति उत्पन्न होना हजिक है। " पशिया खंड के सब राष्ट्र कुछ समय पश्चात् योरोपीय राष्ट्रों का दास- व ग्रहण करेंगे " यह योरोपियन तर्ककारों ने सिद्धान्त ठहराया था। इनका यह तर्क काति- पय आधार पर था। पशिया के उत्तर खण्ड को रूस से अंकित होने को कई वर्ष होगये; अरब वाले स्टेन आदि मुहम्मदी राष्ट्र योरोपीय टर्की के आधीन हैं, किन्तु इस्तेम्बुल का सुलतान अर्वाचीन सुधार से वंचित रहने के कारण बलाढ्य योरोपीय राष्ट्रों में उसकी गण- ना नहीं होसकी है। उसके आधीन देश पर रेल तथा व्यापार के मिस योरोपीय राष्ट्र रोग ग्रस्त टर्की की शय देरहे हैं। ईरान और श्यामको लोक सत्तात्मक राज्यपद्धति स्थापन करने का व्रत इस समय ही उत्पन्न हुआ है, इतना ही नहीं; पुराणप्रिय चीन देश मे ही योरोप के राज्यपद्धति अंगीकार करने का निश्चय कारक व्रत प्रसिद्ध हुआ है। ईरान को रूस ने शय देदिया ही है, हिन्दोस्थान को योरोपियन आधीनताई स्वीकार किए युग बीत चले; अफगानिस्तान जो इंग्लैंड का मेवा खाता है वह आगे पीछे उसे ओकला ही पड़े गा यह कौन नहीं जानता; तिब्बत आज तक शैलशिखर पर योग निद्रा में सो रहाया किन्तु उसके नाक में भी कुमकुमा फेंका गया है, ब्रह्मदेश डफ्रिन साहब ने पहले सेही सर लिया है; नैपाल भूटान आदि स्वतंत्र कहलाते वाले राष्ट्रों के नेत्र दिल्ली दरबारने खेंपा दि और उनकी रही सही चमक राजपुत्र दर्श से लुप्तप्राय होगई; श्याम और कोचीनचा यना के पीछे फ्रांस ने अपनी२ दृष्टि लगा रं है। इंग्लैंड और फ्रांस राष्ट्रों ने आपस में क करार मिटाकर श्याम के लोटा तोड़ने का हं पहले सेही ठहरा रक्खा है।

धनाढ्य चीन को उसकी कुम्भकर्णी निद्रा में मग्न पड़े रहने के कारण योरोपीय राष्ट्र रूपी गीदड़ जीवित रहते हुएही उसके हाथ पैर खुथरने लगे हैं कि प्राणाक्रमण होने तक उस को दम नहीं। इसी तरह इत्य़ादि शिया खण्ड में देखकर पाश्चात्य लेखकों ने अपना तर्क ठहराया था (है) तथापि पशिया खण्ड भर में जापान ही एक राष्ट्र है कि जिस ने समस्त योरोपियन राष्ट्रों से घिरा रहने पर भी उनकी वक्रदृष्टि से बहिष्कृत हो गुरुविद्या को अध्ययन कर गुरुदक्षिणा वापस देने का निश्चय कर लियाहै और इसी कारण पशिया पर विजयस्तम्भ जमा लेने परभी उपरोक्त विचार श्रेणी में कुछ विभेद पड़ा हुआ है। मंचूरिया में रूस की रियासत को वर्फ खिलाने के बहाने योरोपीय बुभुक्षित लोगों के मनोरथ के वेग को जापान में धपकार कर रोक रखने का अनन्य मार्ग मिलता है; किन्तु आगामी इतिहास में यह कैसे शब्दों से अंकित होगा- इसका उत्तर देनेको कौन समर्थ है। योरोप की भरतभूमि पशिया है; योरोपियन तर्ककारों के सिद्धान्तों को सच्चा या झूंठा बनाना अब केवल जापान के हाथ में है। इसी कारण

मस्त एशिया प्रदेश के राष्ट्रों का उसकी ओर आशा पूर्ण दृष्टि लगाए रहना स्वाभाविक था साहजिक है। जापान पुरातन जर्जरित संसार का एक बालक है। फिर भला यह उनके जीवन का एक मात्र अवलम्ब अपनी वृद्ध माता को आधार देता है या शोक प्रशित करता है। ऐसी चिन्ता रूस जापान के युद्ध के आरम्भ में एशिया के लोगों को उत्पन्न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, वरन अधिक प्रेम से भय उत्पन्न होना स्वाभाविक है ऐसा बोध होता है।

जापान चीन आदि देशों प्रति हिन्दोस्थान को सहानुभूति करने का दूसरा कारण यह है कि हिन्दुस्थान और जापान का गुरुशिष्य का नाता है। जिस प्रकार ग्रीस और रोम राज-विद्या और भौतिक शास्त्र में समस्त योरोप के गुरुस्थान में है, उसी तरह सारी पृथिवी को अध्यात्म विद्या प्रदान करने वाले सच्चे गुरुका काम समय हिन्दोस्थान ने किया है। वैदिक धर्म से बौद्ध मतकी उत्पत्ति हुई। भारतवर्ष में एक समय बौद्धधर्म राजमत हो कर मांद करता था, अन्त में वैदिक धर्म के असहिष्णुता के कारण उसको स्वदेश त्याग करना पड़ा। इस स्वदेश भ्रष्ट मत का परदेश में विशेष रूपसे आदर हुआ। जिस तरह ईसाई धर्म आज स्थान२ पर गुंजायां जाता है उसी तरह ब्राह्मण क्षत्री आदि बौद्ध मतानु-यायों ने एक सम्पूर्ण पृथिवी को पददलित कर डालाथा। ईरान और पालिस्टैन आदि देशों में किस कष्ट से अपना मत प्रचलित किया गया? और कैसे असीम उत्साह से दिग्विजय कर अपना झण्डा जा खड़ा किया? यह इतिहास स्पष्ट बतलाता है। पश्चिम की ओर भेजे हुए बौद्ध विचार जितने सफली भूत हुए। राजकीय दृष्टि से अंकित करने के उद्देश्य से लार्ड कर्जन महाशय ने राजकीय मण्डली (मिशन) भेजी थी, वैसे ही भारत वर्ष के उन्नतावस्था में बौद्ध मतके राजा (चन्द्रगुप्त) ने तिब्बत में धर्म मण्डल भेजा था और फिर अत्यन्त कष्ट और व्येष्ठा के उपरांत बौद्ध पंडित चीन कोरिया और जापान आदि राष्ट्रों को युद्ध रचित पीत मेखला पह-नाने में कृतकार्य हुए। सारांश जापान ने अपना स्थित धर्म हिन्दोस्थान से प्राप्त किया है। हिन्दू जितना गया को पवित्र मानते हैं उतनाही जापानी भी इस क्षेत्र को परम पवित्र मानते हैं।

जापान का मत हिन्दू धर्म के निकट-वर्ती होने के कारण, यहां का सामाजिक चाल ढंग अधिकांश यहां से मिलता जुलता है। समाज व्यवस्था, स्त्री पुरुष, माता पिता, सास बहू का पारस्परिक सम्बन्ध, खाना पीना पहराव आदि बातें हिन्दुओं और जापानियों की साम्य हैं। इसी कारण वश हिन्दोस्थान को जापान से अधिक स-हानुभूति है।

जापान का इतिहास हिन्दुओं को विशेष बोधप्रद तथा आनन्द दायक है। क्योंकि जिस संकट में पड़े रहने के कारण हमारा देश परतंत्र [illegible] संकटों से संग्रसित

होकर जापान राष्ट्र ने युक्ति प्रयुक्ति द्वारा
पृथ्वी के श्रेष्ठातुश्रेष्ठ राष्ट्र में अपनी गणना
कराली है। एकही स्थिति का जापान और
भारत पर भिन्न २ परिणाम क्यों हुआ।
किस आवश्यक कर्तव्य पर हम पतित हुए।
हमारे ही समान रोगग्रस्त होने पर भी जा-
पान कैसे उत्तीर्ण हो सका। यह मनन कर
ने योग्य है। धैर्य और ऐक्य द्वारा समाज
रचना, भौतिक शास्त्र, वाह्य प्रदेश में कर्तव्य
गारी के बलसे अपने राष्ट्र को संबद्ध करने
और अभ्यांतरिक टंटे बखेड़े तोड़ने की
प्रतिज्ञा, के बल से पाश्चात्य राष्ट्रों प्रति द्वेष
भाव को हृदयस्थल से हटाकर उनके गुणों
को अंकित कर लेना है।

भारतीय स्थिति के सुधार में बहुत सी
अड़चने आड़े आगई हैं। देश का उद्योग,
व्यापार धन्धा कैसे सुधारा जाय; पाश्चात्य
शिक्षा पद्धति अपनी भाषा अथवा परभाषा
में लाई जाय। समाज रचना तथा अन्य
सम्बन्धों में कैसे विभेद रक्खा जाय। इन
सब प्रश्नों का ज्ञान जापान का इतिहास
पढ़ने से शीघ्र होता है। ग्रीस रोम आदि
मृत राष्ट्रों का इतिहास कितनाही बोधप्रद
क्यों नहो। तो भी काल और स्थिति भि-
न्नत्व के कारण उनके उदाहरण मन पर
पूर्ण रूपसे घटित और प्रत्यक्ष व्यवहार में
उपयोगी नहीं होसके।

"........की समुद्रयत सेना को थोड़े
से स्पार्टन सिपाहियों ने रोक रक्खा था
"(^)" यह पढ़कर चित्त में कौतुक तथा

आश्चर्य होता है। किन्तु उस प्रकार
सौर्य का वर्तमान समय में उपयोग
ऐसा कह कर हम उस उदाहरण को
देते हैं। परन्तु अज्ञानावस्था में पड़े
अचेतन समाज को जापान ने जिस उ
से कर्तव्यवान बनाया और अपनी
भूमि के लिए जापानी महा पुरुषों ने
शरीर रक्त को स्वदेश भक्ति पर न्योछ
कर अपने राष्ट्र को उन्नत दशा में प
चाया। उसे निरीक्षण कर प्रयत्न
मनुष्य और राष्ट्र अज्ञानांधकार से
सिर ऊपर निकालने के लिए पूर्ण
पा सके हैं। जापान के और हमारे
कीय स्थिति में बहुत अंतर है। इस
संधि विग्रह आदि उच्च राजकीय
से हमारा कुछ मतलब नहीं। और
भी कोई पूछ नहीं सका। तब भी जापा
ने जो औद्योगिक, सामाजिक तथा शि
संबंधी प्रश्नों का निर्णय अब किया
उस मार्ग पर अभ्यास करने से "
इन से कैसे रक्षा हो सकी है" यह
प्रकार समझ में आ जाता है। "औ
शिल्प कला संबंधी शिक्षा इन को
में देना चाहिये अथवा स्वभाषा में
प्रश्न आज हमारे संमुख उपस्थि
किन्तु यही विचार जापान में उपस्थि
कर इसका निर्णय कभी का हो
विदेशी भाषा द्वारा कला और वि
कर लेने पर जापानियों ने प्रत्येक
उत्तम कला व विद्या प्राप्त कर,

निबंध लिख परकीय विद्या और कला प्राप्त करने का मार्ग निकाल कर अपना परम लाभ किया है। अर्वाचीन कला तथा शास्त्रों पर जापानी भाषा में ग्रंथ लिखे जाने से उनका प्रचार साधारण समाज में पूर्णतः हो रहा है। किन्तु हमारे विश्व विद्यालय में मराठी भाषा के प्रचलित होने में शक होते हुए भी पाश्चात्य भाषा और कला का स्वभाषा में अध्ययन करने योग्य राष्ट्र भर में एक भी पाठशाला नहीं है।" यंत्र शास्त्र, रसायन शास्त्र, विद्युत शास्त्र, समाज रचना और औद्योगिक विषयों में हमें पाश्चात्यों का शिष्य बनना उचित है" यह भाव सामान्यतः हमारे तरफ मान्य हुआ है। किन्तु इस कार्य के भूमिका से दो पक्षों का मतभेद है। एक पक्ष जो कुछ पढ़ना हो सो इंग्लैंड से सीखने को आदेश देता है। किंतु दूसरे का मत एक ही राष्ट्र पर निर्भर न रहकर सब राष्ट्रों का शिष्यत्व ग्रहण करने के लिए है। लेकिन इसका भी प्रकार जापान के अर्वाचीन इतिहास में दिया गया है।

"पृथ्वी के सब प्रदेशों से कला और विद्या लाने के लिए इंग्लिश, फ्रेंच, जर्मन, इटेलियन, रशियन, डच, संस्कृत आदि सब सभ्य भाषाओं का अभ्यास करना चाहिए। और कलाकौशल के विषय में किसी एक देश पर निर्भर न रह सब देशों में विद्यार्थी भेजने चाहिए।" यह जापान के तत्कालीन सरकार तथा राज्यधुरंधरों ने स्थिर कर सारे संसार के विद्यालय, यंत्रालय तथा कारखानों में विद्यार्थी मंडल की रेल पेल कर दी है।

यह विद्यार्थी जिन २ देशों में जाते थे वहां की भाषा अवश्य ही पढ़ते थे और जो विषय पढ़ना होता था उस में प्रथम से ही अभ्यास करते थे। इस तरह विदेश से लौटे हुए विद्यार्थियों ने कला कौशल का संपूर्ण प्राप्त ज्ञान मातृ भाषा में भर दिया। सारांश यह कि जापान में जो कुछ सुधार का जोश इस समय दिखता है वह सब उन्हों ने पाश्चात्यों का शिष्यत्व ग्रहण करके ही पाया है। किसी कारण वश हो हम भी एक पाश्चात्य राष्ट्र के शिष्य हुए हैं। किन्तु जो कार्य जापान ने केवल आधे शतक के शिष्यत्व में साधन किया, इसका शतांश भी हम डेढ़ शताब्दि में नहीं साधन कर सके हैं। इसका क्या कारण है। हमारे सामाजिक, औद्योगिक, धार्मिक और राजकीय परिस्थिति के भीतर ये कारण हैं। इन सब प्रश्नों का निर्णय जापान के इतिहास वाचने से बखूबी होने वाला है। ऐसे प्रस्तुत विषय का विवेचन प्रांत या ग्राम के इतिहास में होना शक्य नहीं है।

(क्रमशः)

काव्य कलाप।

मनहरण छन्द।

[illegible]

[illegible]

जय जय उर पर चैन जेब में
घड़ी छड़ी कर ॥
जय मुख इंजन वंध चुरुट के
धुवां प्रकाशन।
जय जय मोढ़ा चेयर वेंच
आसन सुख आसन ॥
जय जय मिस्टर जय इस्कुयर
जय सर वाबू जयति जय।
जय नाम वरन द्वै एक धरन,
पूर्ण नाम छय करन जय॥१॥
जय असभ्य पितु मातु जनम
वर सभ्य वनन जय।
जय पुरान पथ वेद त्यागि
मानन लवेद जय ॥
जय पर भाषा दास मातृ
भाषा संहारन।
जय झाड़ू जय वढ़नि वंस को
रीति वहारन ॥
जय जय परदा के शत्रु या
मित्र खुले घर राह के।
जय जय पूरन भण्डार धर
भगनिन प्रति सब चाहके ॥२॥
जय जय यानी वीर वक्ता
गोली धारी।
जय रचि किला समीर वीन
भारत उद्धारी ॥
जय जय पर उपदेश माहिं
अति कुशल सब में।
जय जय गुण वस्तु और
देह वस्तु और पुरान ॥

जय जयति वहाले पकता,
प्रसरन अन पकवा के॥
जय जय दुख में दुख सुखहु दुख,
देन उलटि गुन बनाके॥३॥
जय जय विस्कुट मांस मत
मदिरादि उपासी॥
जय जय रोटी दाल भात
शाकादि उदासी।
जय जय जमुना गंगनीर
कीरा लखैया।
जय जय सोडावाटर कल जल
बरफ पिवैया।
जय गांजा भांग अफीम के,
जड़ भारत के उपस्थान।
जय ह्विस्की, वाइन, के
घर घर में रुचि प्रस्सरन ॥४॥
जय जय उबटन शत्रु मित्र
वर साबुन के।
जय चन्दन इतरादि
लवेंडर चाकर वें।
जय जय सरसों अजासि तेल सों
घिन करवैया।
जय जय नासी सरबं कैरि
सन के धरवैया।
जय लोटा थारि परात के
कापरि कापोछे धरन ॥५॥
जयति स्वच्छता मिस साफ घर
रखिवे कारन।
मेरा ठिमाकि दमाक कोट पे
पाकट धारन

जय जय घम्मच छुरी कंदा से
भोजन चाग्न ।
र भैलो तनि होय ताहि डर
अलगहि रागन ॥
जय सुसभ्य पूरन जयति खड़े सुतम
खड़ जल पिवन ।
जय जयति पोंटह करि *** पोंछ
लेन नाहीं धुवन ॥ ६ ॥
जय पिचार अ चार मेम प्रत
धर्म्म संहारन ।
जय स्वछन्दता अरु स्वतन्त्रता
तियन पसारन ॥
टम टम फिटिन मिटाइ संग
तिय मारत सेर्यां ।
बौल थियेटर संग रखन
अर्द्धांगी देवी ॥
जय जयति आन तिय कर धरन
निज तियकर परकर करन ।
जय जयति चूमि चुमवाइ मुख
बन्धु भगिनि उर सुख भरन ॥ ७ ॥
जय जय मेल मिलाप एकता
बादनकारन ।
एक पिता के पूत सकल बनि
जात संहारन ॥
बरतिय रुचि अनुसार व्याह
. . करनो अरु छोड़न ।
पराचीन की रीति नीति नाता
सब तोड़न ॥
जय जयति आपने मुंह मिट्ठू
सबोधक सुक्रिया वगन ।
जय जय सुशील जय सभ्यवर
उन्नति मिस भारत हनन ॥ ८ ॥

दोहा ।

यह सभ्याष्टक जो पढ़ै,
सुनै गुनै मन लाय ।
बिन प्रयासही सभ्यता,
तुम तामें लगि जाय ॥

" साहित्य "

हिन्दू क्योंकर सुधर सकते हैं ।

(लेखक श्रीयुक्त–सूर्य्यप्रसादजी मिश्र)

संसार की प्रत्येक जाति सुधार करने में मग्न है । हिन्दू जाति भी यत्नवान है। परन्तु इतनी बड़ी जाति का सुधार करने वाले बहुत थोड़े मनुष्य दृष्टि पड़ते हैं । इस लिये सुधार बहुत धीरे २ हो रहा है ।

सुधार करना न करना शिक्षित समुदाय के आधीन होता है । शिक्षित समुदाय ही सुधार बिगाड़ का जिम्मेदार माना जाता है । पूर्व काल में भी जिस समुदाय में शिक्षा का अधिक प्रचार था उसी को सुधार बिगाड़ का उत्तर दाता माना जाता था । इन दिनों भारत वर्ष की अवनति का कारण प्रायः ब्राह्मणों को बताया जाता है और कहा जाता है कि ब्राह्मणों ने असत्य विचार फैलाकर और गैर कौमों को विद्या से वंचित करके बहुत बड़ी हानि पहुंचाई ।

पहिले जमाने में शिक्षित समुदाय को ब्राह्मण कहते थे अब भी वही ब्राह्मणों की पदवी के योग्य हैं जो पढ़े लिखे हैं।

देशके बाबू, वकील, जो तालीम याफ्ता कहलाते हैं। यही ब्राह्मणों की तरह मुल्की और मजहबी सुधार के जिम्मेदार है।

जब कभी गैर लोगों की तरफ से तालीम याफ्ता लोगों पर यह एतराज किया जाता है कि फलां एजीटेशन पबलिक की तरफ से नहीं है उसमें मुल्क की आबादी । बहुत हिस्सा शामिल नहीं है सिर्फ तालिम याफ्ता लोग दावेदार हैं तब यही जवाब दिया जाता है कि तालीम याफ्ता गरोह ही कुल वाशिन्दगान का रिप्रेजेन्टेटिव है। पस जब खुद तालीम याफ्ता गरोह रिप्रेजेन्टेटिव होने की दावेदार बनती है। तो यह कहना बिलकुल ठीक है कि कुल वाशिन्दगान मुल्क की बहबूदी व बरबादी का भी यही गरोह जिम्मेदार है और दर असल यही गरोह इस काबिल है भी कि मुल्क का सुधार कर सके।

लेकिन जमाने साबिक में जो गरोह तालीम याफ्ता थी वह तालिम के जरिये सिर्फ अपनी जाती गरजों को पूरा करने में मशगूल न रहती थी। तालीम याफ्ता गरोह ने हुकूमत करना। एक खास फिरके के लिए और तिजारत करना दूसरे गरोह के लिए कर दिया था। और अपना फर्ज आयाम्मत तालीम और मजहबी व सोशल ...यों की अंजाम देही अख्तियार किया था।

उस जमाने के तालीम याफ्ता ... पेस अवारा के सामान मुख्या करना ... पना मकसद या उद्देश्य नहीं समझते ... दरकस इसके त्याग धर्म के कदरदान ... आमिला थे। सिर्फ अपने गुजारे के लि... राजाओं और साहुकारों से धन लेकि... करते थे। कुदरती जरूरत से ज्यादा कि... अशियाय के तालिब न होते थे।

मगर आज के तालीम याफ्ता जो ब्रा... ह्मणों के कायम मुकाम है। यानी तालीम की आयाम्मत कवानीन की नफाजत और दीगर मुल्की या कौमी काम किया करते ... वह जमाने कदीम की तालीम याफ्ता ग... रोह के बिलकुल खिलाफ अपनी जिन्द... का मकसद समझते हैं।

लाखों में एक दो आदमी फरगुस... कालिज डी. ए वी कालिज नेशनल कालिज हिन्दू कालिज या लेजिस्लेटिव कौंसिल में और किसी संख्या में दृष्टि पड़ते हैं प्राचीन काल के शिक्षितों की भांति साधारण रीति से जीवन व्यतीत नहीं करते सबही का... जीवन पश्चिमी के प्रभाव से संसार म... दृष्टि पड़ता है।

लेक्क लेजिस्लेटिव कौंसिल की ध्वनि ... हाल में गूंजा करती है। किन्तु बाहर ... फलतेही श्रोता वक्ता दोनोंही भूल जाते ...

मैं इस विषय में उन लोगों को ... अपराधी समझता हूं। जो नेत्र रखते ... देखा करते हैं और उनके सामने ...

प्यार भाई ठोकरें खा कर गढ़ों में गिरा करते हैं। परन्तु यह उन्हें ठोकर लगने या गढ़े से बचाने के लिए उद्योग नहीं करते, उनकी दिव्य दृष्टि यदि ऐसे पुरुषों को दुःख से बचाने के लिए काम में न आई तो इस का होना न होना दोनोंही बराबर है।

विशेष कर इस विचार से हम उन पुरुषों को अधिक दोषी समझते हैं कि उन्हें इस बात का ज्ञान होने पर भी कि हमारी दृष्टि की सफलता चक्षुहीन को मार्ग दिखलाने ही में है-उनका दोष और भी बढ़ जाता है; जब यह ख्याल है कि ज्ञान दृष्टि अथवा नेत्रेन्द्रिय की दर्शन शक्ति जिस शरीर पर आश्रित है उसका पालन पोषण उन्हीं विचारे प्रज्ञाहीन पुरुषों के धन हरण करने से होता है।

पूर्वकाल में हमारे पूर्वज ज्ञान की सफलता इस बात में मानते थे कि हम प्राकृतिक जगत की सौंदर्यमान शोभा में फँस कर सांसारिक ऐश्वर्य के वशीभूत हो कर-अनावश्यकीय पदार्थों के संग्रह और प्रलोभन में निमग्न होकर कामना शक्ति को उद्दीप्त करके लोलुपता तथा कामात्मता के जाल में ग्रस्त होकर जीवन न बितावें।

यह समझते थे नश्वर जगत् का भोग्य हम न बनें, किन्तु जगत को भोग्य समझ कर उसको उपयोग में लावें, उनके उदार हृदय और विशाल चक्षु सदा यह समझते और देखते थे कि पाशविक जीवन और मानवी जीवन में भेद है। यह यह जानते थे कि मनुष्य जो उत्कृष्ट प्राणी है उसका जीवन उच्च जीवन होना चाहिये। राग रंग भोग विलास अथवा रूप लावण्य की छटा आशा और अभिलाषा की वर्द्धक सामग्रियां प्रेम और प्रिय मनमुग्ध कारी भौतिक विकृत वस्तुयें क्षणभंगुर और परिवर्तन शील पदार्थ मनुष्य व मनुष्य जातिके वास्तविक कल्याण का साधन नहीं होसके।

उनका अलौकिक विश्वास, उनकी अभौतिक शक्तियां उनकी मानसिक चिंतना उनकी आत्मिक धारणा उन्हें इस बात पर विवश न करती थी कि यह-समस्त जीवन एकही प्रकार के व्यसनों में लगाये रहें जो वस्तुतः अशाश्वत और अनित्य संसार मर्म जीवन है।

उनकी विद्या की साफल्यता मनुष्य जाति को कल्याणकारी मार्ग के अन्वेषण और निदर्शन कराने में समझी जाती थी। भौतिक आविष्कार, संसार की विचित्र शोभा और प्राकृतिक दर्शनीय रमणीयता के भेद को जान कर-यह जगज्जाल को छिन्न भिन्न और मोह पाशकी ग्रंथि को विवेक रुपी नखों से खोलकर मायामयी कापटिक तृष्णामृग को विदीर्ण करके सदा निस्पृही जीवन बिताने और निष्काम कर्म करने में संलग्न रहते थे; उनका मानसिक भाव बड़ा उच्चथा यह हमारी अपेक्षा उच्चातिउच्च गिरि शिखरारोहण करके दिव्य दृष्टि से सृष्टि का अचिन्त्य आनन्द

मद अनुपम शोभा और शृंगार मयी सूक्ष्मा-ति सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल रचना पर दृष्टि निपातन करके मौलिक आविष्कार मय प्रदर्शिनी की निरीक्षणता की अपेक्षा आत्मिक कल्याण अथवा नित्य के जीवन को आनन्द मयी श्रेय पथ के अनुगामी हो कर ग्रहण करने के लिए उद्योग किया करते थे।

परम पुरुषार्थ का अर्थ भय ताप का निवारण करना समझते थे और भोग का अर्थ विज्ञान द्वारा पदार्थों की वास्तविकता का अनुभव मात्र था-किन्तु पदार्थों में लो-लुपता, निमग्नता, और स्वकीयता, तथा अस्मिता, और अभिनिवेश का उन्हे पूर्ण ज्ञान था उनके दर्शनों की रचना उनके मान-सिक भावों का आदर्श है—उपनिषदों की शिक्षा उनके त्याग वैराग्य उदारता और आस्तिकता का निदर्शन है।

उनके संस्थापित मार्ग, रेल की सड़कों से अधिक दृढ़तर है उनके सूक्ष्म और कल्प नित विचार नित्य और शाश्वत जब तक मनुष्य जाति इस सृष्टि पर रहेगी तब तक वह सृष्टि में परम उपयोगी समझे जायेंगे और उनमें किञ्चित मात्र भी परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत न होगी। उनके विश्व-के सिद्धान्त भी आज तक आदरणीय हैं—"कुर्वन्ने वेह कर्माणि मा फलेषु कदाचन" जो पुरुषार्थ और त्याग की कल्याण कारी शिक्षा का सूत्र है। आज समस्त जगत का मोटो बन रहा है—सभ्य जगत ने इसमें किञ्चित मात्र भी न्यूनाधिकता नहीं कर पाई।

"मागृधः कस्यस्विद्धनम्" के सिवा इस से बढ़कर कोई आविष्कार नहीं हुआ।

"मातृवत् परदारेषु" की समानता का वाक्य कहीं नहीं मिला।

"परद्रव्येषु लोष्टवत" की पवित्रता से बढ़कर कोई ध्वनि नहीं सुन पड़ी।

"स्वदेशे भुवनत्रयम्" की उदारता जो चमक है वह बिजली में भी नहीं देखी गई।

"वसुधैव कुटुम्बकम" की निष्पक्षता का अनुकरण ही अबतक किया गया है।

"सर्वाणि भूतानि समीक्ष्यताम" की जगमती ज्योति को देखकर हिंसक जगत विचलित हो जाता है और प्राण रक्षार्थ उद्योगवान होकर इसका खण्डन करता है परन्तु इसकी मधुरता व शक्ति का स्वाद नहीं पाता।

पूर्वकाल की माननीय सृष्टि का बाह्य और आभ्यान्तरिक रूप भाव वर्तमान जगत में दृष्टि नहीं पड़ता। अब कुछ और है और तब कुछ और था।

उपनिषदों के वाजश्रवस और नचिकेता—दर्शनों के गौतम कपिल कणादि स्मृतियों के मनु, याज्ञवल्क्य, नीति कार विदुर सत्यव्रती हरिश्चन्द्र-भीष्मपितामहादि कहां है? क्या यह पहिचान सकेंगे कि इन दिनों भारतवर्ष में जो चातुर्वर्ण निवास करते हैं उनको उनके रूप रंग, आचार

विचार, भाव वासना, ज्ञान विज्ञान, विचार विवेक, त्याग भोग, और अन्य व्यवहारों से कोई सम्बन्ध है !

प्रसंग हिन्दुओं के सुधार का है उनकी दशा उनके दर्शन साहित्य धर्मग्रन्थ और ज्ञान विज्ञान और नीति आदि के प्रणिताओं की दशा के नितान्त विपरीत है।

सुधार का मूल कारण और प्रधान साधन उनके पूर्वजों का मार्ग है। प्रत्येक जाति का उत्थान उनके प्राचीन वैभव के दृष्टान्तों से शीघ्र होता है।

पूर्वजों की वीरता कापुरुषों के धमनी गत स्थगित रुधिर को परिचालन करने लगती है-पूर्वजों के चरित्र का प्रधान साधन होता है। भारत वासी उठेंगे। अवश्य उठेंगे। एक बार स्मरण दिलाइये उनके पूर्वजों की परोपकारिता का, और उनकी महान योग साधन, आदि आविष्कृति का फिर देखिए भारत उठता है या नहीं।

छोड़िए तुच्छ आशा और अभिलाषा छोड़िए। साधारण सांसारिक ऐश्वर्य की कामना, त्याग दीजिए परस्पर की स्पर्द्धा और प्रतिद्वन्दिता ग्रहण कीजिए सहस्र जगत के कल्याण साधन की सार्वजनिक उदारमयी भावनाको और जाप कीजिए इस महामन्त्र का किः—

"स्वदेशो भुवनत्रयम्"

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि"

"कर्मण्येव अधिकारास्ते माफलेषु कदाचन"

फिर देखिए क्या होता है।

विक्रमोर्वशी।

त्रोटक।

(पं० शिवनाथ शर्म्मा द्वारा लिखित)

नान्दी पाठ।

वेदन में जेहि भूतभव्यापक
केवल एक सुदेव कह्यो है।
ईश महापद अन्य न योग,
वैया मैं यथारथ अर्थ भयो है।
मुक्ति मिलाप मुनीन के साधित
प्राणन माहि विलाश रह्यो है।
सो शिव रावरो मुक्ति करै
जु सदा थिरभक्ति सुयोग लह्यो है॥

(सूत्र धारका प्रवेश)

सूत्रधार—बस बस बहुत मत बढ़ाओ। (नेपथ्य की ओर देखकर) मारिष! प्रथम यहां आओ।

(पारि पार्श्वक का प्रवेश)

पारिपार्श्वक—आर्य्य! मैं उपस्थित हूं।

सूत्रधार—मारिष यह सभा प्राचीन कवियों के रस प्रबन्ध को देखे हुई है। मैं इस में कालिदास निर्मित नवीन त्रोटक (नाटक) का अभिनय करूंगा, अतएव पात्र वर्ग से कहो कि सब लोग अपने २ पाठों में सावधान हो जांय।

पारिपार्श्वक—बहुत अच्छा, आर्य्य की जो आज्ञा।

(पारिपार्श्वक का प्रस्थान)

सूत्रधार—जब तक यहां मैं परम विद्वान्

हानुभावों से निवेदन करता हूं । (हाथ
ड़कर) ।

प्रीति रीति औदार्य्य सों,
या नायक के नाम ।
कालिदास की उक्ति यह,
मन सों सुनहिं सुजान ॥

(नेपथ्य में शब्द होता है)

आर्यगण, बचाओ ! बचाओ ! जो देव-
ताओं का पक्ष पाती है । जिसकी आकाश में
गति है ।

सूत्रधार—(कान लगाकर) अरे, क्या
निश्चय मेरी सूचना के पश्चात् दुखी कु-
री गणका शब्द आकाश में सुनाई पड़ता है।

पुष्प परागपियूष पान सों
मत्त मधुपगन,
करत शब्द ? अथवा कोयल को
यह सुमधुर स्वन ।
कैधौं चहुं दिशि सुर सेवित सुन्दर
नभ मण्डल,
ता महं नारी करत गान
अप्सरनि विमल फल ? ॥

(सोचकर) अच्छा । अब समझा ।

मन्मथ मुनि की जंघा सों
उपजी वरनारि,
सो फिर पूजन करके यागों
जाचे गिभारि ।
[illegible]
[illegible]

तासों आरत नाद करत
अप्सरा भय भरी ॥

(सूत्रधार का प्रस्थान)

(इति प्रस्तावना)

(क्रमशः)

सामयिक सम्मति ।

(१)

श्री हिन्दू विश्वविद्यालय काशी ।

यह सर्व मान्य है कि प्रत्येक देश की सुदशा शिक्षा प्रचार पर अवलंबित है । एक समय था जब कि महा प्रभु योरोप प्रवासी सभ्यता में चढ़े बढ़े न थे । वह केवल जंगली जंतुओं के भांति भोजन करना और धराशाई होना ही जीवन का मुख्य लक्ष समझ बैठे थे; किन्तु आज उनके पुण्य और प्रताप का झंडा फहर लगा है। उनका इतिहास हमें बतलाता कि यह सब उनके पुरुषों का विद्या प्रेम और आत्मबली का ही फल है । दूर क्यों जाते हो थोड़े ही दिन से पथिक की भांति पधारने वाले मुसल्मानों का इतिहास, उनका चढ़ा उतार और शाही प्रयोग भी तुम्हारे संमुख उपस्थित है । जितने शीघ्र उन्हों ने गुर्जनि विद्याविद्यालय का कार्य हाथ में लेकर [illegible] उतार दिया । किन्तु शोक ! कि प्राचीन [illegible] का युग भारत वर्ष उन सब कापु[illegible] [illegible] जातियों से भी गया बीता है । [illegible] [illegible] में भांति भांति के अनुमान । [illegible]

...ी नाम मात्र को-शिक्षा दी जाती
देश यदि आजन्म पराधीनतामें पड़ा
आश्चर्य ही क्या ? संतोष का विषय
क विश्वविद्यालय University का
हमारे श्रद्धेय माननीय पं० मदन मो-
मालवीय ने उठाया है और कई वर्ष
विचारने के उपरांत अब उसे कार्य
रिणित भी कर दिया है। मालवीय
स शुभ कार्य के लिए १॥ करोड़ रु-
आवश्यकता है। इस में संशय नहीं
से द्वारा हिन्दू जाति में लहलहाती
न्न हो सकी है।
...वीय जी ने तो इस शुभ कार्य का
रम्भ कर दिया है। किन्तु अब उसे पूरा क-
करना हिन्दू जाति का काम है। यदि
द चाहते हैं कि उक्त विद्यालय में
पाकर हमारे संतान सतोगुण मय उ-
ं तो उनको उचित है कि इसमें यथा
आर्थिक सहायता करें। यह हिन्दुओं
न और मरण का द्योतक है।

(२)

मंदिरों की रक्षा।

...र्नीय मोलगंज और गिलिश बाजार के
ई प्रस्तावित सड़क में हिन्दुओं के ४
पड़े थे। जिनको खोदने का विचार स-
र हिन्दू समाज में खल भली मच गई
इन में एक मंदिर के मूल्य को भूमि वि-
पक्षाधिकारी Land Acquisition off-
ने उसके निर्माणकर्ता के वंशजों को देकर
मंदिर गिरवा दिया और दूसरे को हिन्दु
प्रार्थना करने पर स्वर्गीय मि० वार्डेट साहब
कलक्टर ने छोड़ दिया था। अब शेष दो मं-
दिर कृपा कटाक्ष पर अवलंबित है। गत वर्ष
के मुसलमानों के प्रार्थना पत्र पर जिस छोटे
लाट ने उनकी मसजिदें बचा देने की आज्ञा दी
थी क्या वेही, हिन्दू मंदिरों की रक्षा कर अ-
पनी धवल कीर्ति को स्थिर न करेंगे। मंदिर
सारी हिन्दू समाज की संपत्ति है और केवल
एक मनुष्य की सम्मति पर उनका गिराया
जाना कदापि न्याय संगत न होगा।

(३)

गुरुकुल।

विद्या कला की उन्नति करने के लिये ह-
मारे आर्य समाजी भाइयों ने गुरुकुल खोल
रक्खे हैं। जिनमें विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य
धारण कराते हुए संस्कृत और अंग्रेजी सा-
हित्य की शिक्षा दी जाती है। यद्यपि भारत
वर्ष के दुर्भाग्य से ऐसे गुरुकुलों की संख्या
५। ६ से अधिक नहीं है। तथापि ऐसी दुर्द-
मनीय अवस्था में इतना ही उद्योग कहां का
कम है। कई कारणों से फर्रुखाबाद के गुरु-
कुल को यहां से उठाकर किसी अन्य स्थान
पर ले जाने की व्यवस्था हो रही है। जिसमें
इसके इस समय दो स्थान चुने गए हैं। एक
मथुरा दूसरा ब्रह्मावर्त (बिठूर) कानपुर।
हर्ष की बात है कि यहां के कानूनी नारायण
जी अन्य सज्जनों सहित इस के लिए निरन्तर
उद्योग करते हैं और उनके इस सराहनीय
उद्योग के कारण यहां के कई मोअज्जि ...

अवशिष्ट जीवन गुरुकुल के लिये उत्सर्ग कर ने को तैयार हैं। हमारी समझ में मथुरा से कानपुर का स्थान अत्यन्त उत्तम है। आर्य प्रतिनिधि सभा को इस ओर ध्यान देना चाहिये। किन्तु स्मरण रहे कि यह शुभ कार्य हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व वा पश्चात् होना चाहिए।

(४)

मुसलमानों की धृष्टता।

कुछ दिनों से कानपुर के मुसल्मानों ने धूम मचादी है। लाहौर आदि नगरों से कई यवन मोलवी यहां पधार कर मौलूद शरीफ का बहाना करके लोगों में भेदभाव की अग्नि भड़का रहे हैं। उनके सारे व्याख्यान का सारांश हिन्दू जाति को तुच्छ और नीच प्रमाणित करना है और यही बात अपने अपढ़ भाइयों को बताने के लिए वे अपनी सारी शक्ति लगा रहे हैं। हिन्दू-यह जानकर भी कि-सनातन धर्म और आर्य समाज पर एक समान कटाक्ष हो रहा है, अब तक मौन धारणकर अपनी गंभीरता का परिचय दे रहे हैं; किन्तु इसपर भी पीछा नहीं छोड़ता। मुसल्मानों! सचेत रहो!! मोलवी साहब विद्वेष की आग भड़का कर कुछ दिन में यहां से चंपत होजायँगे, पर तुम्हारा संबंध हिन्दुओं के साथ जन्म जन्मांतर के लिए है; जिन हिन्दुओं के कारण तुम्हारा पेट भरता है, उसी निरपराध जाति के ऊपर असंगत दोषारोपण करना तुम्हारी —— का परिचय देगा।

(५)

गोरक्षा।

सम्राट जार्ज के राज्याभिषेक [illegible] भारत भर में गोवध बंद रहे-[illegible] उद्योग यहां के कुछ शुभचिंतकों [illegible] विचारा है। जबलपुर के श्रीयुक्त [illegible] शोरावजी जसावाला महाशय राज्याभि[illegible] समयउपलक्ष्य गोरक्षकों के हस्ताक्षर [illegible] सम्राट की सेवा में एक प्रार्थना पत्र [illegible] करने वाले हैं और रिव्यू आफ रिव्यु[illegible] पादक मि० स्टेड ने भी अपने पत्र [illegible] शीर्षक का एक लंबा चौड़ा लेख लि[illegible] हमें यह भी पता लगा है कि इस [illegible] स्टेड साहब विलायत के कई अग्रगण्य [illegible] से सम्मति भी ले चुके हैं। [illegible]

का मनोर्थ सफल करे।

(६)

लोकल कानपुर

ता० २३ जूलाई १९११ को हि[illegible] एक सुविशाल महासभा मि०[illegible] की [illegible] विरुद्ध सम्मति प्रगट करने के लिये [illegible] हुई थी। व्याख्यान दाताओं के उत्[illegible]त्साह पूर्ण थे।

(७)

मि० आगाखां की भक्ति

सहयोगी इंगलिशमान ने विगत [illegible] मि० आगाखां के भक्ति की नि[illegible] खोली है उसका कथन है कि "[illegible] की तूती जो इस समय पंजाब प्रान्त [illegible] रही है और जिस के कारण [illegible] भारत वासी सींग कटा कर बछड़े [illegible] है—इस मतका सारा आधार रा[illegible]

पलाद पर है। उनके परम पवित्र
ों में (जिन द्वारा हिन्दोस्थानियों के
न का माया जाल बिछाया गया है)
है कि खां साहब कलंगी अवतार हैं
मुख्य डेरा मुलतान में रहेगा। अथ-
ा उद्देश्य यह कि एक बार जब दिल्ली
वार होवे तो आगाखां से और बाद-
से घनघोर संग्राम होगा, रक्त की
बहेंगी और अन्त में आगाखां का
होगी उस समय आगाखां यहां का
अपने भक्तों के अर्पण करदेंगे"
हयोगी ने यह भी सिद्ध करना चाहा
हो नहो यह हमारा आगामी दरबार
प है। सहयोगी की उक्ति का मुख्य
सरकार और अपने भाइयों को भावी
से सचत करना है।

मे आगाखां के इस कौतुहल पर बड़ा
र्य होता है कि यहां पर दो शंकायें
ा हैं (१) कि क्या आगाखां यथार्थ में
क सर्प है जो अपने रक्षा करने वाले
ों ही को डसा चाहता है? (२) यह
या उनके भक्तों विशेष कर हिन्दू अ-
इयों में अभी तक यवनों के पराधीन
र राजसुख भोगने की लालसा बाकी
यदि है तो सरकार को इस ओर ध्यान
चाहिए और यदि ऐसा नहीं है तो क्या
के भीतर कोई तीसरी चाल छिपी है?

(८)

मुसल्मानो को हिन्दुओं की रोटी।

लोकल मन्त्री मि० बर्न के म्युनिसिपल
ाव विषयक चिट्ठी ने एक बार फिर
भारतवर्ष में असंतोष पैदा कर दिया है।
इसने जिस असावधानी, अदूरदर्शिता
और संकीर्णता से हिन्दुओं की रोटी छीन
कर मुसल्मानों को डाल दी हैं, उससे
दोनों में कटाजौंझ (झौं झौं) होने के अ-
तिरिक्त और कुछ नहीं दीखता। हिन्दुओं
को बड़ा भाई बनाकर उनका सर्वस्व चूस
लेने पर भी अभी उनके राजनैतिक महत्व
को डींग चली ही जाती है दुःख तो यह है
कि लोग स्वयं इस की निशाचरी माया
में फंस चुके हैं हिन्दुओं को इसका शीघ्र
प्रतिवाद करना चाहिए।

(६)

राजतिलकोत्सव।

रयूटर सूचित करता है कि सम्राट जार्ज
का राजतिलकोत्सव आनन्द मनाया जा रहा
है। वहां की हाट बाजार पूर्णतया सुसज्जित
हैं १६ को निमंत्रित राजा महाराजा और प्र-
तिनिधियों का बकिंगहम राज प्रासाद में एक
भोज दिया गया २० को सम्राट ने भेट की
२१ को अन्य देशीय नरेशों प्रतिनिधियों का
स्वागत किया गया २२ को तिलक संस्कार
हुआ २३ को वहां एक बड़ा जलूस निकला
२४ को राज प्रतिनिधि नगर देखने को निकले
२५ और २६ को साधारण उत्सव हुआ २७
वधाल भोज थियेटर आदि की कृतज्ञता हुए
गए स्वदेशों की यात्रा करने लगे सम्राट मर-
विच में राज प्रदर्शिनी देखने गए। २६ को
सम्राट गिरजे में शामिल हुए और ३० को प-
दक वितरण हुए। बधाई।

* सूचना *

पहिले 'जीवन' जून मास में प्रकाशित होने को था, पर कई एक कारणों से पत्र प्रकाशन में विलम्ब होगया। इसी कारण तीसरे पृष्ठ में जून १९११ व ज्येष्ठ १९६८ छप गया है परन्तु टाइटिल पेज पर अगस्त १९११ व श्रावण १९६८ ही छपा है। अत एव पाठकों से निवेदन है कि इस अंक को अगस्तमास का ही समझें।

मैनेजर

५०) इनाम।

'जीवन' के शीर्षक पर एक ऐसे चि[illegible] की आवश्यकता है जिस के दृष्टिमात्र ही जीवन का जागृति भाव सूचित हो।[illegible] पुरातन आधार पर हो। चित्र भेजने [illegible] में से सर्वोत्तम चित्रकार को ५०) [illegible]स्कार रूप से भेंट किया जायगा और [illegible]वाद सहित उस का नाम पत्र संख्या [illegible] प्रकाशित होगा।

मैनेजर.

लखनऊ

श्रीदामोदर यन्त्रालय में एम० एन० शर्मा द्वारा मुद्रित होकर पं० रामप्रसा[illegible]
द्वारा कानपुर से प्रकाशित हुआ।

Register No J. 19.
भाग ८
अंक १-२
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का मासिक पत्र
ओ३म्
नवम्बर, दिसम्बर १९०९ ईस्वी
अनाथरक्षक॥
तातः को जननी च का हितरताः के बान्धवा बान्धवाः।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वारि, यानञ्च कः॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते ! त्वन्नाम जानीमहे।
हा हा नाथ! अनाथरक्षक! सदा नः पाहि पाहि प्रभो!!!
पं० गिरिधर शर्म्मा

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर के मासिक आयव्यय का नक़ूशा बाबत मास सितम्बर १९०६ ई० ॥

आय.

८४॥-)२½ पिछला शेष

५८०॥।=) दान

८।=)॥ मासिकचन्दा स्थानिक

१) " बाहर का

।) औषधालय

३) अथाथरक्षक

१५॥=) किराया

६८) अमानत

योग ७६१॥≡)६½ पाई

२८१॥।-) पीपल्स बैंक से निकलवाये.

योग १०४३॥)६½ पाई

व्यय.

१७६॥।≡)॥। ख़ुराक

६॥।)॥। गोशाला

१५७॥।=)॥ उपदेशक

३०॥।=) अनाथरक्षक

४=) शिक्षा

≡)॥ पोस्टेज स्टेशनरी

॥।) मरम्मत मकान

८।=)॥ सफ़ाई

२-)। औषधालय

४२॥।-)॥ कपड़े

५) रोशनी

४=)॥। धुलाई

१०) वर्तन

७।≡)। मृतक संस्कार

१०॥≡) अमानत

१५॥।)॥। फुटकर

४८७-)६

४५५) पीपल्स बैंक को भेजे

१०१।=)३½ शेषरहे

योग १०४३॥)६½

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय [illegible] के त्रैमासिक हिसाब का नक़्शा बावत मास [illegible] दिसम्बर १९०६ ई० ॥

आय

१९४३॥।-) दान

२३।-) मासिकचन्दा स्थानिक

४८) ,, बाहर का

२२=) अनाथरक्षक

६॥।=) किराया

१०४।) अमानत

)॥ फुटकर

१=) अनाथों की ख़ुराक के

६॥।) सूद

योग २१७०=)॥

६०) पीपल्स बैंक से निकलवाये

२१८।-)॥ शिमला अ० बैंक से नि०

१०१।=)३½ पिछला शेष

योग २५७२॥।=)३½ पाई

व्यय

६७१।=)॥ ख़ुराक

११७)॥ गोशाला

७१९॥।-) उपदेशक

१०८।)। अनाथरक्षक

८६॥।≡)२ शिक्षा

६।-)। स्टेशनरी

३।-) पोस्टेज

६९।=)। अनाथरक्षा

२५॥-)। सफ़ाई

६=)॥। औषधालय

६४=) कपड़े

३४=)॥। रोशनी

१६।-) धुनाई

७-)॥। वर्तन

१॥≡॥ मृतक संस्कार

४८॥≥) अमानत

८) सहारनपुर की जायदाद पर

२४१।।=)४ वेतन

४२॥-)२ सफ़ेदी कराई

२५-६ फुटकर

२२६६।॥=))१ पाई

२८४॥=)। पीपल्स बैंक को भेजे

१६=)३½ रोकड़

योग २५७२॥।=)३½ पाई

भरा हो थवस अपना रेशमी कपड़ों से लाहाते है ।
न दें चादरें भी एक उनको जो सरदी से बचाने को ॥ ११ ॥
अनाथों को ज़रूरी है नहीं कुछ भीख का देना ।
घड़ी एक लाज़मी है कोट में अपने लगाने को ॥ १२ ॥
फ़क़ीराना सदा में मालदारों से फ़िदा कह दो ।
कि मासिक बांध दो कुछ तो अनाथों के बचाने को ॥ १३ ॥
नोट-महाशय फ़िदा कहीं २ शब्द बदल के लिये क्षमा करें । (सम्पादक)

नवीन वर्ष ॥

पतितोद्धारक,दीनानाथ, परमपिता परमात्मा को अनेकानेक धन्यवाद देना चाहिये जिसकी कृपाकटाक्ष से यह क्षुद्र पत्र भी अपना सातवां वर्ष समाप्त कर आठवें वर्ष में प्रविष्ट हुआ । वर्ष के अन्तिम भाग में रक्षक को अपनी जन्मभूमि अजमेर के कष्ट-साध्य, अत्यन्त भयानक समय के प्रभाव से प्रभावित होना पड़ा । वर्ष का प्रायः $\frac{1}{3}$ भाग दैवी प्रकोप वश वह अपने ग्राहक अनुग्राहक महाशयों से ठीक समय पर भेट भी न करसका, और इस प्रकार अलग थलग पड़ा रहकर एकान्त जीवन व्यतीत करता रहा।

गत वर्ष रक्षक ने अपनी निर्बल शक्ति के अनुसार इस उद्देश्य की पूर्त्यर्थ प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया कि श्री मद्दयानन्द अनाथालय के प्रेमी "रक्षक" के ग्राहक महाशय प्रयत्न करें कि अनाथालय कमेटी अनाथों के भोजन व्यय से सर्वदा के लिये निवृत्त हो कर अपना ध्यान अनाथोंकी उच्च शिक्षा की ओर देसके, जिससे अनाथाश्रम वासी बालक तथा बालिकाएं प्राणरक्षा के साथ २ देश और धर्म के लिये सच्चेसेवक निकल सकें ।

इसकी सिद्धि के लिये उसने ३ कक्षा नियत की थी (१) वह धनसम्पन्न दानी जो १०००) रुपये एकबार ही उक्त कमेटी के नामपर किसी बैंक में जमा कराकर उसके सूद द्वारा एक बालक के व्यय से सदा के लिये कमेटी को मुक्त करदें ।

(२) वह धर्मात्मा सज्जन जो २००) रु० किसी बैंक में कमेटी के नाम जमा कराकर उसके सूद से वर्ष में एक दिन समस्त बच्चों को भोजन कराकर कमेटी को इस बोझ

से हलका करें। (३) वह सज्जन जो प्रति वर्ष नियत तिथी पर कम से कम १०) रु० समस्त बच्चों के भोजनार्थ प्रदान किया करें।

कई कारणों से यह स्कीम इस वर्ष पूरी न होसकी किन्तु यह अवश्य ज्ञात हुआ कि सर्व साधारण तीसरी रीति को अधिक पसन्द करते हैं। लग भग १५ महाशयों ने इसके अनुकूल भोजन दान का वचन दिया है। हमें आशा है कि रक्षक अपने ग्राहकों की सहायता से नवागत वर्ष में अवश्य अपनी इस इच्छा को पूर्ण कर सकेगा।

हम चाहते हैं कि अनाथरक्षक आगामी में अनाथरक्षा के लिये अधिक उपयोगी बनसके इसकी सिद्धी के निमित हम अपने पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी २ सम्मति देकर कृतार्थ करें।

वर्त्तमान शक्ल, सूरत, लेखप्रणाली इत्यादि में जिस प्रकार का फेर फार करने की अनुमती हमें दीजायेगी हम उसे स्वीकार करा कार्य्यरूप में परिणित करने का यत्न करेंगे।

अनाथालय स्थापित करने और उसकी सहायता की क्या अवश्यकता है?

बिजनौर प्रान्त में एक तहसील चांदपुर नामी है। अभी एक शताब्दी नहीं व्यतीत हुई कि गुल्लू साह नाम के एक महाजन वहां के प्रसिद्ध धनी और मानी गिने जाते थे। चान्दपुर जो अपनी बनावट, सजावट तथा जनसंख्या के आधार पर बिजनौर प्रान्त में अच्छा कसबा समझा जाता है, आधे के लगभग अकेले गुल्लूसाह के ठठ बाट का स्थान था। और केवल बिजनौर ही क्यों आस पास के अनेक अन्यप्रान्तों में भी महाजन गुल्लूसाह की धाक बंधी हुई थी।

गुल्लूसाह के विषय में उस प्रान्त के लोगों में एक कहावत बहुत ही प्रसिद्ध है, कि उसने अपने पुत्र की "जान" बारात के लम्बायमान करने में चांदपुर और नजीबाबाद को जिन में लगभग २५ कोस की दूरी है एक करदिया था और हठी गुल्लूसाह शान्त न हुआ जब तक कि अपने प्रतिद्वंदी (समधी) को तहस नहस न करदिया।

हमारा अभिप्राय इस कहने से यह है कि गुल्लू साह अपने समय का प्रसिद्ध शक्ति-
सम्पन्न मनुष्य था। किन्तु समय का चक्र चला और गुल्लू साह अपनी मानवक्रिया
समाप्त कर शान्त हुआ। कारोबार उसके पुत्र के हाथ में आया और लक्ष्मी ने प्रस्थान
किया। आज चांदी के व्यापार मे हानि हुई तो कल वस्त्र व्यौपार में हानि होगई।
जमींदारी में विघ्न, राज दरबार में पराजय गरज़ जिधर देखो सीधा उलटा दीखने लगा।
वृद्धों में अकृपा, युवकों में अप्रीति और बालकों में अप्रतिष्ठ और अवज्ञाकारी दुर्गुणों
का प्रादुर्भाव होगया।

परिणाम यह हुआ कि आज उस पूज्य व्यक्ति गुल्लू साह का पौत्र उसी बिजनौर
नगर में सदा सुहागन का रूप धारण किये घर २ के कुत्ते सुंघाता हुआ पेट की भभ-
कती ज्वाला को शान्त कररहा है।

आह !! कैसा भयानक दृश्य है ? जिस अग्रगण्य महाजन के दरवाज़े पर एक
समय भिखारियों का जमघटा रहता था, जिसके आश्रय से अनेकों विद्वान्, अभ्यागतों
का यथोचित पालन और पोषण होता था, जिसके विशाल भवनों के मदरसों को शिक्षा
पानेवाले कितने ही मनुष्य सेठ और धनपति होगए, उसी का पौत्र (पोता) आज
घर २ के अन्न से अपनी उदरपूरणा करता है।

महाशयो ! यह एक प्रमाण है जो हमको संसार के परिवर्तन की ओर ले जाता है,
और प्रत्येक शक्तिशाली व्यक्ति, से मानो [illegible] है कि [illegible]!
बताओ तुम्हारे पास अपने इस सम्पूर्ण बल, पराक्रम और धन ऐश्वर्य की [illegible] का
क्या प्रमाण है ? यदि रावण जैसे त्रिभुवन, [illegible]
को संसार छोड़ना पड़ा तो मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जैसे [illegible]!
कंस यदि न रहसका तो योगिराज कृष्ण [illegible]!
फिर आप सदा अपने वर्तमान धन और जन के [illegible]
सदैव आप से पालित हो रहेंगे इस का क्या [illegible] है !

[illegible] संसार की [illegible]
परिणाम और उसके [illegible] करने के लिये [illegible] है कि [illegible]

क्या किसी किसान ने बिना बोए नाज काटा है ? क्या बिना रक्षा किये कोई छो से बड़ा हुआ है ? क्या रक्षा करना मनुष्य का परम धर्म नहीं है ? क्या कोई क सकता है कि उसका काल सर्वदा एकसा ही रहेगा ? क्या कोई कह सकता है कि व सदा जीवित ही रहेगा ? क्या कोई कह सकता है कि उसका कुटुम्ब जैसा आज धन सम्पन्न और सुखी है वैसा ही सदा बना रहेगा ? क्या कोई कह सकता है कि जिस कुटुम्ब को आज हम अपनी आंखों से देखते हैं यही कुटुम्ब सदा से चला आता है ? क्या कोई कह सकता है कि जिन अनाथों की आज हम रक्षा करते हैं वह किसी समय भी हमारा कोई नहीं था ? इसीलिये भद्रजन कह गए हैं कि यथा तथा जो कुछ बने उससे अनाथ रक्षा करना मनुष्यमात्र का परम धर्म है । ऐसा न हो कि:—

भजन ॥

टे०—धरमदाम नहीं लिया, साथ में धरमदाम नहीं लिया । खर्चेगा फिर क्या तू प्यारे, खूब विषय रसपिया ॥ १ ॥ साथ० अन्न वस्त्र को खाय पहिर के, तनको मोटा किया ॥ २ ॥ साथ में० अंधा, लंगड़ा, लूला, रोगी, इन्हें दान नहीं दिया ॥ ३ ॥ साथ में धरम० देव गुरु की निंदा करके, मन मस्ती में गया ॥ ४ ॥ साथ में० गणपति विट्ठल जप, तप, करले, नातर जाता जिया ॥ ५ ॥ साथ में धरम दाम नहीं लिया ।

पं० गणपति विट्ठल

श्रीमान् पं० गणपतिजी विट्ठल वधांड़ा जिला बेतूल पो० आ० मुलताई सूचित करते हैं कि २८ फरवरी १९१० ई० तक जो सद्गृहस्थ अनाथरक्षक के नवीन ग्राहक बनेंगे उनको वह अपनी कई प्रकार के फल, फूल, भाजी आदि के बीज की ।।।) वाली पुड़िया केवल ।) डाक व्ययार्थ लेकर मुफ्त देंगे । ग्राहकों को मैनेजर अनाथरक्षक द्वारा पत्र भेजना चाहिये ।

सूचना ॥

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय फैक्टरी की प्रबन्धकर्तृ सभा ने मोजों का मूल्य बहुत ही घटा दिया है अर्थात् अत्युत्तम, सुदृढ़ और सुन्दर मोजे १॥।=) दर्जन पुराना स्टाक १॥) और ॥।) दर्जन पर ही दिया जाता है । १॥।=) दर्जन वाले ७ और ८ इंच के ही शेष हैं । यदि आप को आवश्यकता है तो शीघ्र मंगा लीजिये ।

कुसंगति का दुष्परिणाम और भ्रातृस्नेह ॥

मनुष्य यदि सुसंगति से देवता, ऋषि और महर्षि की पदवी प्राप्त कर सकता है तो निःसन्देह कुसंगति में पड़कर दस्यु, राक्षस और इससे भी नीच गति को पहुंच जाता है। कितने घर इस कुसंगति के कारण मलियामेट होगए ? कितनी आत्माएं इस के दुष्ट संस्कारों से गिरचुकीं और प्रतिदिन गिरती जाती है, किसी से अप्रकट नहीं। किन्तु गिरी से गिरी आत्माएं भी भ्रातृस्नेह (खून के स्वभाविक जोश) को नहीं रोक सकतीं। इसी की उदाहरणस्वरूप एक कथा नीचे उद्धृत करते हैं।

अहमदाबाद के धनी गुजराती महाजन नानाभाई, नाथूभाई एक पुतलीघरके प्रधान भागी थे। पहिले उनकी अवस्था अच्छी नहीं थी, परन्तु कठोर परिश्रम और यत्न से वह बुढ़ापे में बहुत धन के अधिकारी होगए थे और आख़िरकार वृद्ध अवस्था में सब काम अपने दोनों पुत्रों पर छोड़ स्वयम् ईश्वरचिन्ता में मग्न होकर काल बिताने लगे।

उनके बड़े लड़के का नाम जीवनराम और छोटे का गोविन्दराम था। पिता की सम्पत्ति के मालिक होने के समय जीवनरामकी अवस्था २५ वर्षकी थी और गोविन्द-रामकी २३ वर्ष। दोनों भाई एक साथ काम करने लगे, परन्तु दुर्भाग्यवश थोड़े ही दिनों में गोविन्दराम ख़राब साथियों में पड़गया। जीवनराम ने उसे सुधारने की बहुत कोशिश की पर कृतकार्य न हुआ। दिनोंदिन वह पाप और कर्ज़े में डूबता गया यहांतक कि कारखाने से उसका सब सम्बन्ध टूटगया। कुछदिन पश्चात् लड़के के व्यवहार से निराश होकर वृद्ध नानाभाई ने इस असार संसार को त्याग दिया। बापके मरते ही दोनों भाइयों का बिगाड़ और भी बढ़गया।

एक रातको जीवनराम पुतलीघर से लौटकर आए तो देखा कि उनके कमरे में लेम्पजल रहा है और कोई मनुष्य वहां खड़ा है। वह सोचने लगे "इसवक्त यहां कौन आसकता है शायद कोई नौकर हो, लेकिन मेज़ के पास वह क्या कररहा है ? कोई चोर तो नहीं है ?" जीवनराम के कमरे में मेज़के भीतर बहुतसा रुपया रक्खा था, सन्देह करके बहुत जल्दी वे अन्दर घुसे। दरवाज़े पर शब्द होते ही एक आदमी

दरवाजे पर आखड़ा हुआ। जीवनराम ने जब देखा कि वह और कोई नहीं, उन्हीं भाई गोविन्दराम है तो भौं सिकोड़ कर पूछने लगे "इस कमरे में तुम क्यों घुसे?"

गोविन्दराम ने उत्तर दिया "मेरी मरज़ी"

"हमारे डेक्स से क्या निकालते हो? चोरी करने आये थे?"

"इस का इतमीनान मैं तुम्हें नहीं दिला सकता" यह कहकर गोविन्दराम ने एकाएक भागने की कोशिश की। जीवनराम उस के सामने खड़े होगए और कहने लगे "जांच किये विना तुम्हें कदापि न जाने दूंगा" यह कह गोविन्दराम को भीतर धकेल दिया बस फिर क्या था दोनों भाई लड़ते २ मेज़ के ऊपर आगिरे। लेम्प नीचे गिर कर टुकड़े २ होगया। इतने में गोविन्दराम चिल्ला उठा क्योंकि लेम्प के शीशे से उसकी कलाई कट गई थी।

जीवनराम ने उसी वक्त भाई को छोड़ बत्ती जलाई तो देखा कि गोविन्दराम भाग गया है और मेजपर कई बही खून से भीगी पड़ी हैं। दराज़ खींचकर देखा तो उसका ताला टूटा था और उसके भीतर जो एक हज़ार रुपये का नोट था वह भी गायब था, जीवनराम ने इस मामले को और अधिक फैलने न दिया।

गोविन्दराम के घर से निकलने के पश्चात् दो वर्ष तक उसका कुछ पता न लगा। आख़िरकार सुनने में आया कि वह ओरण्टियल ट्रेडिंग कम्पनी के सुटिरदार नाम के जहाज़पर कई मुसाफ़िरों के साथ पोरबन्दर से सवार होकर द्वारिका जा रहा था अरब सागर में तूफ़ान से जहाज़ डूब गया और उसके सब मुसाफ़िर डूबकर मरगए। गोविन्दराम का संसार से सब नाता टूट जाने पर भी जीवनराम की आखों से आंसू निकल पड़े जीवनराम पूर्ववत् कारख़ाने का कार्य्य करने लगे, परन्तु उनके चमकते हुए भाग्य पर अंधेरा छागया, लक्ष्मीदेवी ने उन्हें परित्याग किया। आख़िरकार एक दिन कारख़ाना बन्द होगया, बहुत प्रयत्न करने पर भी वह कुछ न कर सके सब बेच खोच कर उन्हें अपने हिस्से का ऋण अदा करना पड़ा। अहमदाबाद में उनका ठहरना मुशकिल होगया। जहां उन के पिता एक दिन राजा की तरह रहते थे वहीं उनके लिये भिखमंगों की तरह रहना असम्भव हुआ। बहुत सोचने के बाद वह सूरत में अपने पिता के एक दोस्त के यहां आए।

उन का नाम मानिकचन्द मूलचन्द था, उनके एक ही लड़की थी और उसकी

अवस्था बड़ी थी। गुजराती प्रथा के अनुसार बहुत बचपन ही में उसकी शादी होजाना चाहिये था, परन्तु एकमात्र प्यारी लड़की को वह अपने से अलग नहीं कर सकते थे। अब इनके वहां पहुंचने पर उन को योग्य समझ उन्होंने प्रसन्नचित्त से अपनी लड़की को उन्हें सौंप दिया। पारवती को व्याहकर जीवनराम सूरत ही में रहने लगे। अपने पिता के पास रहकर और जीवनराम जैसे योग्य, रूपवान् और गुणवान् स्वामी को पाकर पारवती भी बड़े आनन्द से रहने लगी। और दिलोजान से पती की सेवा करने लगी। जीवनराम भी पारवती के प्रेम में पहिले का दुःख भूलगया। वृद्ध मानिकराम अपना मकान और दुकान अपने जामाता को सौंफ तीर्थयात्रा को चल दिया।

तीन मास के पश्चात् भरोंच से एक साहूकार सेठ मानिकचन्द के मकान पर आया पारवती ने उस का उचित आदर अभ्यर्थना की। भोजन करने के बाद साहूकारजी बात करने लगे, तब थोड़ी देर में जीवनराम को मालूम हुआ कि उस के ससुर ने बहुत दिन हुए कारोबार करने के लिये इस से पांचसौ रुपया उधार लिया था, वह रुपया अब व्याज सहित आठसौ होगया है, यदि अगहन के भीतर जीवनराम उसे न अदाकर सके तो उन पर नालिश होगी। और नालिश होने पर मकान और दुकान दोनों बचाने का कोई उपाय न रहेगा। लेकिन इन के पास एक पैसा भी नहीं था। साहूकारजी एक मास का समय देकर दूसरे तकाज़े को चलदिये।

जीवनराम ने रुपया जमा करने की बहुत कोशिश की पर कहीं से उन्हें एक पैसा भी न मिला। उन की दुश्चिन्ता का अन्त न रहा। स्वामी के मलिन और चिन्तित मुख को देख पारवती बहुत ही कातर हुई परन्तु कोई उपाय न था। एक दिन सन्ध्या के समय जीवनराम और पारवती दोनों मकान के बरामदे में बैठे हुए थे। नीचे नदी अपनी मीठी कलकलध्वनी करती हुई बह रही थी और उस के साथ इन दोनों ने भी अपनी चिन्ता को बहादिया था।

इतने में पोस्टमैन ने आकर "गुर्जर भास्कर" गुजराती का मासिकपत्र हाथ में दिया। अखबार के पहिले पृष्ठ पर मोटे २ अक्षरों में एक विज्ञापन छपा हुआ था:—

सरकारी ज़ाहिरनामा ।

एक हज़ार रुपये का इनाम ॥

" जो कोई प्रसिद्ध गुजराती डाकू लल्लू भाई गोराचन्द को गिरफ़तार करवादेगा यह रुपया इनाम दिया जावेगा ॥

इस के बाद लल्लू भाई का हुलिया दिया हुआ था । अख़बार में ऐसे विज्ञ प्रायः दीख पड़ते हैं लेकिन इतना अधिक रुपया इनाम बहुत कम सुनाई देता है । वनराम समझ गए कि लल्लू भाई ने इस बार कोई बड़ी डकैती की है ॥

जीवनराम ने लल्लू भाई का नाम कई बार सुना था । गुजरात में कौन ऐसा जो उसे नहीं पहिचानता था । दरिद्रों का बन्धु था और उस की डकैती से बहुत रिद्र प्रतिपालित होते थे, बहुत लोगों ने जाड़े में गर्म कपड़ा पाया, भूख में भोजन रुग्नावस्था में औषध पाई । दरिद्र लोग अन्तःकरण से उस की प्रशंसा करते यह ठीक नहीं कहा जा सकता कि लल्लू भाई के शत्रु अधिक थे या मित्र । पुलिस उसे पकड़ना तो दूर उस की गर्द को भी नहीं पहुंचती थी । यदि वह किसी से पूछ कि लल्लू भाई कहां है तो यही उत्तर मिलता था कि " दरिद्रों के हृदय में "

जीवनराम हंसे और कहा "पारवती हज़ार रुपया इनाम" । इस समय यह रु जितना मुझे दरकार है उतना किसी को भी नहीं, यदि यह रुपया मुझे मिलता" पारवती ने पूछा "किस वास्ते इनाम है" ? ॥

जीवनराम ने अख़बार पारवती के हाथ में देदिया ।

पारवती ने पहिला हिस्सा पढ़ कर कहा " लल्लू भाई डकैत के पकड़ने का नाम है" ऐसा इनाम चूल्हे में जाय, इसके लिये आपको कोशिश करने की ज़रूर नहीं ॥

पारवती फिर ज़ोर से पढ़ने लगी लल्लू भाई का बदन खूब गठीला और मज़बू है, लम्बाई में वह पांच फ़ीट दस इञ्च है, आंख बड़ी २ पुतलियां भूरी हैं । और बा हाथ की कलाई में एक कटने का चिन्ह है । यह सुन जीवनराम कांप उठे ।

पारवती यह देख अख़बार रखकर बोली " इस प्रकार कांप क्यों उठे ?

नजाने बहुत दिन की एक बात आज याद आगई यह क्या वही है ? नहीं २ मैं शायद पागल होगया। यह कभी नहीं हो सकता। यह अवश्य स्वप्न होगा॥

यह सुन कर पारवती को और आश्चर्य मालूम हुआ, वह घबड़ाकर पूंछने लगी "आप क्या कह रहे है ? क्या स्वप्न होगा ? क्या नहीं हो सकता ?" पारवती जो जीवनराम की पहिली जिन्दगी का कुछ हाल नहीं जानती थी, कुछ समझ न सकी और आश्चर्य में बैठी रही।

जीवनराम पगड़ी बांध बाहर निकले। पारवती ने पूछा "आठ बजे रात को कहां जाते हैं" ?

"अभी लौट आता हूं" कह कर जीवनराम चले गए।

पारवती बहुत देर तक बैठी सोचती रही "क्या मैंने कोई दोष किया है ? मुझ से क्यों वह बिगड़ गए ? शायद किसी आवश्यक कार्य्य से चले गए, इनाम की फिक से तो नहीं गए ? स्त्री को क्या कोई बात सुननेका अधिकार नहीं ? अच्छा इन्हें लौट आने दो मैं उनसे सब बातें पूछूंगी।

तब पारवती रोशनी के पास बैठ एक अंगा सीने लगी।

एक घंटे बाद ज़ोर से घर का दरवाज़ा खुल गया। पारवती ने डरकर देखा कि एक मोटा ताज़ा लम्बा आदमी मकान के अन्दर घुसा और दरवाज़े से लगकर खड़ा हो गया। उस के चेहरे से यह मालूम होता था कि बड़ी मेहनत के बाद वह यहां आकर आराम कर रहा है। उस की सांस बहुत फूल रही थी और दहने हाथ में एक तमंचा था। एक मिरज़ई पहिने था और बायां हाथ खून से बिल्कुल रंगा हुआ था। डरकर पारवती उठ खड़ी हुई।

दीवार पर एक तलवार लटक रही थी। इसके हाथ से अपने को बचाने के लिये उसने तलवार खींचनी चाही, पर उसे अच्छी तरह देखने से यह मालूम होगया कि वह आदमी उसे मारने नहीं आया है।

पारवती ने पूछा "तुम कौन हो ? तुम्हारे हाथ में यह क्या हुआ है ! कितना खून निकला है ! तुमको क्या अधिक चोट आई है ? लाओ मैं तुम्हारे हाथ में पट्टी बांध दूं"॥

यह कहकर पारवती ने अपना कोमल हाथ आगे बढ़ाया। उस मनुष्य ने पारवती के सर के निकट पिस्तौल लाकर कहा "दूर रहो" यदि हिली गोली मार दूंगा, औरतों की बराबर अकृतज्ञ और नीच जाति दुनियां में और नहीं है, मैं तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं करता ॥

"बदनसीब ! क्यां तुम्हारी मा औरत नहीं थी ?" यह कहकर पारवती आंखें फाड़ उसे देखने लगी। उसके मुख से और कुछ न निकला।

उस मनुष्यने पूछा " इस मकान में और कोई है ? " ।

पारवती—नहीं ।

मनुष्य—"इस मकान से बाहर निकलने का और कोई दरवाज़ा है ?" ।

पा०—"है—उस तरफ" ।

म०—" झूठ बात " ।

पारवती ने भौं सिकोड़ कर गुस्से से कहा "फिर जाओ; मरो !" ।

विश्वास न होने पर भी वह उसी तरफ़ गया ।

पारवती ने अपने स्वामी की तलवार खींचली और उसके पीछे जाने ही को थी कि बाहर से किसी के पैर की आवाज़ सुनाई दी ।

वह मनुष्य तुरन्त लौट आया और हलकी आवाज़ से पारवती से कहा "ख़बरदार दरवाज़ा मत खोलना। वे सब मेरे दुश्मन हैं और मुझे पकड़ने के लिये आ रहे हैं"

बाहर से दरवाज़ा पीटने की आवाज़ सुनाई दी ।

किसी ने ज़ोर से कहा "इस मकान के भीतर कोई मनुष्य आया है ?" ।

मनुष्य ने मीठी आवाज़ से पारवती को कहा ", जवाब मत देना, यदि यह खबर होगी कि कोई आया है तो तुम्हारा सर काट डालूंगा" ।

पारवती बोली " तुम्हारे ऐसे पापी की मैं सहायता करूंगी ? भले ही वह लोग दरवाज़ा तोड़ कर अन्दर घुस आवें ।

"मुझे बचाओ " उस मनुष्य की आवाज़ दर्द से भरी हुई थी ।

"अपना तमंचा मुझे दो." । उसने निरुपाय हो तमंचा पारवती को सौंप दिया।

दरवाज़े पर ज़ोर २ से आवाज़ होने लगी ।

पारवती तुरन्त उस मनुष्य को अपने शयनालय में लेगई और बिस्तर पर सुला
हों से ढांक कर बोली " तुम अपना तमंचा अपने ही पास रक्खो, कदाचित् इस
कोई आवश्यकता हो, तुम्हारी बातों पर मैं विश्वास करती हूं" ।

दरवाजे पर की आवाज़ और भी बढ़ने लगी ।

पारवती दरवाज़े के पास आकर बोली " इतनी रात गए कौन दरवाज़ा पीट रहा
, मैं औरत घर में अकेली हूं मैं किसी के लिये दरवाज़ा नहीं खोल सकती "

बाहर से उत्तर मिला " माई कोई डरकी बात नहीं हम लोग पुलीस के आदमी
, एक अपराधी इस मकान में आया है "

पारवती बोली " घर से मेरे स्वामी बाहर निकले हैं , दूसरे किसी का हाल मुझे
लूम नहीं "

"दरवाज़ा खोलो हम लोग तलाशी लेंगे "

पारवती ने दरवाज़ा खोल दिया दो सिपाही मकान के अन्दर आए और इधर
धर ढूंढा ।

आखिरकार एक ने पारवती के शयनालय में जाने की चेष्टा की ।

पारवती ने मुंह बनाकर कहा मैं बड़े घराने की औरत हूं क्या मैं किसी अपराधी
ो अपने शयनगृह में छिपा रक्खूंगी ? यदि कोई बुद्धिमान् सभ्य मनुष्य होता ऐसा
ख़याल तक न करता ।

सिपाही ब्राह्मण और बड़ी अवस्था का था उसने लज्जित होकर कहा " यह मैं
जानता हूं कि इस मकान में वह नहीं है , पर एक बार देखना उचित है" ।

बिना भीतर घुसे बाहर ही से झांककर सिपाही ने देखा , परन्तु धीमी रोशनी में
उसे कुछ भी दिखलाई न पड़ा ।

वृद्ध सिपाही ने आवाज़ दी " गणपतराव गलत मकान में आए , वह इस मका-
न में नहीं आया है " ।

दोनों सिपाहियों के चले जाने के बाद पारवती ने दरवाज़ा बन्द करदिया ।

तब वह मनुष्य कमरे से बाहर निकला उस के चेहरे पर उस वक्त डर का

निशान तक न था पर वह आंखें नीची कर खड़ा हो गया। पारवती के चेहरे की ओर देखने की भी शक्ति उस में न थी। कुछ देर बाद व्याकुल हो उसने पारवती को कहा " देवी! क्षमा करो " तुमसी परोपकारिणी, बुद्धिमती स्त्री मैंने अपने जीवन भर में नहीं देखी। किस प्रकार तुम्हें धन्यवाद दूं। मैं अपवादार्ह, कायर पुरुष हूं। इसीलिये पहिले तुम्हारा विश्वास नहीं किया। समाजच्युत, राज्यदण्ड से दण्डित एक हतभाग्य के लिये तुम अपने प्राण से अधिक मान को भी खोदेने को तय्यार हो गई थीं। तुम ने ऐसा क्यों किया? तुम तो जानती हो कि " पुलीस कभी भले आदमी के पीछे नहीं दौड़ती "।

पारवती हंसकर बोली " परमेश्वर तो कभी बदमाश को नहीं त्यागते। इन बातों को जाने दो तुम अपना हाथ इधर लाओ मैं पट्टी बांध दूं क्योंकि खून अधिक बहरहा है। यह मुझ से देखा नहीं जाता "।

" यह मैंने आज पहिली बार सुना कि मेरे कष्ट से पृथिवी में किसी को कष्ट होता है। मेरा हाथ तुम्हारे स्पर्श योग्य नहीं है "।

पारवती इस बात पर कान न दे एक टुकड़ा कपड़ा भिगोकर लाई। हाथ ज़ख़म को बांधने के लिये कलाई तक उसके अंगे की आस्तीन चढ़ाई। अब एक बात पारवती को याद आई। वह उस का हाथ छोड़ दो हाथ पीछे हट गई आश्चर्य से पूछा " क्या तुम लल्लू भाई डाकू तो नहीं हो? " तलवार तब वहीं पड़ा था।

पारवती उसे उठा उसके अनुकूल इस मनुष्य को जांचने लगी।

वह बोला " हां मैं लल्लू भाई हूं, देखता हूं तुम्हारे पास भी मेरा हुलिया पहुंचा है, यदि मेरा हाल तुम्हें पहिले से ज्ञात होता, तो शायद तुम मुझे घर में ठहरने भी न देती "॥

पारवती बोली "नहीं तुम चाहे कोई हो तुम्हारे बचाने के लिये अपना प्राण दे सकती थी। तुम्हारी बातों से, तुम्हारे व्यवहार से मुझे अपनापन की गन्ध आती है। लल्लू भाई इस प्रकार का आदमी होगा यह मैं कभी स्वप्न में भी ख्याल न करती थी"॥

लल्लूभाई के होठों पर हंसी दिखलाई दी. परन्तु वह हंसी निराशा और
हृदय की थी।

हंसकर लल्लूभाई बोला "मैं सदा से ऐसा नहीं था। एक दिन में आदमी
एक दिन मेरा हृदय पवित्र था, मेरा जीवनोद्देश्य बहुत ऊंचा था, मै अपना क
भलीभांति समझता था। उन बातों को याद करने से मेरा हृदय विदीर्ण होजाता
आज मै पशु के समान हू, मैं नहीं जानता क्यों ऐसा हुआ, परन्तु इतना अच्छीत
जानता हूं कि यदि तुम्हारी जैसी किसी देवी को अपने हृदय मे बैठा सकता तो मे
इतनी खराबी न होती"

पारवती की आंखें पानी से भर आई ठण्डी सांस भरकर बोली "तुम्हारी उम अभी
कम है, तुम अभी परिश्रम और यत्न कर सकते हो। किसी दूर देश को चले जाओ
और अच्छे कर्मों द्वारा अपने पापकर्मों का प्रायश्चित्त करो"।

पारवती पट्टी बांधकर बोली "तुम यहां और न ठहरो। मेरे पति अभी घर
लौटेंगे और मै नहीं चाहती कि वह तुम्हे देखें"।

लल्लूभाई ने पारवती की ओर देखा पर कुछ कहा नहीं।

पारवती उस नज़र को समझ गई और बोली "उनको क्रोध की बहुत नफ़रत
। यदि वह तुम्हें देख लेंगे तो अवश्य"—पारवती के मुंह से और वचन न निकले।

लल्लूभाई बोला "और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं; मैं सब समझगया।
तुम्हारे उपकार में यदि जीवन भी चलाजाय तो मुझे कुछ भी दुःख नहीं, परन्तु
अभी कुछ दिन जीने की इच्छा है। मैं अभी चला जाता हूं, लेकिन जाने से पहले
तुम्हारी कुछ याददाश्त चाहता हूं, जिससे मैं अपनी जीवनदायिनी को आजन्म याद
कर सकूं"।

पारवती बोली "मैं गरीब हूं, मेरे पास दामें कुछ भी नहीं है। अच्छा विवाह
समय मैने अपने पति को एक सोने की अंगूठी पहनाई थी उसी का जोड़ा"॥

यह कहकर पारवती ने सन्दूक से अंगूठी निकाल कर लल्लूभाई के हाथ में दी
अंगूठी हाथ में लेकर लल्लू भाई उसे देखने ही वाला उठा और
और देखने लगा।

अंगूठी के ऊपर जीवनराम का नाम खुदा हुआ था।

लल्लूभाई व्याकुल होकर बोला, "जल्दी अपने पति का नाम बताओ"।

"जीवनराम"।

"जीवनराम नाथूभाई" ?

"हां"

"यहां उनकी कोई तसवीर है" ?।

पारवती ने एक पुरानी तसवीर निकाल कर लल्लूभाई के हाथ में दी। तसवीर देखते ही वह ज़मीन पर बैठ गया और दोनों हाथों से अपना मुंह ढांप, भाई का नाम लेकर रोने लगा।

पारवती बहुत आश्चर्य में हो बोली "क्या तुम लल्लू भाई नहीं हो" । तुम्हारा भाई कौन है ? ।

"जीवनराम, मैं गोविन्दराम हूं"।

"गोविन्दराम तो बहुत दिन हुए जहाज़ में डूब करमर गया है"।

"यह गलत है उसने इतने दिन लल्लूभाई डाकू बनकर भीलों की सरदारी की। उसका तो मरना ही अच्छा था। तुम्हें रुपये की बहुत ज़रूरत है क्या" ?

"हां ! हम लोगों को रुपये की बहुत ज़रूरत है। यदि रुपया न मिला तो सब असबाब बेच डालना पड़ेगा। लेकिन तुम यह क्यों पूछ रहे हो ? तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है"।

गोविन्दराम ज़ोर से बोला "तुम को रुपया मिलेगा"।

पारवती गोविन्दराम की बातों को समझ गई और बोली "तुम्हारे जीवन को हानि पहुंचाकर हम रुपया नहीं चाहते, तुम जिस तरह आए हो उसी तरह चले जाओ। मैंने अपने जीवन में आज प्रथम बार तुम को देखा, तुम हमारे परम आत्मीय हो, पर तुम्हें रखने की शक्ति हम लोगों को नहीं है। बड़े ही कष्ट के साथ तुमको विदा देती हूं।

इतने में दरवाजा खोल कर जीवनराम घर के भीतर आए और देखा कि पारवती किसी के साथ बात चीत कर रही है। उसने आश्चर्य से पूछा "पारवती वह कौन है? किसके साथ तुम बात कर रही हो"?।

पारवती चुपचाप बैठी रही।

बड़े ही आश्चर्य से आँखें फाड़ जीवनराम आगे बढ़े और झट अपने भाई को पहिचान यह कहते हुए उसे लिपट गए "गोविन्दराम भाई! तुम इतने दिन तक कहाँ थे"?।

गोविन्दराम पीछे हट गया और कहा "मैं तुम्हारे छूने के योग्य नहीं हूं। मैं अब तुम्हारा भाई नहीं हूं। मैं दूसरे के माल को लूटनेवाला अपवित्र लल्लूभाई हूं, मैंने अभी सुना कि तुम बहुत कष्ट में पड़े हो। परन्तु इस देह को छोड़ मेरे पास और कोई सम्पत्ति नहीं है। तुम्हें याद होगा, एक दिन मैं तुम्हारा रुपया लेकर भागा था, वही रुपया तुम्हें मैं आज लौटा दूंगा [illegible] यही मेरा कर्तव्य भी है।

"भाई रुपये की मुझे कोई जरूरत नहीं है, बहुत दिनों के बाद आज तुम मिले हो और फिर उस तुच्छ रुपये का नाम लेकर क्यों मुझे कष्ट देते हो? मैंने तुम्हारा सब अपराध क्षमा कर दिया है"।

भ्रातृस्नेह से जीवनराम का हृदय भर गया लल्लूभाई बोला "मैं देवता और मनुष्यों का क्षमापात्र नहीं हूं। मैं स्वयम् अपनी सजा लेऊंगा" इतना कहकर गोविन्दराम ने झट तमंचा निकाल अपने गले में [illegible] मार ली।

"हैं, है, क्या किया, क्या किया" कहते हुए पारवती और जीवनराम दोनों गोविन्दराम की ओर दौड़े।

दोनों ने गोविन्दराम के प्राण शून्य और रक्त से भरे [illegible] को गोद में ले लिया। यह गोविन्दराम ने [illegible] पर [illegible] अपना जीवन दे दिया। ([illegible])

बुद्ध देव ।

(गतांक से आगे)

स्वीकार किया ॥

निवेदन ॥

"ललितविस्तार" और "धर्मपद" आदि ग्रन्थों में भगवान् बुद्ध का जीवन-चरित सविस्तर लिखा हुआ है। ललितविस्तार में आलेख है कि "गया शीर्ष" पर्वत पर बुद्धदेव ने निम्नोक्त ३ उपमाओं से ज्ञान प्राप्त किया "कोई मनुष्य आर्द्र अरणी और उत्तरारहणी को जल में रखकर मथे तो वह कभी भी अग्नि निकालने में समर्थ नहीं होसकता, इसी प्रकार विषयों को शरीर से त्यागन करदे और मनसे उन्हें न छोड़े तो कुछ लाभ नहीं, दूसरी उपमा यह कि आर्द्र. अरणी और उत्तरारणी को कोई स्थल पर लेकर मथै तो भी निष्प्रयोजन अर्थात् विषय भोग को बुरा जानले और तनु से नहीं त्यागे तो क्या अर्थ ? परन्तु तीसरी उपमा शुष्क अरणी और उत्तरार[illegible] को स्थल पर घिसने से ही कार्य्यसिद्धि होसकती है। अभिप्राय यह कि विषयों [illegible] तन और मन से परित्याग करने पर ही अभीष्ट फल की संप्राप्ति होती है।

ऐसी २ अनेक उत्तम कथाएं उक्त ग्रन्थो में लिखी हुई हैं। आजकल [illegible] मतवाले बुद्धदेव को नास्तिक मानते है परन्तु हमारी राय में उन का यह मान[illegible] निर्मूल है। स्वयम् भगवान् बुद्धदेव ने कामदेव के प्रति कहा है कि १०० यज्ञ कर[illegible] से मुझ को यह विभव प्राप्त हुआ है। भगवान् ने शाकी और पद्मादि ब्राह्मणियों [illegible] शिक्षा पाई मरणकाल लों वह कहते रहे कि मैं उसी धर्म्म का उपदेश करता हूं। जो धर्म्म ब्राह्मणों के वेद में लिखा हुआ है।

नहिं विधि का मैं लोपन हारा।
विधिपूरक उद्देश हमारा ॥

और यह भी उन्होंने स्पष्ट लिखदिया कि अहिंसक मरनेपर ब्रह्मलोक पाता है इतने पर भी कोई मतवाला ऐसे महात्मा को नास्तिकता का दूषण लगाये तो उ[illegible] अद्भुत ज्ञानी के लिये हम क्या कहें ? उनके कथन का भाव ऐसा है :—

नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में लाहौर की दोनों आर्य्यसमाजों के उत्सव बड़ी कृतकार्यता के साथ समाप्त हुए। बच्छोवाली समाज में श्रीमहात्मा मुन्शीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी का व्याख्यान "आर्य्यसमाज की वर्त्तमान दशा और हमारा कर्त्तव्य" विषय पर बड़ा सारगर्भित हुआ। इसी प्रकार अनारकली समाज में माननीय श्री ला० लाजपतिरायजी की वक्तृता "आत्मा का विकाश" विषय पर आर्य्य सेवकों के लिये बड़ी ही आवश्यक और उपयोगी थी। उपस्थित संख्या के खयाल से लाहौर आर्य्यसमाज का उत्सव एक मेला होगया है।

बच्छोवाली में लग भग १००००) और अनारकली में ४१०००) रु० विविधऽस्थापनाओं के निमित्त दान आया, युवक आर्य्य कानफ्रेंस भी साथ हुई।

शोक से लिखा जाता है कि श्रीमती महारानीजी जयपुर का ६ नवम्बर सन् १९०९ ई० को स्वर्गवास होगया। स्वर्गीया महारानीजी अपने दया, शीलादि गुणों के कारण जयपुर प्रजा द्वारा माता तुल्य पूजी जाती थी, अतएव आपका असमय वियोग प्रजावर्ग के लिये असह्य दुःख का कारण हुआ है।

स्वर्गवासिनी देवीजी प्रायः डेढ वर्ष से रोगग्रस्त रहती थी। आपके सम्बन्ध में भोज तथा दानादि हुआ वह जयपुर राज्य की शोभा के योग्य था। प्रायः २ लाख मनुष्यों को भोजन कराया गया। कई दिन तक बराबर जैपुर स्टेशन पर पहुंचनेवाली प्रत्येक गाड़ी के समस्त मुसाफिरों को एक थैली के अन्दर बन्द मिठाई बटती रही।

क्या किसी प्रकार हमारी यह आवाज श्री १०८ महाराजा साहिब जयपुर के कर्णगोचर हो सकती है, कि "प्रजानाथ! राजपूताने में अनावृष्टि इत्यादि के कारण आए दिन दुर्भिक्षों से पीड़ित अनेक निरपराध और अबोध आत्माएं रात्रिन्दिवस अन्न, वस्त्र के बिना तड़प २ कर दम तोड़ रही हैं, उनको प्राणदान देना श्रीमानों की नेक दृष्टि पर निर्भर है और यही स्वर्गीया श्रीमतीजी का शुभस्मारक हो सकता है"।

"धर्म्मएव हतो हन्ती" महर्षि मनु का वचन है कि "मारा हुआ धर्म्म मार डालता है आज कल जब कि वेदों की अनादि, निर्भ्रान्त और पवित्र शिक्षा पर चारों ओर से आक्रमण हो रहा है, प्रत्येक मनुष्य संशयात्मक रूप से उस के प्रचार में बाधा डालने के लिये उचित और अनुचित रीति पर प्रयत्नमान हैं तो हमारे सेवकों में एक आध की कमी भी अत्यन्त क्लेशित कर देती

आप इस कार्य्य के लिये नियुक्त किये गए थे। जिसको आपने पूर्ण रीत्या स
पूर्वक समाप्त किया।

इस खुशी में रीड क्रिश्चियन कालेज में एक जलसा हुआ जिसमें प्रथम घो
होदय ने लिपि लेखन विधि विषय पर एक वक्तृता दी तत्पश्चात् उक्त विधि विज्ञ
लोगों की (जिनको घोष महाशय सिखला चुके थे) परीक्षा हुई, उन्होंने १
में १०० शब्दों से भी अधिक शब्दों का लेख लिखा फिर एक का लिखा लेख
को इस अभिप्राय से दिया गया कि उसको सरल भाषा में लिखे। वह एक दू
लेख को बिलकुल शुद्ध २ लिख और पढ़ सके। उपस्थित संख्या में कितने ही
कारी अधिकारी गण उपस्थित थे जिन्होंने कालेज और विशेष कर घोष महाश
प्रति अपनी अतीव प्रसन्नता प्रकट की।

देखें देवनागरी भाषा भाषी कबतक इस सौभाग्य को प्राप्त करते हैं!

"दूध का जला छाछ को भी फूंक २ कर पीता है" इस जनश्रुति के अनुसार
इन आए दिन की खिचड़ी विवाहों को भी अपने लिये कल्याणकारी जानने में सं
मय ही रहते हैं।

गतांक में श्री वासुदेव भट्टाचार्य्यजी के विवाह का शुभ समाचार पाठकों को
करही चुके हैं आज एक दूसरे ऐसे ही विवाह का समाचार देते हैं जो कदाचि
भट्टाचार्य्यजी से भी पहिले पर बता चुके हैं।

आप का शुभ नाम साहिब ज़ादा नसीरअलीखां है, आपने एक यूरोपियन मह
लेडी से सम्बन्ध किया है। और विवाहोत्सव के समय पांच लाख ५०००००)
का आभूषण नवीन दुलहन को भेट किया है।

अंग्रेज जाति में यह बड़ा भारी गुण है कि वह किसी स्थान और किसी
हालत में हो आत्माभिमान, और देश हित को नहीं त्यागते। ऐसी अवस्था में
हिन्दुस्थानी युवकों का यूरोपियन महिलाओं से नाता जोड़ना और वह भी खास इंगलैंड
में रहकर उन के तन, मन, धन पर किस प्रकार का प्रभाव डालेगा, और यह
समुदाय भारत वर्ष के लिये कहांतक शुभकारी या अशुभकारी सिद्ध होगा।
विचार करने ही से भय मालूम होता है।

नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में लाहौर की दोनों आर्य्यसमाजों के उत्सव बड़ी सफलता के साथ समाप्त हुए। वच्छोवाली समाज में श्रीमहात्मा मुंशीरामजी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी का व्याख्यान "आर्यसमाज की वर्तमान दशा और हमारा कर्तव्य" विषय पर बड़ा सारगर्भित हुआ। इसी प्रकार अनारकली समाज में माननीय श्री ला० लाजपतिरायजी की वक्तृता "आत्मा का विकाश" विषय पर आर्य्य युवकों के लिये बड़ी ही आवश्यक और उपयोगी थी। उपस्थित संख्या के ख्याल से लाहौर आर्य्यसमाज का उत्सव एक मेला होगया है।

वच्छोवाली में लग भग १००००) और अनारकली में ४१०००) रु० विविधस्थापनाओं के निमित्त दान आया, युवक आर्य्य कानफ्रेंस भी साथ हुई।

शोक से लिखा जाता है कि श्रीमती महारानी जी जयपुर का ६ नवम्बर सन् १९०९ ई० को स्वर्गवास होगया। स्वर्गीया महारानीजी अपने दया, शीलादि गुणों के कारण जयपुर प्रजा द्वारा माता तुल्य पूजी जाती थी, अतएव आपका असमय वियोग प्रजावर्ग के लिये असह्य दुःख का कारण हुआ है।

स्वर्गवासिनी देवीजी प्रायः डेढ़ वर्ष से रोगग्रस्त रहती थीं। आपके सम्बन्ध में भोज तथा दानादि हुआ वह जयपुर राज्य की शोभा के योग्य था। [illegible] लाख ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। कई दिन तक बराबर जयपुर स्टेशन पर पहुंचनेवाली प्रत्येक गाड़ी के समस्त मुसाफिरों को एक थैली के अन्दर बन्द [illegible] बटती रही।

क्या किसी प्रकार हमारी यह आवाज़ श्री १०८ महाराज [illegible] जयपुर के कर्णगोचर हो सकती है, कि "प्रजानाथ! राजपूताने में अनावृष्टि [illegible] के कारण [illegible] दुर्भिक्षों से पीड़ित अनेक निरपराध और असहाय [illegible] [illegible] के बिना तड़प २ कर दम तोड़ रही हैं, उनके [illegible] दयादृष्टि पर निर्भर है और यही स्वर्गीया धर्मपत्नी [illegible] का [illegible]"।

"धर्म्मएव हतो हन्ती" महर्षि मनु का वचन है कि "[illegible] धर्म [illegible] मार डालता है आज कल जब कि वेदों की [illegible], निर्धन और [illegible] चारों ओर से आक्रमण हो रहा है, प्रत्येक मनुष्य [illegible] उन के [illegible] डालने के लिये उचित और अनुचित [illegible] कर [illegible] है [illegible] इन [illegible] में एक आप भी कभी भी आनन्द [illegible] कर देंगी ?

श्रीमान् ला० वज़ीरचन्दजी सम्पादक आर्यमुसाफिर जालन्धर ऐसे ही सेवकों में से एक थे। ओह !! आप १-१२-०९ को अपनी धर्मपत्नी तथा २ को निराधार छोड़कर असार संसार छोड़ गये। स्वर्गीय भाई ने जिस प्रकार वैदि की रक्षा के लिये अपने बल और सामर्थ्यसे बढ़कर काम किया है उस को सधर्मी और वि भली प्रकार जानते हैं। जब से होश सम्भाला और जबतक शरीर में प्राण रहे थक परिश्रम से अटूट सेवा करते रहे। आर्ययुवकों को स्वर्गवासी भाई के हृ से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

परमात्मा उनको सद्गति और उनके सम्बन्धियों को शान्ति प्रदान करे।

इसी प्रकार श्रीमान् रमेशचन्द्रदत्त महोदय की दुःखद मृत्यु भी ऐसी नहीं जिसे भारतवासी सुगमता से सहन कर सकें। वास्तव में आपकी मृत्यु से राजा और प्र का एक सच्चा हितैषी संसार से उठगया। परमात्मा मृतात्मा को स्वर्ग तथा उनके सम्ब न्धियों को शान्ति दे।

पंजाब के श्री लाट महोदय ने ११-१२ को लाहौर में प्रदर्शनी के आरम्भ त समय जो वक्तृता दी थी उसमें आपने पंजाब की नहरी उपज और उससे पंजाब प्र धनाढ्य होने का उचित परिणाम निकाला है। आपने हिन्दसों की संख्या देकर सिद्ध किया है कि "सन् १८६४ ई० में नहरों द्वारा एक करोड़ ग्यारा लाख हज़ार आठसौ चौदा (१११६८१४) मन अन्न उत्पन्न हुआ जो बढ़कर १२०८ में बारह करोड़ आठ लाख इकसठ हज़ार तीन सौ पैंतालीस (१२०८६१३४५) म तक पहुंच गया। इसी प्रकार उस की मालियत भी लगभग छः गुनी होगई", कि यह एक (मुइम्मा) है कि रुपये का मूल्य क्यों अधिक से अधिक ⅓ रह गया। (ग १) का २५ और ३० सेर से ८ और १० सेर ही रह गया है) वास्तव में कुछ लोग भले ही धनाढ्य होगए हों, किन्तु सर्वसाधारण अच्छी हालत में नहीं नज़र आते।

१५ नवम्बर १९०९ ई० से बंगाल में नवीन निर्वाचित कौन्सिलों का आरम्भ होगया। आशा है इनके द्वारा राजा और प्रजा के बीच विश्वास अधिक क़ायम होगा।

नामावली उन दानी महाशयों की कि जिन्होंने पं० गंगासहाय जी द्वारा दान दिया।

चांदकंचन सणौता(मेरठ)
चौधरी छीटन कहार ,, ,,
रामसहाय चमार ,, ,,
ला० इन्द्रमल गोकुलचन्द ,, ,,
,, रामस्वरूपजी ,, ,,
,, गोपीचंद की स्त्री ,, ,,
१ गिरह कम २ गज गवरून और भोजन सामान की साफी बनाई सणौता मेरठ
बलदेवसहाय की माता ३ गज गवरून ,,
,, बलदेवसहायकी स्त्री १ छोटीधोती
मु० दीवानसिंह कवाले नवीस फलावल
ला० अमीरसिंहजी ,, ,,
,, हजारीलालजी नगलाहेरू ,,
,, संगमलालजी नगलाहेरू ,,
,, बद्रीप्रसाद द्वारकाप्रसादजी ,, ,,
,, रघुनाथप्रसादजी ,, ,,
,, मादरसिंहजी ,, ,,
,, बद्रीप्रसादजी ,, ,,
,, कन्हैयालालजी ,, ,,
,, प्यारेलालजी ,, ,,
,, भिखारीलालजी ,, ,,
,, हीरालालजी ,, ,,

।) ला० बाबूलालजी नगला हेरू मेरठ
।।) ,, रामस्वरूपजी ,, ,,
१) ,, मुन्नालालजी प्रधान आ० स० ,,
१) ,, बनारसी सुनार ,, ,,
।) ,, प्यारेलाल मटीरा ,, ,,
=) ,, बनवारीलालजी ,, ,,
=) ,, रामचन्द्रजी ,, ,,
।।) ,, सागरमलजी ,, ,,
१) ,, मथुराप्रसादजी ,, ,,
१) ,, माता ला० द्वारकाप्रसाद ,, ,,
१) ,, ,, ,, बनारसीदास ,, ,,
१) धर्मपत्नीलाला दुर्गाप्रसाद स्वर्गवासी,,
१) ला० मुन्नालालजी प्रधान आ० स० की धर्मपत्नी कटोरा १ ,, ,,
।।) बीबी भगवती पुत्री ला० किशनलाल कटोरा १ ,, ,,
।।) ला० हीरालाल स्वर्गवासी की स्त्री ,,
।।) ,, बद्रीप्रसादजी की धर्मपत्नी,, ,,
।) ,, नारायणदासजी की स्त्री ,, ,,
।) ,, कुन्दनलालजी की स्त्री ,, ,,
।) ,, रामस्वरूपजी की माता ,, ,,
।।)। ,, मेवा ब्राह्मणी १ थाली १ लोटा ,,
।) पं० रामचन्द्रजी की नानी ,, ,,
।) ला० भिखारीलालजी की भगिनी,, ,,
=) ,, मादरसिंह की माता ,, ,,
=) ,, मादरसिंह की भावजी ,, ,,
=) भक्त चेता कबीरपंथी की स्त्री,, ,,

१) ला० उमरावसिंहकी पत्नी नगलाहेररूमेरठ
॥) ,, मक्खनलाल की पत्नी ,, ,,
॥) ,, मक्खनलाल की माता ,, ,,
॥) ,, बद्रीप्रसादजी की माता ,, ,,
=) ,, कुन्दनलाल की माता ,, ,,
॥) ,, संगमलाल की पत्नी मा० बाबूलाल
१) चौ० रणजीतसिंह नम्बरदार निलोहा
१) मु० चमनलालजी पटवारी मा० मंगलदेव अध्यापक आ० स० मवाना कलॉ ४ धोती ला० हरस्वरूपजी रईस मंत्री आ० स० ४ रजाई
२=) ला० त्रिवेणीसहायजी रईस तहसीलदार मा० ला० जानकीप्रसादजी रईस २ सेर गुड़, १ साफी, १ सेर चने की दाल ८ धड़ी गेहूं
१००) ला० हरस्वरूपजी रईस मंत्री आ० स द्वारा एकत्रित मेघराज भगवान दास रईस ५ धोती जोड़े
४) ,, चमनलालजी पटवारी ओगानपुर
१) ,, छंगामलजी ,,
१) ,, फूटेमलजी ,,
१) ,, जानकीप्रसाजी ,,
१) ,, गंगासहायजी ,,
१) ,, बद्रीलालजी ,,

१) ला० रामचंद्रजी ओगानपु
॥) ,, मंगूलालजी ,,
।) सेठ अज्जूमलजी ,,
।) ला० मुंशीलाल पान फरोश ,,
॥) पं० हरप्रसादजी ,,
॥) ला० ताराचंदजी सुनार ,,
१) पठान करामतखां जमींदार ,,
ला० बनारसीदास रईस मवनाकलॉ १३ कट्टे
॥) ,, ज्योतीप्रसाद अतार परिक्षत गढ़
५) पं० छुट्टनलालजी स्वामी मंत्री आ० स०
१) ला० रामविलास हरसरण गिदौरी
।) ,, बाबूरामजी ,,
२) ,, न्यादरसिंहजी पटवारी सन्हैड़ा
१) मा० कबूलसिंहजी मा० ला० न्यादरसिंहजी पटवारी
१) चौ० सुखदेव तगा नम्बरदार
१) ,, हरवंशसिंहजी मा० ला० न्यादरसिंहजी पटवारी
।) ला० कन्हैयालालजी ,,
१) चौ० खुशहालसिंहजी तगा ,,
।) ,, रामस्वरूपजी ,,
?) पं० श्रीरामजी मुदर्रिस
॥) पृथ्वीसिंहजी
२) मा० प्रभुस्वरूपजी सदर (उपनयन मे गुरु दक्षिणा)

२) ला० विश्वेश्वरदयालजी सदर मेरठ
(उपनयन में गुरुदक्षिणा) ,,
६) आर्य्यसमाज सदर मा० बा० पृथ्वी
सिंहजी मंत्री सदर ,,
॥) बा० भवानीप्रसादजी कन्या पाठशाला
सदर बाजार ,,
?) ,, भवानीप्रसादजी मंत्री कन्या पाठ-
शाला (अनाथरक्षक मध्ये पेशगीमूल ,,
॥) बा० जयलाल सार्टर देहली रेलवेस्टे-
शन मा० बा० प्रभूदयालजी ,,
१) ला० मञ्झरसिंहजी बड़ौत ,,
२) ,, बनवारीलालजी ,,
२) मुं० प्रेमसुखजी ,,
१) ला० रामजी लालजी आममुख्तार
?) प्रतिज्ञा ,,
१) ला० रामचंद्रजी मुनीम ,,
१) ,, दुलीचन्दजी सुनार ६) प्रतिज्ञा ,,
१) मुं० सरजीतसिंहजी ,,
॥) ला० गंगारामजी सुनार ,,
२) मुं० शिवचरणजी कानूगो ,,
१) ला० मूलचन्दजी सुनार ,,
१) बा० [illegible]लालजी सब पोस्टमास्टर ,,
१) ला० दीनदयालजी ,,
१) चौ० उमरावसिंहजी ,,
१०) चौ० दलीपसिंहजी ,,
१) मुं० बाकेलाल साहब जिलेदार ,,
१) चौ० रामसिंहजी ,,
१) चौ० हरचरणसिंहजी ,,

१) डा० राधिकानाथ वासो मेरठ
१) ला० बनारसीदास प्यारेलाल
ठेकेदार बड़ौत ,,
१) सेठ लक्ष्मीचन्दजी ,,
॥) पं० गोविन्दसहायजी ,,
१) ला० गोपीनाथजी इन्सपेक्टर टेक्स,,
२॥) डा० गंगाप्रसादजी होसपिटल-
असिस्टेन्ट ,,
४) चिरंजीवी प्रिय हीरालाल मा०
नन्दलालजी ,,
१५) प० मंसारामजी मैनेजर जिनिंग
फेक्टरी बड़ौत ,,
१) प० देवकीनन्दनजी ,,
८) ,, मंसारामजी मैनेजर जिनिंग
फेक्टरी द्वारा ,,
४) डा० [illegible] पोस्टमास्टर ,,
६॥) चौ० [illegible] सिंह व [illegible] द्वारा,,
?) डा० [illegible] असिस्टेन्ट
[illegible] ([illegible]) ,,
८) डा० [illegible]
[illegible] मेरठ
८१॥) [illegible]
[illegible] ,,
२) [illegible]
[illegible]
[illegible] ,,
१) [illegible]

१) ला० हरध्यानसिंहजी मिस्त्री कांधला
१) ,, रत्नलाल गोविन्द सहायजी ,,
२) ,, भगवतीप्रसादजी रईस ,,
२) ,, कल्याणसिंहजी ,,
२) ,, रामचन्द्रसहायजी ,,
१) ,, गोविन्दसहायजी चौकड़ात रत्नलालजी ,,
१) ,, कबूलसिंहजी ,,
१) डा० बनवारीलालजी ,,
१) ला० उदयरामजी रायज़ादे ,,
।) अमीरशाहजी फकीर ,,
१) ला० रामचन्द्र सहाय मक्खनलालजी चौकड़ात ,,
१) बा० प्रतापनारायनजी गिरदावरकानूगो
॥) पं० गोविन्दसहायजी ,,
॥) ला० अशरफीलाल पूरवती ,,
१) ,, मोहरसिंहजी ,,
१) ,, रामजीलाल घमंडीलालजी जैनी ,,
॥) ,, मुकन्दलालजी जैनी गद्दीदौलत ,,
।) अल्लादिया बढ़ई कांधला
१) ला० भिखारीलाल बनारसीदास रायज़ादे ,,
८) ला० प्यारेलालजी वैद्य ,,
१) ला० गोकलचन्द रामकरणदासजी ,,
१) ,, छुट्टनलाल मुरलीधरजी ,,
॥) ,, बिशम्भरसहाय घूमसिंहजी ,,

१) ला० बनवारीलालजी आढ़ती कांधला
१) ,, द्वारकादास रामप्रसादजी ,,
॥) ,, राजाराम नवलसिंहजी ,,
१) ,, रहतूलालजी गूदड़मलजी आढ़ती ,,
१) ,, मुरारीलालजी जैनी चौकड़ात ,,
१) ,, सुन्दरलाल गणपतरामजी ,,
॥) एक महाशय म्यूनीसिपल बोर्ड ,,
१) ला० मूलचन्दजी जैनी ,,
।) ,, सूरजमल साहब ,,
१) ,, मुंशीलाल चतुरसेनजी जैनी ,,
२) ,, प्यारेलालजी ,,
२) ,, केवलराम द्वारकादासजी आढ़ती ,,
॥) ला० सर्यूमल छोटनलालजी ,,
॥) ,, स्योराम सीताराम रईस जमींदार ,,
।) ,, ज्योतीप्रसाद प्रतापसिंहजी ,,
१) ,, उमरावसिंह नवलसिंहजी जैनी पंसारी ,,
२) ,, बैजनाथसहाय घूमसिंहजी ,,
॥) बा० भीमामल हरद्वारीलाल रायज़ादे ,,
१) ला० लक्ष्मणप्रसादजी हैडमास्टर ,,
२) ,, दयाकसिंह बहादुरसिंहजी रईस ,,
॥) बा० दातारामजी रायज़ादे सै० मा० ,,
१) पं० गोपीनाथजी भगीन ,,
१) ला० मंगलसेन मौरंगवाला ,,
१) ,, शिब्बनलाल जालीराम रईस ,,

१) ला० ज्वालाप्रसादजी सुनार नूंह
२) ,, चन्द्रभानजी जैनी ,,
१) ,, पूर्णचन्द बेटे गुलाबराय के सोहना
१) ,, भीमलजी ,,
गड्डरमल जी मा० रामचन्द्रजी
६ गज गबरून नूंह
५) ,, उमरावसिंहजी वल्द किशनलालजी
रईस घासेड़ा
१) कवलखां नम्बरदार ,,
१) इलाहीबक्स सूबेदार नम्बरदार
पेंशनर ,,
१) ला० रामप्रसादजी पटवारी ,,
।) मामचन्द डकौत ,,
।) ला० प्रभू गुलमी ,,
।) ,, नत्थनलाल भजनलालजी ,,
।) ,, कन्हैयालाल मूर्सिंहजी ,,
।) ,, थाना किशनसहायजी ,,
।) ,, हीरालाल मोहनलालजी ,,
।) ,, गणेशीलालजी ,,
१) ,, प्रेमराज फकीरचंद ,,
॥) ,, दीपचंद तुलारामजी ,,
।) ,, लेखा सुनार ,,
।) ,, शादीरामकुंजलालजी ,,
॥=) ,, उमरावसिंह रईस द्वाराबाजारमे ,,
रामदयालजी साहूकार पकवसा
मुहर्रिर रजिस्ट्री ,,
तुलारामजी ,,

१) ला० रामदयाल चिरंजीलालजी
वैश्य पलवल
१) ,, पूरणलाल बजाज ,,
१) मुं० हरप्रसादजी मोहर्रिरज्यूडिशियल,,
१) ला० रघुनाथ सहायजी नायब तहसी-
लदार ,,
।) इनायतउल्ला स्याहानवीस ,,
१) ला० कृपारामजी रईस मन्त्री मा० स० ,,
१) ,, पन्नीलालजी बजाज ,,
१) पं० विधूमलजी पटवारी
१) ला० भगवानदासजी लाइसन्सदार,
१) पं० चिरंजीलाल दयाकिशनजी पुजारी,
१) ला० सेवाराम कल्याणदासजी ,
१) मु० हरिलालजी हेडमास्टर मा० ला०
कृपारामजी रईस मन्त्री आ० स०,
।) ला० राधाकिशन दामोदरदास वैश्य,
=) दीपचंद म्यूनिसिपल कमिश्नर ,
।) मु० पन्नालालजी मास्टर ,
।) छाजूरामजी ,
=) मु० भूपसिंहजी ,
=) ला० गंगाप्रसादजी ,
=) अबदुलखां ,
।) विद्यार्थीगण स्कूल मा० ला० कृपा
रामजी मन्त्री आ० स० ,
॥) रतीरामजी बजाज ,
॥) रामचंद्रजी पंसारी पलवल
१) फकीरचंदजी होडल
॥) मु० शिवनारायनजी मदद मोहर्रिर
थाना बहीन

रामजीलालजी मोहरिर कमेटी ,,
: भजनलालजी वैश्य
· कृपारामजी मन्त्री ,,
० देवकरणजी जैनी बजाज ,,
रामजीलालजी . ,, ,,
, कालीचरणजी ,, ,,
दामोदरदास मैनेजर मुफस्सिलको ,,
कल्लूमलजी मुनीम ,,
नर्वदाप्रसादजी रेलवेस्टेशनमास्टर ,,
, मत्थमलजी महाजन ,,
भोलानाथजी भूतपूर्वप्रधान आ. स. ,,
रामस्वरूपजी वासिलवाकी निवास ,,
उमरावसिंहजी मोहरिर कमेटी ,,
· गोविन्दरायजी डिपटी मजिस्ट्रेट ,,
नहर आगरा
: विश्वम्भरस्वरूपजी सबपोस्ट ,,
मास्टर पलवल
मुरारीलालजी वैश्य ,,
सोहनलालजी ,,
आर्य्यसमाज मार्फतला० कृपारामजी ,,
रईस मन्त्री आ० स० ,,
धरी सिब्बनसिंहजी गूजर फतेपुरा
रोशनसिंहजी गूजर भरवौपुर

हरिस्त चंदा श्रीमद्दयानन्द
पालय अजमेर जो डेप्यूटेशन
त गंगासहायजी उपदेशक

अनाथालय को प्राप्त हुआ।

१) ला० श्रीरामजी वैश्य साकिन काकड़ा तहसील बुढ़ाना
१) महाशय रुड़ीमलजी मेम्बर आर्य्य-समाज कैराना
१) ,, प्यारेलालजी उपमंत्री आर्य्यसमाज कैराना
२) ,, नवलकिशोर साकिन बुढ़ाना
१) ,, आसारामजी सहायक समाज कैराना
१) ,, जीवनसिंहजी सभासद् ,, ,,
१) ,, जगन्नाथ वा भगवान वैश्य ,,
=) ,, चिरंजीवलाल ,,
१) ,, मुदर्रिसान वर्नाक्यूलर तहसीली स्कूल ,,
२) ,, मिट्ठनलालजी सभासद् समाज ,,
।) ,, होश्यारसिंह वैश्य ,,
१) ,, गोविन्दराम वैश्य ,,
।) पण्डित बद्रीदत्तजी ,,
।) ,, हरद्वारीदत्तजी ,,
।) म० बैणीमलजी वैश्य ,,
॥) ,, हरबंशलालजी सभासद् समाज ,,
॥) ,, बनारसीदास सहायक समाज व कैराना ?
।) ,, बैजनाथसहायजी सभासद् ,,
२) ,, बाबू कालकाप्रसादजी सेक्रेटरी मुंशी कैराना

।) मुन्शी रामचन्द्रदास कायस्थ की श्रीमती मांताजी
–) श्रीमती धर्मपत्नी मुन्शी प्यारेलाल मरहूम कायस्थ
१) धर्मपत्नी मुन्शी रामस्वरूपजी कायस्थ
१) पण्डित भगवानदासजी नकलनवीस तहसील
।) श्रीमती परमेश्वरीदेवी पुत्री मुन्शी अयोध्याप्रसाद कायस्थ
॥) श्रीमती ज्वालादेवी व वासदेवी पुत्री मुन्शी भूपसहाय कायस्थ
१) महाशय घासीराम मुख्तार बाबू विष्णुस्वरूप
१) पण्डित रघुनंदनलालजी शर्म्मा
॥) मुन्शी हरस्वरूप कायस्थ
२) धर्मपत्नी मुन्शी श्यामसुन्दरलालजी कायस्थ
॥) श्रीमती जुगनदेवी पुत्री मुन्शी कन्हैयालाल साहिब कायस्थ
॥) धर्मपत्नी मुन्शी भवानीप्रसाद कायस्थ
।) धर्मपत्नी मुन्शी श्रीकिशनदास मरहूम
१) मुन्शी श्रीनारायण साहिब कायस्थ
१) मुन्शी जयन्तीप्रसाद कम्पौण्डर कायस्थ
१) ,, जगनंदनलाल कायस्थ
॥) ,, कालीचरणसाहिब कायस्थ
।) बाबू ब्रजमोहनलालजी पुत्र मुन्शी रतनलाल कायस्थ
॥) मुन्शी बलदेवसहायजी कायस्थ
।) श्रीमती भोली पुत्री मुन्शी बलदेवसहाय
।) वासुदेववतेश्वरीसहाय पुत्र मुन्शी बलदेवसहाय कायस्थ
॥) माधोस्वरूप ब्रह्मस्वरूप पुत्र मुन्शी बलवन्तसहाय कायस्थ
१) लाला हरनारायणसहाय कायस्थ
१) लाला उमरावसिंह साहिब कायस्थ
॥) बाबू श्यामस्वरूप पुत्र मुन्शी राधेलाल साहिब कायस्थ
।) धर्मपत्नी मुन्शी राधेलालसाहिब कायस्थ
।) श्रीमती नेकी व नारायणदेवी पुत्री मुन्शी राधेलाल साहिब कायस्थ
।) श्रीमती रामदेवी पुत्री मुन्शी बनवारीलाल कायस्थ
।) उग्रसेन पुत्र मुन्शी मुकुंदलाल मोहर्रिर रजिस्ट्री
॥) धर्मपत्नी महाशय छोटनलालजी कायस्थ
।) लाला रामचन्द्रसहाय आढ़ती कैराना
।) लाला जैदयालमल वैश्य
॥) लाला मांगीलाल व मुन्शीलाल वैश्य
।) लाला दलीपसिंह आढ़ती कैराना
।) लाला निहालचंद वैश्य
२) लाला केवलरामजी वैश्य
–) श्रीमती माताजी लाला आसाराम वैश्य व अंगूठी चांदी की १. धोती १. तेल १.

१) म० चन्द्रप्रकाश व सत्यप्रकाश पुत्र पं० बनवारीलाल शर्मा
१) ,, हरनन्दलालजी उपप्रधान समाज कैराना
॥) ,, भजनलालजी व काशीनाथ ,,
१) डाक्टर मुरारीलाल साहिब हास पिटल असिस्टेंट कैराना
॥) महाशय प्यारेलाल वैश्य मोहर्रिर वकील कैराना
॥) ,, मक्खनलालजी कायस्थ
॥) ,, केशोसरूपजी कायस्थ
११) महाशय गुरुचरनदासजी वकील व मंत्री आर्य्यसमाज कैराना की पूजनीय माताजी १०) वास्ते मोल लेने एक गाय दूधार १) लोटा लेने के लिये
१) भगिनी महाशय गुरुचरनदासजी उक्त
१) धर्मपत्नी उक्त महाशय गुरुचरनदासजी
५) महाशय बाबूलालजी प्रधान आर्य्यसमाज कैराना
२) श्रीमती विशनदेवीजी पुत्री उक्त महाशय बाबूलालजी
१) ,, ज्ञानदेवी पुत्री महाशय उक्त बाबूलालजी
१) बाबू जियालालजी की तापस साहिबा
" महाशय मसरूलालजी की चची साहिबा
२) ,, गंगाप्रसादजी वर्मा
१) मुन्शी रामसरूप व जुध्या अयोध्या प्रसाद कायस्थ
१) मुन्शी बलवंतसहाय कायस्थ
२) बाबू हरसरूपजी आनरेरी मजिस्ट्रेट कैराना
२) मुन्शी जगतनरायणजी कायस्थ
१) मुन्शी मुकुन्दलाल मोहर्रिर रजिस्ट्री
१) ,, वेणीप्रसादजी मोहर्रिर ,,
१) बाबू बालासहाय साहिब इन्सपेक्टर आबकारी
३) व दो वासकट मुन्शी रामचन्द्रसहाय मोहर्रिर इजराय डिग्री मुन्सफ़ी कैराना
१) हाजीरहमतुल्ला कैराना
१) मुन्शी राधेलाल कायस्थ
१) मास्टर नंदामलजी साहिब
२) मुन्शी झंडूसिंह अमीन सभासद आर्य्यसमाज कैराना
।) धर्मपत्नी मुंशी रामचन्द्रसहायजी कायस्थ
।) ला० परमानन्दजी
१) धर्मपत्नी मुं० मिट्ठनलालाजी सभासद
॥) श्रीमती द्रौपदी देवीपुत्री उक्त महाशय मिट्ठनलालजी
।) श्रीमती बसन्ती देवी पुत्री उक्त महाशय मिट्ठनलालजी

।) मुन्शी रामचन्द्रदास कायस्थ की श्रीमती माताजी

=) श्रीमती धर्मपत्नी मुन्शी प्यारेलाल मरहूम कायस्थ

१) धर्मपत्नी मुन्शी रामस्वरूपजी कायस्थ

१) पण्डित भगवानदासजी नकलनवीस तहसील

।) श्रीमती परमेश्वरीदेवी पुत्री मुन्शी अयोध्याप्रसाद कायस्थ

॥) श्रीमती ज्वालादेवी व वासदेवी पुत्री मुन्शी भूपसहाय कायस्थ

१) महाशय घासीराम मुख्तार बाबू विष्णुस्वरूप

१) पण्डित रघुनंदनलालजी शर्मा

॥) मुन्शी हरस्वरूप कायस्थ

२) धर्मपत्नी मुन्शी श्यामसुन्दरलालजी कायस्थ

॥) श्रीमती सुगनीदेवी पुत्री मुन्शी कन्हैयालाल साहिब कायस्थ

॥) धर्मपत्नी मुन्शी भवानीप्रसाद कायस्थ

।) धर्मपत्नी मुन्शी श्रीकिशनदास मरहूम

१) मुन्शी श्रीनारायण साहिब कायस्थ

१) मुन्शी जयन्तीप्रसाद कम्पौण्डर कायस्थ

१) ,, जगचंदनलाल कायस्थ

॥) ,, कालीचरणसाहिब कायस्थ

।) बाबू ब्रजमोहनलालजी पुत्र मुन्शी रतनलाल कायस्थ

॥) मुन्शी बल्देवसहायजी कायस्थ

।) श्रीमती भोली पुत्री मुन्शी बल्देवसहाय

।) वासुदेववतेश्वरीसहाय पुत्र मुन्शी बलदेवसहाय कायस्थ

॥) माधोस्वरूप ब्रह्मस्वरूप पुत्र मुन्शी बलवन्तसहाय कायस्थ

१) लाला हरनारायणसहाय कायस्थ

१) लाला उमरावसिंह साहिब कायस्थ

॥) बाबू श्यामस्वरूप पुत्र मुन्शी राधेलाल साहिब कायस्थ

।) धर्मपत्नी मुन्शी राधेलालसाहिब कायस्थ

।) श्रीमती नेकी व नारायणदेवी पुत्री मुन्शी राधेलाल साहिब कायस्थ

।) श्रीमती रामदेवी पुत्री मुन्शी बनवारी लाल कायस्थ

।) उग्रसेन पुत्र मुन्शी मुकुंदलाल मोहर्रिर रजिस्ट्री

॥) धर्मपत्नी महाशय छोटनलालजी कायस्थ

।) लाला रामचन्द्रसहाय आढ़ती कैराना

।) लाला जैदयालमल वैश्य

॥) लाला मांगीलाल व मुन्शीलाल वैश्य

।) लाला दलीपसिंह आढ़ती कैराना

।) लाला निहालचंद वैश्य

२) लाला केवलरामजी वैश्य

–) श्रीमती माताजी लाला आसाराम वैश्य व अंगूठी चांदी की १. पोथी १. तेल १.

।) श्रीमती माताजी लाला बनारसीदास
वैश्य अंगूठी चांदी की १–
–) श्रीमती माताजी रामेश्वचन्द
श्रीमती माताजी लाला होशयारसिंह
वैश्य तेल १. गुदन २. ओढ़नी २
श्रीमती सुखमादेवी माताजी ओढ़ना १
लाला मुकुन्दलाल वैश्य अंगा १. पाजामा १.
–) श्रीमती माताजी मुरारीलाल वैश्य
लाला मुख्त्यारसिंह वैश्य कोट १.
)। धर्मपत्नी गेंदामल सुनार
लाला होशयारसिंह वैश्य अंगरखा १.

चन्दा चाकसू ।

५) पं० रामकुवारजी तहसीलदार चाकसू
२) मुं० हजारीलालजी आफीसर पुलीस ,,
४) ला० जमनालालजी दारोगा राहदारी ,,
२) मुं०वृद्धिचन्दजी मुहरिर ज्यूडिशियल ,,
१) ला० वृद्धिचन्दजी नवीसिन्दा ,,
१) मुं० रूपनारायणजी मुहरिर कलेक्टरी ,,
२) ला० भोलारामजी खजांची ,,
१) मुं० श्यामबिहारीलालजी नवीसिंदा ,,
२) ला० गंगाप्रसादजी नवीसिंदा राहदारी ,,
४) चौधारियान कोठरी चौधरीजी ,,
१) ,, ,, राव जी ,,
–) कानूगोयान ,,
) मुं० प्यारेलालजी जयपुरी ,,
) पुरोहित जमनालालजी खबरनवीस ,,

१) पं० रामचन्द्रजी हैडमास्टर ,,
२) मंगल पटैल नगूनी ,,
४) पटैल पटवारियान कस्बा ,,
२) ला० चांदूलालजी मूल
१०–) ला० बद्रीलालजी घीया चाकसू
०) ला० विलासजी बजाज ,,
४) ,, गेंदीलालजी ,,
२) मुं० प्यारेलालजी कानूगा
१) ला० जीवनलालजी चौधरी
१) ला० चांदूलालजी
८) ला० गेंदीलालजी चायती
४) ,, नारायणजी मोटा
१) पटैल मौजे मोरा
२) ,, ,, को
१) ,, ,, लद
१) ,, ,, नगि
१) ,, ,, ऊंच का खे
१) भण्डारीजी चा
१) मुं० इकरामुद्दीनजी मुहरिरपुलिस
१) म० राजूरामजी पटवारी भ
१) ,, सुन्दरलालजी उम्मेदवार चा
१) पं० गोविन्दरामजी व्यास
।) मुं० जयनारायणजी जैल
।।) " नन्दकिशोरजी कलाल
१=)डा०अयोध्याप्रसादजी वादा ८।।।)
१२।।।–) डा० नन्दकिशोरजी

दादा धारम्भ ॥

१—पं० रामकृष्णजी, मदर्सेन्दस ८) रु.
२—मुं० हजारीलालजी बा० पु० २) "
३—श्रीमान् धर्मचन्द्रजी लश्कर निवासी १०० वर्टीरे पेनन के सब बनो की
४—डा. सर्वेज्ञानम्दजी हा० प्र.८॥।-)

नामावली उनदानी महाशयों की कि जिन्होंने बा० रामचन्द्रजी डिस्ट्रिक्ट मैनेजर्स आफिस जोधपुर के द्वारा सहायता दी ॥

१॥।) बा० विशम्भरनाथजी
१॥।) ,, वासदेवसहायजी
२॥) ,, रामचन्द्रजी
१॥-) बा० देवदत्तजी
१) ,, मानदीनजी
१) ,, सोनारामजी
॥=) ,, गिरधारीलालजी
॥।-)॥,, केशवदेवजी
॥।) ,, छोटमलजी
।=) ,, श्रीवल्लभजी
।≡) ,, नन्दलालजी
।≡) ,, साहिब दयालजी
।≡) ,, दीवानचन्दजी
।≈) ,, चुन्नीलालजी
।) ,, बृजमोहनस्वरूपजी
।) ,, उमरावसिंहजी
।-)॥ फुटकर

नामावली उन दानी महाशयों की कि जिन्होंने बा० लाल बिहारीजी क्लर्क लोकोशाप द्वारा चन्दे से सहायता दी ॥

	जुलाई	अगस्त	सितम्बर से नवम्बर तक
बा० रणजीतसिंहजी	।)	।)	०
,, नवलकिशोरजी	≈)	≈)	।≈)
,, ईश्वरी प्रसादजी	≈)	≈)	०
,, जगन्नाथजी	-)	-)	≡)
,, माधोप्रसादजी	-)	-)	≡)
,, हरदेवलालजी	-)	-)	०
,, मनीलाल गोपालजी	-)	०	।)
,, रामदयालजी	।)	।)	।≈)

१) गुलाबरायजी वर्म्मा महू
५) नन्हूसरनूजी कथू शिमलाके
५) जस्सारामजी खाती आ० स० सरसा
६।।।=) बा. साधूरामजी सबओवरसिअर
५) सुघरसिंहजी जमादार मदेला
२॥) सन्तरामजी महल्ला कोहलुरियावाला स्यालकोट
१५) गोविन्दरामजी मेहरचन्दजी वैश्य कलकत्ता
१) तिलोकचंदजी सोरदा करियागई बदायूं
३) बा. जयदेवसिंहजी विद्यार्थी हाईस्कूल मैनपुरी
५०) पं. गंगासहायजी उपदेशक दया. अना. के द्वारा
॥) ला० छेकसा मेरापार कोट
१) भारगलजी गूजर छातडी (अजमेर)
१) बा.रणजीतसिंहजी कहार हमल्ला अजमेर
।) हरीदासजी कबीरपंथी केसरपुरा
१०) पं.कामताप्रसादजी सुपरवाईजर झेलम एन० डबल्यू० रेल्वे
१) मानिकचंदजी पुराना किल्ला दिल्ली
१) रामप्रसाद गिरधारीलालजी रस्तौगी झांझर जि० बुलन्दशहर
२) मुकन्दलालजी गुप्त मीरपुर निवासी डा० खा० गुरजा जि० बुलन्दशहर

२) बुद्धासिंहजी अर्जी नवीस तहसीलशुजा जि० शाहपुर
१०) श्यामनारायनजी सरदार सदर ब
१०) दुर्गाप्रसादजी आर० वी० के
६।।।=) हीरानन्द ओझा कोषाध्यक्ष समाज मुलतान
२५) जसवन्तसिंहजी गोसिया कास
५) धर्मपत्नी बिहारीलाल प्यारेलाल गोटावाला की चांदनीचौक बाजार
१०) गुर्गीबाईजी मार्फत पं० रामप्र पोस्टल नसीराबाद
१०) अमरचंद कुबेरचंदजी इंजि उ
१=) किसनलालजी लोधा हिन्दी हैडम पेन्शनर पीपलया
१।=) बसन्तीदेवी पुत्री महाशय चां लजी बाकीनवीस कैराना जि० फ्फर
१) रत्नारामजी दूकानदार बोसतान बिलोचि
।।।≡) मेहरचंदजी बाजार. नौरा
१०) ला० प्यारेलालजी अ
१) रूपचंदजी मा० शिवसहाय मूलचं गोल्डन टेम्पल अमृत
१) बनारसीदासजी टिकट कलक्टर अली

:) किशनलालजी खलासी लैन कानपुर (अनाथरक्षक मध्ये)

) जमनाप्रसादजी लाहौर

:) बा० अम्बाशंकरजी डिस्पेंसरी कच्छभुज

.०) टेकचंदजी मंत्री आ० स० सूतापट्टी कलकत्ता

:) सूरजभानजी मुख्तार एटा

१०) गिरधारीलालजी ठेकेदार शिव्बो (बर्म्मा)

:) बा० रामलालजी रेलवेक्लर्क नीमच

:) हरवंसलालजी जिलेदार महकमा नहर नवाबगंज बरेली

१) सेठ रतनलालजी सेपानी मंदसौर

१) अम्बाशंकरजी वैद्य कच्छभुज

१) मा० लक्ष्मीनारायनजी सिकन्दराराऊ

१=) जमनादासजी प्रधान आ०स०जसपुर

६) शिवरामदासजी डांगा अमृतसर

१।-) श्री अमरसिंहजी चीफ आफ नामली (मालवा) गणेश का मार्गव्यय

५) ला० हरकरणदासजी नगीना (बिजनौर)

१) बा० गुरादत्तजी सब ओवरसियर आगरा

५) शीतलप्रसादजी मुजफ्फर नगर

१) जगदीशसहायजी माथुरा मैजिस्ट्रेट प्रतापगढ़ (मालवा)

१०) बिन्दुलालजी अग्रवाल पुलगांव सी० पी०

१) मिस्त्री मंगुलालजी रेलवेवर्क शाप जोधपुर

२६॥=) पं० गंगासहायजी शर्म्मा उपदेशक दया० अना०के द्वारा

४॥।=) श्रीमती सरस्वतीदेवीजी अधिष्ठात्री कन्या पाठशाला मा० गोबर्धनप्रसादजी देहरादून

१०) बा० गदाधरसिंहजी साहब की माता हरदोई

२) पं० शंकरदत्तजी शर्म्मा पानसेमल (खानदेश) डाक खेतिया

६२॥=) पं० गंगासहायजी उपदेशक दया० अना० के द्वारा

१०) उलफतसिंहजी तुर्प नं० २ अम्बाला छावनी

१००) माईकोरांपत्नी बा० बालमुकन्द साहब महल्ला रामपुरा पेशावर

२) ठा० कुन्दनसिंहजी मोहर्रिर चुंगी रुड़की

१) ला० गोरीदयालजी सराय जवाहरपुर एटा

५) हरवंशलालजी वल्द बा० हरगुलालजी दुकानदार ला० नाथूराम हरनरायनदासजी हिसार

१) ला० बंशीधरजी सुनार "गोल्डस्मिथ"

५) बंशीधरजी मोटिया डा० बिसोली

१) गुलाबरायजी बर्म्मा मह

२) पं० मर्घाभाई दादाभाईजी चिखोदरा आनन्द

भाग ८ अंक ३

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का मासिक पत्र

ॐ

जनवरी १९१० ईस्वी

अनाथरक्षक ॥

तातः को जननी च का हितरताः के वाथवा वान्धवाः ।
किं वासो भुवनञ्च किं, किमशनं, किं वारि, वातश्च कः ॥
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते ! त्वन्नाम जानीमहे ।
हा हा नाथ ! अनाथरक्षक ! सदा नः पाहि पाहि प्रभो !!!

पं० गिरिधर शर्म्मा (झालरापाटन)

१०) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवामें १ वर्ष तथा १००) एकवार देनेवाले महाशयों की सेवा में ५ वर्ष तक पत्र मुफ्त भेजा जायगा ।

अनाथालयसभा ने पं० जयदेव शर्म्मा द्वारा सम्पादन करा पण्डित हरिश्चन्द्र मैनेजर वैदिक यन्त्रालय अजमेर से छपाया ।

न हों और न लज्जास्पद गीत गावें। क्षत्रिय कुल की मर्यादा का ध्यान रक्खा जावे।

३—गोरक्षा हमारा धर्म है। गोपाल की उपाधि को दृष्टिगत न कर किसी गो-भक्षक के हाथ कोई जानवर न बेचा जावे यदि कोई इसके विपरीत करेगा तो पं-चायत द्वारा दण्डित होगा, गङ्गा स्नान के अतिरिक्त जो धन उसने इस प्रकार प्राप्त किया होगा वह गोशाला को देना होगा।

४—हमारे कई भाइयों के उद्योग से क्षत्रिय गूजर महासभा स्थापित होगई है जिसकी कानफ्रेंस होली के पश्चात् नौचन्दी के मेले पर मेरठ में होनी निश्चित हुई है और जिसकी रिपोर्ट भी प्राप्त हुई है। उनके साथ सहानुभूति करके उन के उत्साह को बढ़ाया जावे और अपने कार्य को विस्तृत किया जावे।

पाठक महोदय! हमारा तो निश्चय ही है कि यदि सादा जीवन व्यतीत करने वाले निष्कपट, शुद्ध हृदय और पुरुषार्थी कृषकजनों को किसी प्रकार अनाथरक्षक की महानता का विश्वास दिलाया जासके क्योंकि उनको अखबारी जगत् से कम संसर्ग होता है तो हिन्दू जाति की यह दिनों दिन की घटती और उसके कारण ... धर्म पर नित नए ... आज रुक जाएं। अनगिनत आर्य ... जो केवल पेटभर रोटी न पाने

से ही ईसाई और मुसलमान बन ... हैं क्यों बने यह बात विशेषण होगी ... अब इस प्रकार के समय में धर्म शि... से कोई व्यक्ति वैदिकधर्म के मुकाबले किसी भी अन्य मत को स्वीकार कर ... यह असम्भव है। वह समय गया ... मद्य और शिवादि की दन्तकथा ... कर वैदिक फिलासोफी से शून्य युवकों ... धोखा दिया जासक्ता था।

हमें आशा है क्षत्रिय गूजर ... अजमेर का अनुकरण करती हुई ... कृषिप्रिय जातीय सभाएं दीनोद्धार ... अत्यावश्यक कार्य्य को शीघ्र हाथ में लेंगी।

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर
की
मासिक रिपोर्ट
बाबत मास नवम्बर,
दिसम्बर सं० १९०६ ई०

अक्टूबर सन् १९०९ ई० के अन्त ... ७६ लड़के ३१ लड़कियां अनाथालय ... उपस्थित थीं नवम्बर दिसम्बर में ५ लड़के और १ लड़की नवीन प्रविष्ट हुई और ... लड़कियां २ या ३ मासकी मृत्यु का ग्रास बनीं। दिसम्बर के अन्त या जनवरी १९१० के आदि में अनाथालय में ८... लड़के और २९ लड़कियां कुल ११... बच्चे उपस्थित थे।

वाचकवृन्द ! जिस समय २०-२५ दिन की गुलाब का फूल जैसी होनहार बालिका पर दृष्टि पड़ी हृदय भर आया, किन्तु "हाय निष्ठुरता" उसकी युवती माता बहुतेरा समझाने पर भी उसे रखने या कुछ दिन अनाथालय में रहकर उसे दूध पिलाने को भी तैय्यार नहीं होती। अधिकारियों की उलझन का अन्दाज़ा लगालीजिये। एक तरफ़ वह मुलायम अछूता खिली हुई कली का जैसा निर्दोष चेहरा और दूसरी ओर अनेक प्रयत्न करने पर भी मातृवत् पालना करनेवाली स्त्रियों (धायों) का न मिल सकना। बालिका आगई। अनाथालय में मौजूद है और ज्यूं त्यूं इस समय तक उसकी पालना होरही है ॥

किन्तु आप कारण की खोज करें एक महाशय भारतमित्र में लिखते हैं कि "मेरे एक मित्रने विहार के एक ग्राम में सायंकाल एक वृक्ष के नीचे एक अत्यन्त सुशील तथा हिन्दी अंगरेज़ी और उर्दू पढ़ी लड़की को देखा था कुतूहलवश उसको उस जगह एक कम्बल से बदन ढांके पागल की तरह देखकर वे उसके पास गए और उससे पूछा कि 'तुम कौन हो'? उसने कहा कि 'मै ब्राह्मणी हूं' मेरे पिता युक्तप्रान्त के एक ज़िले में रहते है; उनका नाम मैं न लूंगी, हालां कि [illegible] मुझे घर से बाहर चले जाने की अनुमति देकर अपने घर की कीर्ति स्थिर रखने की कोशिश की है। मैं [illegible]रेज़ी, थोड़ीसी, उर्दू और हि[illegible] अच्छी तरह से जानती हूं। बड़े यत्न[illegible] मैने शिक्षा पाई थी और बड़े लाड़ [illegible] के साथ पाली गई थी, पर इस स[illegible] सब मिट्टी है। मैं लड़कपन में विध[illegible] होगई थी। कुछ दिनों तक लोगों ने मु[illegible] पर बड़ी दया दिखलाई, पीछे न मालू[illegible] क्या हुआ कि घर की औरतों ने मेरी त[illegible]रफ़ से आंख मोड़ली और पास के मर्दों[illegible] बहकाना आरम्भ किया। अपनी कमज़ो[illegible] कबूल करूंगी, मैं कई दुष्ट पर बाहरी दृष्टि[illegible] प्रतिष्ठित और अपने खास रिश्तेदारोंके धोखे[illegible] आगई। मेरे बापने इस बात को सुना और मु[illegible]झको एकान्त में बुलाकर कहा कि "तूं मेरे घ[illegible] से चली जा" मुझको कुछ रुपये दिये औ[illegible] रोकर मुझ से विदा मांगी, मैं अपने को भ्रष्ट[illegible] करना नहीं चाहती थी मुझको कुछ बो[illegible] होगया था, पर घर के भीतर मेरा रहन[illegible] पिताजी नहीं चाहते थे, इसलिये गांव के बाहर[illegible] जाकर सोचने लगी। इतने में एक प्रतिष्ठित, विद्वान् और (जैसा मालूम था) विचारवान सज्जन ने आकर मुझ को अपना आश्रय स्थान देने का वचन दिया और धार्मिक उपदेशों से वे मेरे मन में तोष भरने लगे जब मेरा विश्वास उन पर कुछ जम गया तब वे एक दिन मेरे साथ इस प्रतिज्ञा पर कुमार्गगामी हुए कि वे मुझे कभी नहीं त्यागेंगे। पर यह प्रतिज्ञा दूसरे [illegible]

पाठकवृन्द ! जिस समय २०-२५ दिन की गुलाब का फूल जैसी होनहार बालिका पर दृष्टि पड़ी हृदय भर आया, किन्तु "हाय निठुरता" उसकी युवती माता बहुतेरा समझाने पर भी उसे रखने या कुछ दिन अनाथालय में रहकर उसे दूध पिलाने को भी तैय्यार नहीं होती । अधिकारियों की उलझन का अन्दाजा लगाईजिये । एक तरफ यह गुलाबगन अछूता खिली हुई कली का जैसा निर्दोष चेहरा और दूसरी ओर अनेक प्रयत्न करने पर भी मातृवत् पालना करनेवाली स्त्रियों (धायों) का न मिल सकना । बालिका आगई । अनाथालय में मौजूद है और ज्यूं त्यूं इस समय तक उसकी पालना होरही है ॥

किन्तु आप कारण की खोज करें एक महाशय भारतमित्र में लिखते हैं कि "मेरे एक मित्रने बिहार के एक ग्राम में सायंकाल एक वृक्ष के नीचे एक अत्यन्त सुशील तथा हिन्दी अंग्रेज़ी और उर्दू पढ़ी लड़की को देखा था कुतूहलवश उसको उस जगह एक कम्बल से बदन ढांके पागल की तरह देखकर वे उसके पास गए और उससे पूछा कि 'तुम कौन हो' ? उसने कहा कि 'मैं ब्रह्मणी हूं' मेरे पिता युक्तप्रान्त के एक ज़िले में रहते हैं; उनका नाम मैं न लूंगी, हालां कि उन्होंने मुझे घर से बाहर चले जाने की अनुमति देकर अपने घर की कीर्ति को स्थिर रखने की कोशिश की है । मैं अंग्रेज़ी, थोड़ीसी, उर्दू और हिन्दी अच्छी तरह से जानती हूं । बड़े यत्न से मैंने शिक्षा पाई थी और बड़े लाड़ प्यार के साथ पाली गई थी, पर इस समय सब मिट्टी है । मैं लड़कपन में विधवा होगई थी । कुछ दिनों तक लोगों ने मुझ पर बड़ी दया दिखलाई, पीछे न मालूम क्या हुआ कि घर की औरतों ने मेरी तरफ से आंख मोड़ली और पास के मर्दों ने बहकाना आरम्भ किया । अपनी कमज़ोरी क़बूल करूंगी, मैं कई दुष्ट पर बाहरी दृष्टि में प्रतिष्ठित और अपने खास रिश्तेदारों के धोके में आगई । मेरे बापने इस बात को सुना और मुझको एकान्त में बुलाकर कहा कि "तू मेरे घर से चली जा" मुझको कुछ रुपये दिये और रोकर मुझ से विदा मांगी, मैं अपने को अलग करना नहीं चाहती थी, मुझको कुछ बोध होगया था, पर घर के भीतर मेरा रहना पिताजी नहीं चाहते थे, इसलिये गांव के बाहर जाकर सोचने लगी । इतने में एक प्रतिष्ठित, विद्वान् और (जैसा मालूम था) विचारवान सज्जन ने आकर मुझ को अपना आश्रय स्थान देने का वचन दिया और धार्मिक उपदेशों से वे मेरे मन में तोष भरने लगे जब मेरा विश्वास उन पर कुछ जम गया तब वे एक दिन मेरे साथ इस प्रतिज्ञा पर कुमार्गगामी हुए कि वे मुझे कभी नहीं त्यागेंगे । पर यह प्रतिज्ञा दूसरे ही

कि दानी का दान के लिये सुसंग वर्णन करना मानही उसके फल को नष्ट करने-वाला समझा जाता था । दहने हाथ के दान को बांए हाथ को भी सुनना न होना दातृत्व का आदर्श था । ऐसे दानशील, महानुभावों से यह आशा रखना कि वह अपने दान की रसीद के लिये प्रतीक्षा करेंगे उचित नहीं जचता । किन्तु समय मजबूर करता है कि हम अपने पाठकों तथा सहायकजनों से निवेदन करदें कि यदि उनके भेजे हुए दान की रसीद न पहुंचे, और ना ही अनाथरक्षक में उनका दिया हुआ दान प्रकाशित हो (क्योंकि अनाथ-रक्षक का वह अंक जिसमें वह दान प्रकाशित होता है, प्रत्येक दानी की सेवामें भेजा जाता है) तो अवश्य मन्त्रीजी अनाथालय से उसके विषय में पत्रद्वारा मालूम करें । ताकि दान का यश पूरा होसके ॥

समालोचना ॥

निम्नलिखित तीन पुस्तकें श्रीयुक्त सेठ मांगीलालजी नीमच निवासी ने समालोचनार्थ भेजी हैं ॥

१–आर्य्यसमाज के दश नियमों पर व्याख्यान ॥

...त के अन्दर क्या है. उसके ...ही प्रकट है । वास्तव में आर्य्य-...के नियमों को समझा देना ही ऐसा उपदेश है जो समझनेवालों को आर्य्यसमाज में सम्मिलित होने के लिये विवश करता है, अतएव उनकी ...सी मनोहर और सरल व्याख्या ...ही उपयोगी है । सेठजी ने इस ...वाले लघु पुस्तक को प्रकाशित ... इसमें अच्छी सहायता दी है ॥ ... पुस्तक पर नहीं लिखा ॥

२–आर्य्यसमाज क्या मानता और क्या नहीं मानता ॥

इस ११ पृष्ठ की पुस्तक में (टैल पेजके अतिरिक्त) महर्षि श्री स्वामी दयानन्दजी महाराज द्वारा विर... "आर्य्योद्देश्य रत्नमाला" की शैलीपर धाराओं में आर्य्यसमाज के मन्तव्य अमन्तव्य का वर्णन किया है । पाठक उसका अवलोकन निष्पक्ष भा... करेंगे तो उक्त समाज सम्बन्धी ... निर्मूल शंकाओं की निवृत्ति हो जावेगी ॥ मूल्य ≈) है ॥

३–दानचन्द्रिका ॥

उक्त सेठ श्री मांगीलाल जी द्वारा सम्पादित तथा श्री शिवसहाय जी गुप्त नीमचनिवासी द्वारा प्रकाशित इस पञ्च-पत्री को आप रचयिता से बिना मूल्य मंगा सकते हैं । इसमें दान विषय के उत्तम उत्तम २१ श्लोक दोहे और कवित संग्रह किये गए हैं जो बालकों को कण्ठ

करा दान की महिमा को उनके हृदय में अङ्कित कराने का सरल उपाय है हम अनाथरक्षक के पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह उक्त तीनों पुस्तकों के रचयिता से बनजारकर्मा छावनी नीमच के पते पर अवश्य मंगाकर देखें ।

४–श्री वीर संवत २४३६–३७
विक्रमीय संवत् १९६७ का
भावीफल ॥

प्रतापगढ़ निवासी श्री जवाहिरलालजी जैनी विरचित अङ्गरेजी आकार के १६ पृष्ठ पर उक्त वर्षफल प्रकाशित हुआ है। प्रकाशक की सम्मति में फलित ज्योतिष के आधार पर यह वर्ष अत्यन्तही भयानक और उपद्रवी है । हमारी सम्मति में यदि प्रकाशक महाशय भावीफल प्रकाशण की अपेक्षा (जिसका निर्बल आत्माओं पर अच्छा प्रभाव नहीं होगा) कभी वर्त्तमान संशोधन पर लेखनी उठाते तो अत्यन्त लाभकारी होता । वर्षफल डाक्व्यय नव-संवदनी चुन्नीलाल प्रतापगढ़ (मालवा) आधा आने में मिल सकेगा ।

५–महाविद्यालय का हस्त-पुस्तक ॥

यह २२ पृष्ठ की पुस्तक (गुरुकुल) महाविद्यालय ज्वालापुर यू० पी० के मंत्री श्री मन् पं० नरसिंहजी शर्मा की ओर से प्रकाशित हुई है । पुस्तक के १२ पृष्ठों पर उक्त पण्डित जी का लिखा हुआ प-रहस्य उपोद्घात है जिसमें शिक्षा की आवश्यकता, उसकी प्राप्ति के साधन, ब्रह्मचर्य्याश्रमों की विशेषता आदि अनेक उपयोगी बातों पर उल्लेख किया गया है शेषभाग में उक्त महाविद्यालय के पाठक्रम का वर्णन किया गया है । जिससे ज्ञात होता है कि १२ वर्ष की अवस्था तक बालक उसमें लिये जा सकते हैं । शुल्क (फीस) किसी से नहीं लिया जाता ।

देश को उन्नत दशा में देखने के इच्छुकों को ऐसे विद्यालयों की सहायता करना अवश्य चाहिये ।

समाचार और टिप्पणी ॥

उलटी चाल–क्या जानें भारत-वर्ष के दुर्दिन कब फिरेंगे ? और कब इस के निवासी अपने कर्तव्याकर्तव्य पर विचार पूर्वक ध्यान देना सीखेंगे ? इस समय तो जो कुछ चंद अदूरदर्शी नवयुवकों के अंधे आवेग से हो रहा है, उससे यही प्रतीत होता है कि भारत वर्ष अपनी सद्गति को सैकड़ों वर्ष पीछे टाल रहा है ओह ! ! भारतवर्ष जिसका (कि हो) आदर्श ही "अहिंसा परमो धर्मः" था । जो "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" का अनुगामी था उसके लिये मनुष्य हत्या प्रिय होजाय । जो पशुपक्षी को छेदन वृक्षादि के काटने में भी पाप बुद्धि रखने

जाति के आघात की चेष्टा करें ! ! कैसी उलटी चाल है ! विलायत के कर्जन वायली, नासिक के सर्वप्रिय मेजिस्ट्रेट मि० जेक्सन तथा दिन धाड़े ऐन कलकत्ते की अदालत के मैदान में शम्सुलआलम इन्स्पेक्टर पुलिस की हत्या इस बात का दृढ़ प्रमाण है कि कुछ वाचबुद्धि नवयुवकों के मस्तिष्क में अवश्य बिगाड़ हो गया है और वह अन्य देशों की विद्रोह उत्पादक महाभयंकर पोलीसी से बहककर अपने देश के उच्च आदर्श से गिरगये हैं।

हमें डर है कि यदि देश ने अपनी पूर्ण शक्ति से इस नाशकारी चाल को पलटा न दिया या दुर्भाग्यवश न देसका तो इसका परिणाम देश के लिये बड़ा ही भयंकर होगा। परमात्मा इन सरफिरों को सुसम्मति दे कि ये अपनी और विशेष कर देश की गौरव हानिका कारण न बनें।

सोच विचार कर कीजिये—कलकत्ते के सत्यसनातनधर्मी ने सैकड़े के तीन चौथाई से अधिक नाम ऐसी स्त्रियों के प्रकाशित किये हैं जिन को श्रीसनातनधर्म सभा कलकत्ते ने अपने किसी विशेष अधिवेशन में उन के कुव्यवहारों के कारण जातिच्युत करने का दण्ड दिया है। श्रीसनातनधर्मसभा कलकत्ते की यह दृढ़ता तथा धर्मानुराग प्रशंसनीय है। किन्तु हम नम्रतापूर्वक उक्त सभा के सदस्यों से पूछेंगे कि क्या उन्होंने कभी विचार किया है कि मनुष्य जाति की सरमौर अत्यन्त गौरवान्वित सर्वत्र पूज्य ब्राह्मण वर्ण में इन देवियों के एक दम आचार भ्रष्ट होने का कारण क्या है!

क्या कह सकते हैं कि कोई अकेली स्त्री आचारभ्रष्ट हो सकती है! आप को मालूम नहीं ? कि दुराचारी से दुराचारिणी स्त्री भी पुरुष को फिर का कारण बहुत कम होसकती है। इस से अप्रकट है कि इन देवियों की प्रतिष्ठा का (जो आप के इस प्रकार से हुई है) भांडा भी आप के ही किसी भाइयों के सर से फूटा है ! फिर आप बतलाएं कि उन कुसंस्कारी दुराचारी पुरुषों के साथ आप की सभा ने कैसा बर्ताव किया ! क्या दण्ड दिया !

भाइयो ! यदि आपने कारण के बिना किये बिना ही उक्त कार्य किया है तो समझ लीजिये कि आप से बड़ी भूल हुई गई। क्योंकि यदि उक्त संख्या अब तक संदिग्धावस्था में थी तो आप प्रकटता से जाति और धर्म के नाशवाद का कारण बनेंगी, और दुर्व्यसनी आदमी आर्य कुटिल नीति का शिकार आप पवित्रात्माओं को बना ही लेंगे।

॥) ला० मादरमल रामचन्द्रजी
=) हरदेवसहायजी
॥) केदारनाथजी

।) ला० रामशरणलालजी हापड़
॥) ला० मुसद्दीलालजी वृन्दावनजी
२॥) मोहनलालजी खत्री दल्लाल देहली

(चंदा पांच मास का)

१) बुलाकीदासजी पहाड़ीसदर देहली
१) चौ० बुधसिंहजी सबजीमंडी देहली
=) बा० जादोनारायणजी पोस्टमैन
१) चौ० बुधसिंहजी सबजीमंडी द्वारा देहली

द्वारा पण्डित गंगारामजी उपदेशक दयानन्द अनाथालय अजमेर।

फ़रीदाबाद ॥

३) ला० मानसिंहजी राधास्वामी
२) ला० श्रीकृष्णदासजी पेन्शनर
१) ला० बंशीलालजी
॥) पं० जयदयालसिंहजी गौड़ पटवारी
१) ला० ठाकुरदासजी हेडमास्टर
१) पं० भिक्खीमलजी
१) दीवान ललताप्रसादजी
२) प्रधान पं० कृष्णदत्तजी
१) नित्यकिशोरजी
।) नत्थनलालजी मोहर्रिर कचहरी
॥) मोहनलालजी

॥) भूलनसिंहजी
२) डाक्टर चिरंजीलालजी
॥) शेख अब्दुलगनीजी कम्पाउण्डर
॥) पं० जयदयालसिंहजी गौड़ पटवारी
॥) ला० शिवसहाय हलवाई
।) ला० बिहारीलालजी पेंशनर
।) बा० गुलाबरायजी आगरा
१) पं० जगतस्वरूपजी मा० डा० चिरंजीलालजी
१) ला० दक्षिणीरामजी
१०) रामरक्खामलजी मोहनलालजी कारखाना मिल रुई

बल्लभगढ़ ॥

२) काशीनाथजी स्टेशनमास्टर
१) ला० डालचंद चिरंजीलालजी रईस
२) भवानीदास नैनसुखदासजी
१) चिरंजीलालजी
१) रूपसिंह बल्लीमलजी
॥) श्यामलालजी वैश्य
२) रामकिशनदासजी नाजर
१) चौ० बुद्धसिंहजी चपडासी
१) ला० बनवारीलालजी पटवारी
१) भिक्खीमल किशनलालजी
१) बा० शिवलालजी सब पोस्टमास्टर
५) पं० भोलानाथजी रईस
१) चौ० हरलालसिंहजी पटवारी
॥) ला० फकीरचंदजी

१) मुं० मोहनचन्द्र ... गिरदावर कानूनगो
१) ला० तोताराम बेतनादजी पटवारी
॥) प्रसादीलालजी
।) पं० रामचन्द्रजी
।) चौ० राजारामजी
।) पं० रामजीवन पटवारी
।) ,, तुलसीरामजी पटवारी
।) ,, मंगतरामजी ,,
।) ला० मुरारीलालजी ,,
।) ,, कुंजबिहारी गुप्त
।) ,, जवाहरलालजी
।) पं० भजनलालजी
।) ला० तुलारामजी
=) ,, सरदारसिंहजी मोहर्रिर
=) मुं० सुदर्शनपाल सराय रुहेल्ला
१) भूपसिंहजी खजानची बल्लभगढ़
१) चौ० रामकिशनदासजी स्याहनवीस ,,
१) मौलवी निजामुद्दीन वासिलबाकीनवीस ,,
॥) ला० गौरीशंकरजी नकलनवीस ,,
॥) ,, लिखीसिंहजी मोहर्रिर कमेटी
१) पं० जगन्नाथजी अर्जीनवीस ,,
१) ला० चन्दामलजी वैश्य
१) ,, भूपसिंहजी खजानची
द्वारा घसीटा नम्बरदार गोछी

८) ला० जगदीशजी
१०) ,, तुलारामजी मोतीरामजी
२) पं० राजारामजी नायब तहसीलदार
२) बा० ज्ञानचंदजी हास्पीटल अ. र.
१) ला० शिवसहायजी
=) मुसद्दी मोतीलालजी द्वारा
१३॥।) अमला सन्दोवस्त देहली
मा. ला. गणेशदासजी गिरदावर कानूनगो
।) बा० जयलाल सोर्टर मा० बा०
प्रभुदयाल मेल एजेण्ट देहली
१) पं० जयनारायनजी मा० बा० नवल
किशोर उ० मन्त्री आ० स० देहली
४) ला० मुरलीधर शंकरदास कसेरे
चावड़ी बाजार (मासिक चंदा) देहली
॥) ला० बिहारीलाल घासीराम मुरब्बेवाले,,
८) राजनारायणजी मा० विष्णुनारायणजी
चांदीवाले दरिया (मासिक) ,,
२) ला० देवकरणदास रामविलास
नयाकटड़ा देहली
४॥) ला० गोपीचन्दजी किशनचंदजी मा०
ला० मुरारीलालजी हाफिजखां का
फाटिक मा० चंदामध्ये ९ मास का

१) ला० गोपीचंदजी किशनचंदजी मा० मुदरामलजी
१) पं० बालकिशनदासजी मैनेजर परोकार कम्पनी
२) ला० शम्भूनाथजी के पुत्र ला० काशीनाथजी दलाल खारीबावड़ी मा० चंदा
५) शंकरलालाजी गोटेवाले चांदनीचौक
।) जादोनरायनजी मा० बा० कृपारामजी वेक्सीनेटर
२) पूरणचंदजी कागदानी वाले
२) पं० वांकेरायजी महामहोपाध्याय
२) ला० गंगाराम जगनादासजी बेगम की सराय
प्यारेलालजी गोटेवाले ३ रजाइयां अनाथों को दी
१) बा० मिट्ठनलालजी वकील अजमेर (मासिक चन्दा)
३।-) ला० लालबिहारीलालजी क्लर्क कोषागार अजमेर के द्वारा कई एक महाशयों के (मासिक चन्दा मध्ये)

२) रामचन्द्रजी शंकरपुर डाकखाना के घाट जिला उन्नाव
२) कुन्दनलालजी मुजफ्फरनगर
१) शिवचरनदासजी सबडिविज़नल क्लर्क पाकर ई. आई. आर. के द्वारा मु० दया० भवन
८) ला० विशम्भरनाथजी बी. ए. एल० बी वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद (मासिक चन्दा मध्ये)
।) गोरधनजी मदारगेट अजमेर (मासिक चन्दा मध्ये)
२) श्यामलालजी मिस्तरी और उनके साथी सहित जिला धारवाड़ द्वारा जयदेवजी
२) सेक्रेटरी आ० स० पुरैनी नगीना जिला बिजनौर
३) दीवानसिंहजी ज्युडिशियल मोहर्रिर जानसठ जि० मुजफ्फरनगर
१) उमरावसिंहजी वासिल बाकीनवीस जानसठ जि० मुजफ्फरनगर

आ० समाज रावलपिण्डी के प्रस्ताव ।

पटियाला स्टेट में आर्यपुरुषों के अभियोग की पैरवी करते हुए जो मि० ग्रे स्टेट-कौन्सिल ने आर्यसमाज पर राज्य-विद्रोही समाज होने का दोष लगाया है उस के विपरीत निम्नलिखित ४ प्रस्ताव आ० समाज रावलपिण्डी ने हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजे हैं ॥

RESOLVED-

That this Arya Samaj places it on record that the insinuations and accusations embodied in the criminal complaint, Crown *vs.* Jowala Pershad and others, filed at Patiala, and in the opening speech of Mr. Grey, the Counsel for the prosecution in that case, against the Arya Samaj in general and the founder of the Arya Samaj in particular, are entirely baseless and untrue. The Society was neither founded, nor ever engaged, nor was it ever conducted for the purposes of any political propaganda, nor for the object of spreading disloyalty and disaffection in British India and the Native States, as is alleged. On the other hand, the Arya Samaj, which has always consisted of the loyal subjects of the British Crown, was founded and has existed and has been managed and conducted solely for the carrying on of Religious and Social Reform throughout this country and elsewhere.

2 That a copy of this resolution be submitted to the Local Government through the Deputy Commissioner of the District.

3. That copies of the resolution be submitted to Shrimati Arya Sarvadeshak Sabha (All India Aryan League), Shrimati Propkarni Sabha, Shrimati Arya Pratinidhi Sabha Punjab and Pratinidhi Sabhas (Provincial Representative bodies of the Arya Samaj) and leading Arya Samajes throughout India and elsewhere.

4. That copies of the resolution be circulated widely and published in the leading newspapers of this country and Great Britain for general information.

आवश्यकीय निवेदन ॥

[illegible]

उनके मान्य ग्रन्थों तथा व्यक्तियों के विषय में तनिक भी विरुद्ध बोलना प्राणदण्ड का कारण समझा जाता था। यवनमत की वृद्धि का साधन खड्ग और प्राणरक्षा का उपाय एकमात्र "ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मदर्रसूलिल्लाह" कहना ही था, खिष्टी मतानुयाई ईसाई पादरियों की चित्ताकर्षक नर्म पालिसी से (जिसका सम्बन्ध अधिकतर पेट से है) आर्य्यसन्तान धड़ाधड़ वेदों के शान्तिदायक, अतिपवित्र उपदेशों से विमुख हो "ईसामसीह मेरे प्राण बचय्या" कहते हुए ईसाई मत की दीक्षा लेरहे हैं। और जो कार्य्य यवनों का अत्यन्त तीव्र खड्ग बड़ी कठिनाइयों से भी यथारुचि सम्पादन न करसका उसको ईसाई पादरियों की पालिसी सहज में पूर्ण कर रही है।

वैदिक मर्य्यादा के नष्टप्राय: होजाने के पश्चात् आचार व्यवहारों की निर्बलताद्वारा अङ्कित कुसंस्कारों से मलिन आत्माओं की विशुद्धयर्थ प्रत्येक जातीयसभ्य प्रयत्नवान है, किन्तु जो नवजात बालक अपनी रक्षा के योग्य नहीं, जिनकी रक्षा के साधन एक दम नष्टभ्रष्ट होगए हैं, और जिनको मातृवत् प्रेमपूरित गोद तथा छाती की आवश्यकता है, उनकी दुःखमयी व्यथा को दूर करने के निमित्त अवश्य ही इस प्रकार की स्थापनाएं आ[वश्यकीय हैं।]

कुछ सन्देह नहीं कि वर्तमान स[...]नाओं द्वारा सहस्रों क्या, लाखों ब[...] पालित पोषित होचुके और होरहे हैं, किन्तु हमारे विचार में इन अनाथालय[...] संसार के लिये और भी अधिक उप[...] बनाया जासकता है, यदि उनके संच[...] मिलकर काम करने का उद्योग करें।

हमने सन् १९०७ ई० में गुज[...]रात की ओर दौरा करते हुए अहमदा[बाद में] मि० दयाशंकर, लालशंकरजी भूतपूर्व [...] से भेंट की जो वहां के हिन्दु अनाथा[लय] के "जिसका नाम हम भूलते हैं" प्रबन्ध[क] [थे।] हमने अपना विचार उनसे प्रकट किया[...] क्या अच्छा हो जो श्रीमद्दयानन्द अन[ा]थालय अजमेर तथा आपका अनाथा[लय] मिलकर कार्य्य करें? आपने लिखा ए[...] दो बातों के "जैसे-नाम एक नहीं [हो] सकता क्योंकि दोनों ही दो विशेष व्यक्ति[यों] के स्मारकरूप हैं इत्यादि और सब बातों [को] अच्छा समझा था।

हम चाहते हैं कि अनाथरक्षा से प्रेम रखनेवाले महाशय अपने विचार [इस] विषय में प्रकट करें कि किस प्रकार [...] करने से अन्योन्य अनाथालय एक मार्ग पर चलाए जासकते हैं।

यदि कोई महाशय अपने विचार भेजेंगे तो पत्र (अनाथरक्षक) में प्रकाशित करदिये जावेंगे।

[illegible] कुर्ते १ कन्टोप्ट्न को दिलाई जाने वाले दीवान भैरोंलालजी

हरिशंकरजी रविशंकरजी. टी.एन. इन्दौर अजमेर कुर्ते नग ५, कुरता पुराना १ छोटे बच्चों को खरबूजा नग १२

फतैयालाल अनाथ द० अनाथालय अजमेर खरबूजा ।)५

मा० कन्हैयालालजी बी० ए० केसरगंज अजमेर (चिरायता ॥) का दवाखाने के निमित्त

मन्त्री लाला जगन्नाथजी मंत्री आर्य्यसमाज कोट भाना जिला गुरदासपुर लुगाई बच्चे की १ कुरता गोटेदार १

कप्तानसाहब माधोप्रसादजी अजमेर खरबूजा नग ८

नथमलजी साहब नियाड़ी अजमेर खरबूजे १) के

गौरीशंकरजी बैरिस्टर ऐट्ला अजमेर खरबूजा नग ०६

सेठ लदूरामजी ठेकेदार अजमेर खरबूजा ।।ऽ ५

द्वारा सम्पूर्णलालजी गुप्त इन्दौर लँहगे २ सूती रेशमी ओढ़नी २ कुड़ती रेशमी १ ... १ कुड़ती १ मोजे जोड़ी ८॥ कांचली रेशमी १ कमरपन १ साबुन की टिकिया १ पेचक १० गट्टी ४ कुकड़ी १ परदे ८ सूत की १ बेल रेशमी १० गज ... कलाबत्तू की ८ गज

धर्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ३-दाल ऽ।– नाज ऽ॥।≡

हरिशंकर रविशंकरजी मदारगेट अजमेर जलेबी नग १६ छुंवारा नग १८

जयनाथजी अटल रैवन्यू आफीसर जयपुर आम नग १२० दाम ३॥।) का दूध ... १॥≡) का योग ५।≡)

मिट्ठनलालजी प्रधान दया० अना० अजमेर नाज गेहूं ऽ१ जो १॥।ऽ॥ चणे ॥।ऽ१

श्रीमती रानी साहिबा लवान गेहूं मण-५ऽ६

बा० हरनारायणजी मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर धोती छोटी लालकोर की १ कपड़ा हलका नैनसुख का गज २ टोपी १ सफेद

बा० मुन्नालालजी की माता केसरगंज अजमेर खरबूजे नग ११

बा० रामलालजी अजमेर खरबूजे नग २७ तौल में ।ऽ१

कोठारी जगन्नाथजी दया० अनाथालय अजमेर बैंगन की टोकरी १ कीमत ॥) की

बा० चुन्नीलालजी केसरगंज अजमेर खरबूजे ७

बा० माधोप्रसादजी अफसर जंगलात अजमेर खरबूजे नग ४ केले नग ४ गुड़ ऽ≡

फाफड़ी की फांक ३ खिजूर के पंले नग ३ दूसरी दफे खरबूजे ६ नमक ऽ४॥ गु

लक्ष्मीनारायणजी उर्फ मार्फत मांगीलालजी राजपूताना प्रिन्टिंग वर्क्स

टोपी २ बनियान १ छोटे बच्चों के लायक −) की जलेबी ऽ=

रविशंकरजी हरिशंकरजी डी. एच. ब्रादर्स कम्पनी मदारगेट अजमेर खजू

११ खजूर के पंले नग ४ थोले नग ४ पेड़ा कलाकंद ऽ‑॥

धर्मचंदजी सुपुत्र बा० पद्मचंदजी के अजमेर खरबूजे ६

बा० मथुराप्रसादजी केसरगंज अजमेर गूंदे ।ऽ४ सेर

बा० माधोप्रसादजी अफसर जंगलात अजमेर खरबूजे नग ७ केले ५ अ

घी पैसे भर चावल ऽ। दाल ऽ= गुड की डली पैसे भर

ला० रामप्रतापजी घेदेलालजी मदारदरवाज़ा अजमेर १० अनाथों को भोज

कोठ्यारी जगन्नाथ दया० अनाथालय अजमेर शकर ऽ३ कीमत ।।) की

जुहारी बाई लेडी सुपरिन्टेन्डेन्ट दया० अना० अजमेर खरबूजे १॥ऽ कीमत

सेठ लादूरामजी साहब केसरगंज अजमेर ८ अनाथों को भोजन कराया

„　　„　　„　　„ खरबूजे नग १४५

धर्मादा रविवार अजमेर आटा ।ऽ८ दाल ऽ। धाणी ऽ२

मास्टर ज्वालाप्रसादजी की माता केसरगंज अजमेर बेलन पुराने २ रई

की पुरानी १, बाल्टी फूटी १, कुल्हाड़ी टूटी १ गंडासी टूटी १ हतोड़े पुराने १

लोह काटने की ३ चूला लोहे का १ पुराना, चलनी पुरानी तार की १, चि

दातली शाग काटने की पुरानी २

मास्टर ज्वालाप्रसादजी की माता केसरगंज अजमेर अनाथ बच्चों की प्रिय

सभा को आलमारी १ मुगदर जोड़ी १ बांस पोलजम खेलने का १ अंगरेज़ी

तावें पुरानी ३३ उर्दू की किताबें पुरानी ८ पाटी १ और रामभरोसे अनाथ को

किताबें २ अंगरेज़ी की पुरानी.

मास्टर ज्वालाप्रसादजी की माता केसरगंज अजमेर दवाखाने में कुनेन की शीर

औन्स की, खाली शीशी गिलास गंधक का १ सिरफेरी आवडाइड पुरानी दवा १॥ अ

मास्टर कन्हैयालालजी बी. ए. केसरगंज अजमेर मोम कीमत ।) का दवाखाने में

श्रीमती ठकुरानीजी साहिबा भाटखेडी मार्फत विजयसिंहजी वैदिक-प्रेस अजमेर

पुरानी लटेकी १ लोटा २ डोर २ जूता जोड़ी १ कोट गरम १ बिराजिस १ सा

गुलुबन्द १ छतरी १.

बा० दुर्गाप्रसादजी बाबू मोहल्ला केसरगंज अजमेर आटा ऽ८ दाल ऽ२≡ घी ऽ।~ नमक ऽ=
धर्मादा रविवार अजमेर आटा ।ऽ१। दाल ऽ।। नाज ऽ।≡
बा० मथुराप्रसादजी बाबू मोहल्ला केसरगंज अजमेर लड्डू ऽ४ जलेबी ऽ३ चणे ऽ।।।
मार्फत पं० गंगासहायजी उपदेशक दया० अना० अजमेर पुस्तकें १५ होमपद्धति
बा० रामेश्वरप्रसादजी C/o अमीरसिंहजी प्रेसीडेंट आर्य्यसमाज झालावाड़ एक समय भोजन सब अनाथों को कराया सीरा, पूड़ी, साग फोले का
रविशंकर हरिशंकरजी भार्गव मदारगेट डी० एच० ब्रादर्स एण्ड कम्पनी अजमेर खरबूजे १० कांचली (अंगीया) ११ ओले शकर के ४
बा० पद्मचंदजी के सुपुत्र धर्मचंद केसरगंज अजमेर घास की गाड़ी १ पुरानी
ठाकुर साहब रूपाहेली मेवाड़ रूपाहेली नाज जो १७ऽ३।।।
जैनाथजी अटल जयपुर खरबूजे नग १२८ कीमत ४।।~)। शकर ऽ३।।।≈ कीमत १) की
धर्मादा रविवार अजमेर आटा ।ऽ३। दाल ऽ।~
बलदेवजी ठेकेदार अजमेर ५ अनाथों को भोजन कराया
जगदीशप्रसादजी भार्गव अजमेर हलवा ऽ२।।≈ पूरी ।ऽ२
पंडित कुँवरलालजी स्टेशनमास्टर अटवाड़ा जो १।।ऽ९
पंडिता श्रीमती गुलाबदेवीजी धर्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी स्वर्गवासी अजमेर एक समय सब अनाथों को भोजन कराया लड्डू पूरी कचोरी साग रायता
ताराचन्दजी शर्म्मा होलीदड़ा अजमेर कोट पुराने २ टोपी पुरानी १
धर्मादा रविवार अजमेर आटा ।ऽ४ दाल ऽ।~ नाज ऽ।–
धर्मपत्नी बाबू भोलानाथजी गोदांगली अजमेर आम नग ७ नागपानी २
धर्मपत्नी बाबू मथुराप्रसादजी श्रीमती गुलाबदेवीजी अजमेर टिन्डसी टोकरी २ कीमत ।।) की
चांदमल टोसी गेट कीपर दया० अना० अजमेर आम ४० अनाथों को दिये
सेठ एकूरामजी ठेकेदार केसरगंज अजमेर लड्डू १) रु० के भजन मंडली के लड़कों को
बा० नाथूराम ड्रापटमैन अजमेर पुरानी दवाइयां कई प्रकार की
कन्हैयालालजी स्टोरकीपर दया० अना० अजमेर आम १०० कीमत ।।) के
धर्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ३।~ नाज ऽ≡ दाल ऽ~
गोरधनराम मुसालालजी मदारगेट अजमेर आम १२५

धींसूजी मा० गट्टूलालजी अजमेर जलेबी ऽ१॥≈ पेड़ा ऽ।

,, ,, हजारीलालजी अजमेर पेड़ा ऽ२

,, ,, धींसूजी अजमेर ८ बच्चों को दूध पिलाया

बा० गौरीशंकरजी बैरिस्टर अजमेर आम नग १६९

मैनेजर अ० र० पत्र अजमेर आम नग ७ लड्डू १ जामुण ऽ। पोदीना ऽ।

बा० डालचन्दजी शर्मा नगरा अजमेर ८ बच्चों को भोजन कराया कचे पूड़ी बूरा साग

धर्मादा रविवार द्वारा अनाथबालक अजमेर आटा ऽ३॥। नमक ऽ=

काना अनाथ दया० अना० अजमेर आम १२८ मूल्य १) के तरबूज १

धर्मपत्नी बा० मथुराप्रसादजी अजमेर जामुण एक टोकरी

दशरथराम सेवकरामजी, आ० स० हाजीपुर जि० मुजफ्फर नगर आम नग १०

धर्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ७≈ दाल ऽ≈॥ नाज ऽ६।

मैनेजर भारत व्योपार कम्पनी अजमेर धोती जोड़े ६ मूल्य १२) के धोती १ कीमत ५॥)॥ की धोती १ मूल्य १॥।-≈) कुल धोती जोड़े १० कीमत १९।≈)॥ का

श्रीमती बाई साहब मोनदकँवरजी जोबनेर द्वारा रामप्रतापजी मदारगेट अजमेर छतरी नई २ जूती जोड़ी ३ छोटे पीतल के तवे ३ डोर सूत की २ धोती जोड़ा १

डी०एच० आदर्श मदारगेट अजमेर आम नग ६२ बैंगन ऽ१॥।

बा० प्यारेलालजी कायस्थ मोहल्ला अजमेर जो ऽ५

मा० कन्हैयालालजी B. A. अजमेर घी ऽ।।

धर्मादा रविवार द्वारा० अनाथबालक अजमेर आटा ।।ऽ।। खीचड़ी ऽ।≈, जो ऽ२।। नमक ऽ-

हरिशंकरजी रविशंकरजी मदारगेट अजमेर कम्बली धोटदार लूगड़ी १ पांवरां १ तकिया १ गद्दा १ रजाई १ जूता जोड़ी १ कपड़े का, शाक ऽ३= नींबू १९ कांच १ कंघी १ चूड़ी ३ डिब्बी लकड़ी की १ लच्छे का टुकड़ा

मुं० हरिशंकरजी रविशंकरजी अजमेर नींबू २२ टिंडी ४८

पं० छगनलालजी घरड़ नीमच छावनी. कुड़ते नये ५ बनियान १ कोट नये ६ वास्कट १ कोट छोटा १ पगड़ी १ कोट गर्म २ ठंडा कोट १ अंगोछा १ कोट १ रफड़

र्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।।ऽ१।। नाज ऽ३। दाल ऽ= नमक ऽ~
बू श्यामलालजी खजानची अजमेर चावल ऽ१।। गेहूं ऽ४।।। शक्कर ऽ।।≈ घी ऽ।=
न्हैयालालजी अत्तार मदारगेट गेहूं ।ऽ५ दाल ऽ२
ौरीशंकरजी बैरिस्टर एटला दूध ऽ१=
ाईजी साहिबा जोबनेर मा० पं० मक्कारामजी थाली पीतल की नई ७ लोटे पीतल के नये ७
ावर्नर साहब दया० अना० अजमेर दवा क़ीमत ।~)॥ सफ़ेदा ८ औंस दवाखाने में
गौरीशंकरजी साहब बैरिस्टर एटला अजमेर दूध ऽ६
सेठ साहब लादूरामजी ठेकेदार अजमेर १० बच्चों को भोजन कराया
धर्मादा रविवार अनाथों द्वारा अजमेर आटा ।ऽ८ नाज ऽ३।। दाल ऽ। नमक ऽ~
पं० चन्द्रधरजी गुलेरी बी. ए. अजमेर गेहूं १ऽ उड़द १ऽ नमक १ऽ
बा० धनप्रसादजी हीरालालजी वकील अजमेर गेहूं ।ऽ९
,, गौरीशंकरजी बैरिस्टर एटला अजमेर दही ऽ२।।
,, माधोप्रसादजी अफ़सर जंगलात अजमेर छुहारा नग १८ जायफल नग ९ पुआ
पकोड़ी सकरपारा ऽ!= जलेबी ऽ।।≈
ं० लक्ष्मीनारायणजी मैनेजर, पसेटी अजमेर ५० लड़के लड़कियों को भोजन एक
क कराया सीरा पूड़ी साग
गोवरधनदासजी मुन्नालालजी अजमेर नाज गेहूं ।ऽ६
हलवाई कन्हैयालालजी मूंदड़ी मोहल्ला अजमेर लड्डू ऽ१'=
र उदयरामजी गूजर मोहल्ला अजमेर मालपूआ ऽ।
हमीरमलजी शाहपुरा निवासी अजमेर लड्डू नग १०३ क़ीमत १)
ाजजी साहब रामदयालजी नहर मोहल्ला अजमेर सब अनाथों को एक समय भो-
र कराया सीरा पूड़ी लूंजी दाल डा० भैरूंलालजी दया० अना० के मार्फ़त
० पद्मचन्दजी के सुपुत्र धर्मचन्दजी अजमेर मालपूआ ऽ।।≈
र्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ५ नाज ऽ३॥ दाल ऽ~
मक ऽ।।= गुड़ ऽ।~ तेल ऽ।~
र्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ५। दाल ऽ~ नाज ऽ२। नमक ऽ~
ौरीशंकरजी साहब बैरिस्टर एट. ला. अजमेर [illegible]
[illegible]

रविशंकरजी हरिशंकरजी डी. एच. मादर्स मदार दरवाजा अजमेर कोट बी नका १, कोट टुईल का १, कुरता गोटेदार १, फलालैन कुरता १, पतलून गर्म १, का छोटा, कमीज छोटा १, कुरती जनानी १, वास्कट छोटी १, कुरता रेंजे का १, बनियान छोटी १, मखमल का पजामा छोटा १, जनाना छोटा १, पजामा लट्ठे छोटा १, कमीज छोटी दरेस की १, कमीज छोटी मलमल की १, कुर्ती जनानी गोटे दार कीरमची रंगकी १, वास्केट मखमल की हरी रंग की १, कोट फलालेन घारी छोटी १, लहँगा छोटा १, कोट बेलदार नारंगा रंग १, कोट जीन का खाकी १, चोखाने का १, ओढ़नी पुरानी गोटेदार १,

बा० गौरीशंकरजी बैरिस्टर एटला. अजमेर आचार ऽ७॥ छाछ ऽ७

धर्मादा रविवार द्वारा अनाथ बालक अजमेर आटा ।ऽ३॥। दाल ऽ। नाज ऽ।

बा० गौरीशंकरजी साहब बैरिस्टर एटला. अजमेर छाछ ऽ४॥

कन्हैयालालजी दयानन्द अनाथालय अजमेर घी १) का ऽ१

जवारी बाई दयानन्द अनाथालय अजमेर घी १) का ऽ१

बाबू लादूरामजी केसरगंज अजमेर ९ अनाथों को भोजन कराया

श्रीचान्दमलजी पहरेदार दया० अना० अन्दरसा नग २७

धर्मादा रविवार आटा ।ऽ५। दाल ऽ।॥ नमक ऽ नाज ऽ३।

बा० रामसहायजी स्टेशनमास्टर दौसा ओढ़नी १, कुरते २, कांचली १

रायसाहब मूलचन्दजी पेमास्टर अजमेर मिठाई ऽ१ ॥) की

चन्दे से अजमेर ११ अनाथों को भोजन कराया

जयदेवदयालजी अजमेर आटा ऽ१॥ घी ऽ बूरा ऽ दाल ऽ॥ नकद ॥

पं० गंगासहायजी उपदेशक दया० अना० के द्वारा अजमेर रजाई २, धोती जोड़े बड़े ५, धोती जोड़ा छोटा १, जनाना १, धोती छोटी १, टुकड़ा २ गज, टुकड़ा १॥ गज टुकड़ा १ गज टुकड़ा मलमल १ गज थाली कांसी की १ थाली पीतल की छोटी १ गड्डी हल्की १ चमचा १ गिलास १ कटोरी कांसी की १ कटोरी कलई की १४

बा० गोधराजजी अजमेर एक वक्त का भोजन समस्त बच्चों को पूरी दाल बूरा १९) खर्च हुए

श्रीमती गुलाबदेवी अध्यापिका पुत्री पाठशाला शहर अजमेर टोपी ८ नाड़ २)

"अनाथरक्षक" के नियम ॥

१—इस पत्र का मुख्य उद्देश स्वदेशनिवासियों को अनाथरक्षा की ओर प्रवृत्ति
२—यह पत्र प्रतिमास प्रकाशित हुआ करेगा।
३—राजनैतिक (पोलीटिकल) विषयों से इस पत्रका कोई सम्बन्ध न होगा, साधारण राजप्रजोपयोगी लेख छप सकेंगे।
४—धर्म सम्बन्धी लेख भी वही छप सकेंगे जिन में मतमतान्तर के विवाद और प्रकार की अश्लीलता न होगी।
५—प्रेरितपत्रोंको छापने और न छापने और घटा बढ़ाकर छापनेका सम्पादकको अधि
६—इस पत्र का अग्रिम वार्षिक मूल्य नगर और बाहर सर्वत्र १) रुपया होगा।
७—जिन महाशयों के पास नमूने का अङ्क पहुंचे और वे यदि ग्राहक होना न च सूचना तुरन्त दें अन्यथा वे ग्राहक समझे जावेंगे।
८—इस पत्र के हानि लाभ का अधिकारी अनाथालय है इसलिये मनुष्यमा की सहायता करना स्वधर्म समझना चाहिये।
९—विज्ञापनकी छपाई व बटाईके लिये मैनेजरसे पत्रव्यवहार अजमेरके पतेमें करना च
१०—संवाद, लेख, समालोचनार्थ पुस्तकें, बदले के समाचारपत्र, हिसाब सम्बन्धी ग्राहक होने के पत्र और इत्यादि निम्नोक्त पते पर आना चाहिये।

मैनेजर "अनाथरक्षक," केसरगंज, अजमेर।

फर ईसाई भाइयों को प्राप्त हुई यह सूर्य के प्रकाश की भांति इससे सिद्ध है अस्तु:—

ज्यों त्यों करके हिन्दूजनों का ध्यान इस अत्यावश्यक कमी की ओर आकर्षित हुआ और उनकी सामुदायिक शक्ति द्वारा कई स्थानों पर ऐसी संस्थाएं स्थापन हुईं जिनमें कालचक्र में पड़ी दुःखी आत्माओं को ढाढस बंधाया जावे। जहां बाल्यावस्था में माता पिता की दयामयी गोद से दूर फेंके बालक रक्षा का स्थान पासकें।

पाठक महोदय ! इन टूटी फूटी अपूर्ण संस्थाओं ने बहुत कुछ उस बहाव को रोका, जो हमारी स्थिति को नीचे ही नीचे बहाये लेजा रही थी इन्होंने वैधर्मियों की इस कृतकार्य्यता पर अपने सतीत्व का विनाश सर्व साधारण को सिद्ध कर दिखाया। इन के द्वारा कितनी ही आत्माएं धर्म्मपतित होने से बचीं। अनेकों ने भयंकर मृत्यु के पंजे से निकलकर पुनः प्राणदान पाया। कोई भी मनुष्य इनकी सराहनीय सेवा से इन्कार नहीं कर सकता। किन्तु यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जितना धन और पुरुषार्थ इस ओर व्यय किया जाताहा है लाभ उससे बहुत न्यून प्राप्त हुआ है। २०–२० और ३०–३० [illegible] से कई अनाथालय अपना काम कर [illegible] किन्तु सर्व साधारण चारों ओर दृष्टि [illegible] कर देखने पर भी उनकी प्रकाश-युक्त किरणें नहीं देख पाते (अनाथालयों ने उत्तम मनुष्य पैदा करने में कामियाबी नहीं की)। हमारे विचार में इस कमी का बड़ा कारण विविध अनाथालयों की अफरातफरी ही है और सफलता लाभ करने का सीधा मार्ग मिलकर कार्य करना।

कौन नहीं मानेगा कि उत्तम से उत्तम [illegible] बीज भी ऊसर जमीन पर पड़कर अपने को मिटादेने के सिवाय कुछ नहीं कर सकता। इसी प्रकार असंस्कृत भूमि बीज को कितनी ही नवलवती भूमि भी उत्तम अन्न उत्पन्न कराने का कारण नहीं बना सकती, अर्थात् उत्तम खाद द्वारा बुद्धिमत्ता के साथ समय पर ठीक की हुई भूमि में उत्तम बीज ही फसल की यथावत् सफलता की आशा दिला सकता है। इस से अभिप्राय यह है कि जहां जिस प्रकार के साधनों की आवश्यकता हो वहां उन्हीं को उपयोग में लाने से मनुष्य सफलमनोरथ होसकता है।

कदाचित् मार्च १९०८ ई० में द[illegible] अनाथालय अजमेर के लिये भ्रमण करते हुए जब हम भिवानी पहुंचे तो वहां के अनाथालय के सञ्चालक ला० [illegible] जी वकील हिसार तथा पं० राधाकृष्ण [illegible] सुपरिन्टेडेण्ट से मिलकर मालूम हुआ कि अनाथालय पांचसौ बच्चों तक लेने को तय्यार है। खैर अगला पड़ाव हमारा हिसार था वहां पहुंचकर मालूम हुआ कि

यहां भी जैन महाशयों के प्रबन्ध से एक अनाथालय अभी स्थापित हुआ है, जिसमें इस समय १६ बच्चे हैं। अनाथालय के सेक्रेटरी ला० हीरालाल जी वकील से भेंट की और अनाथरक्षा विषय पर बातचीत करते हुए ज्ञात हुआ कि इन का अनाथालय भी पांचसौ तक बच्चे लेने को तय्यार है। अभी २ देहरादून के प्रसिद्ध सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने पुष्कल धन अनाथरक्षा के लिये पृथक् करके वहां पर अनाथालय स्थापित किया है। महाशय अजीतसिंहजी यहां पधारे थे कि सब प्रकार की व्यवस्था का बोध प्राप्त कर जावें। उन के अनेक पत्र इस अभिप्राय के प्राप्त हुए हैं कि उन्हें किस प्रकार और कहां से अनाथ प्राप्त हो सकते हैं। यह दृश्य चारों ओर सन्तोषप्रद है। इन्हें देखकर जाना जाता है कि देश के अन्दर दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों के विचार उत्पन्न होकर व्यवहार में आने लगे हैं। परन्तु इस में सन्देह नहीं कि हमारे धन और परिश्रम की अपेक्षा लाभ की मात्रा अवश्य न्यून है कि जिसका कारण हमारी शक्तियों का जुदा २ बिखरा रहना ही समझा जाता है।

हमने उपरोक्त तीनों स्थानों के अधिकारियों का ध्यान अपने सहयोगी ईसाई भाइयों के काम की ओर आकर्षित किया कि वह अपने कार्य के लिये किसी निर्दिष्ट स्थान को कार्यक्षेत्र नहीं नियत करते वरन् आवश्यकतानुसार सहायता करने को दूर जा कर अनाथों और दीनों देशों में निकल के नये मददगार केवल ईश्वरभक्ति के कार्य का देते हैं। पंजाब देश ईश्वरकृपा से ऐसे स्थान पर है जहां वर्षा न होने पर भी नहरों द्वारा कृषि हो जाती है और दुर्भिक्ष का असर प्रायः कम पड़ता है इसके अतिरिक्त फीरोजपुर, लाहौर, अमृतसर इत्यादि कई स्थानों पर ऐसी संस्थाएं उपस्थित हैं जो यदि मिल सकें तो सहस्रों बच्चों के पालन का बोझ सहन करने को उद्यत हैं। फिर कैसा अच्छा हो यदि आप की शक्ति राजपूताने जैसे शुष्क और आपत्ति के दुर्भिक्ष रूपी ग्राह से निगले हुए देश में व्यय हो? आप श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर को अपने एजेन्ट के स्थान काम में लासकते हैं। आपकी इच्छानुसार बच्चे केवल आप के नियत किये नाम पर रक्खे जा सक्ते हैं। हिसाब किताब इत्यादि जैसा आप चाहें सात दिन, मासिक या वार्षिक आप के पास भेजा जा सकता है। यदि ऐसा करने में कोई विशेष कारण बाधक हो तो आप अपना स्वतन्त्र अनाथालय राजपूताने के किसी स्थान में खोलकर भूख और प्यास से तड़फती हुई व्याकुल अनाथों की शान्ति का कारण बनिये, किन्तु यह प्रश्न सामयिक विचाराधीन ही रहा। पिछले सम्वत् में सात-

स्यकता प्रतीत होती है कि इन सब शक्तियों को किसी एक दृढ़तर शृङ्खला में बद्ध किया जावे, जहां से ही देश, काल और आवश्यकता के अनुकूल रक्षा की पद्धति निश्चित हुआ करे।

यदि विभिन्न मतावलम्बियों के आधीन चलनेवाली (इन्स्टीट्यूशन) स्थापनाएं मतभेद के कारण पूर्णतया एक माला के मणिके न बनसकें तो कम से कम समान-आचार, विचार रखने वालों द्वारा स्थापित स्थापनाएं तो किन्हीं विशेष नियमों के अन्दर रक्खी जासकती है। ऐसा करने से कई प्रकार के असुविधे एकदम दूर होकर सुगमता पूर्वक कार्य्यसिद्धि की दृढ़ आशा है।

हम इस लाइन पर काम करनेवाले अनाथहितैषी सज्जनों और विशेष कर अनाथहितैषी फीरोजपुर, धर्म्मदिवाकर आगरा इत्यादि ऐसे पत्रों के सम्पादकों से (जिनका जन्म ही निराश्रित आत्माओं की सेवा के लिये हुआ है) प्रार्थना करते हैं कि वह अपने विचार इस विषय में अवश्य प्रकट करें कि किस प्रकार अस्थानीय अनाथालय मिलकर अनाथरक्षा के कार्य्य को विशेष उपयोगी बना सकते हैं।

यदि कोई महाशय इस विषय का अनाथरक्षक में भेजेंगे तो उपयोगी [illegible] अवश्य प्रकाशित कर दिया [illegible]

कारुणिक दृश्य॥

आज पौष मास की पूर्णिमा [illegible] प्रातःकाल के ५ बजे हैं, भगवान् भास्कर की किर्णों का प्रभाव तक ठण्डा पड़ [illegible] है। पृथ्वी माता चन्द्रदेव के शीतल [illegible] से शीतमयी बनी हुई है। [illegible] जन रेलके कोयले से गर्म किये हुए [illegible] ग्राल भवनों के अन्दर मोटे दर [illegible] भारी सौड़ों में पड़े दिनेशमहाराज [illegible] धारी की बाट जोह रहे हैं।

हा! ईश्वरभक्त, साधुजन (चाहे राज्यमहल में हैं या तृणकुटी में) [illegible] योगसिद्धि में प्रवृत्त हो आनन्द [illegible] रहे हैं। कृषक जन अपने २ [illegible] खेतों की ओर चले हैं। पथिक [illegible] को यात्रा से थकित हो थका मांदा [illegible] मार्ग ठहर गया था, निद्रादेवी की [illegible] गोद में आराम कर प्रफुल्ल [illegible] और मनोकामना की सिद्धि के [illegible] नवीन उत्साह लेकर विशेष [illegible] शीघ्र २ कदम उठाता चला [illegible] किन्तु प्रत्येक के मुख से [illegible] है, मुख पूरा उच्चारण नहीं [illegible] बहुत से मर गए हैं [illegible] गुड़गुड़ा आता है। [illegible] का एक प्रयोग पूरा [illegible] यदि निरपेक्ष के [illegible] पड़ा जा रहा है। [illegible]

की छाया में उसको गोल, मोल एक गठरी-सी पड़ी नज़र आई। क्या मालूम किन भावों को लेकर जगत्बंधु उसके पास जाकर देखने लगा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जबकि उस फटे चीथड़े की पोटली को इधर उधर हिलते देखा। वह और पास गया और आंखें फाड़ २ कर देखने लगा। हाथ लगाया तो "गुदड़ी का लाल" १२ वर्ष का एक परम सुन्दर कोमलांग बालक देखा, जो अत्यन्त शीत के कारण गठड़ी हुआ पड़ा है। सर दोनों घुटनों के बीच में छुपा हुआ है, दोनों हाथों ने पैरों को खींच कर जकड़ रक्खा है॥

जगत्बंधु ने झट पट इधर उधर से कुछ कूड़ा करकट एकत्र कर, दिया सलाई से अग्नि निकाली और उसको तपाने लगा। गर्मी पहुंचने से बालक ने आंख खोलदी और अपने तपानेवाले की ओर दर्द भरी निगाहों से देखकर सब से पहिला शब्द जो उसके मुख से निकला वह "मेरी बहिन कहां गई ?" था।

बालक के शरीर पर कोई कपड़ा साबित नहीं था, केवल चीथड़ों के अन्दर लिपटा हुआ था। उसका शरीर भूख, प्यास का मारा जैसा मलीन होता था। किन्तु फिर भी चेहरे की बनावट और कोमलता से उज्वल वर्णस्वरूप जान पड़ता था, जगत्बन्धु ने उसे सान्त्वना दिलाने का कोई साधन उठा न रक्खा। गोद उठाकर अपने घर पर लेगया और खाने पहनने की सुध लेने लगा। किन्तु बालक "मेरी बहिन मेरी बहिन ही" पुकारता था। आखिर जगद्बन्धु पूंछने लगाः—

ज० ब०—भाई! तुम्हारा क्या नाम है? और तुम कौन हो?

बालक—मेरा नाम चिरंजीव है, मैं बनिये का लड़का हूं।

ज० ब०—तुम यहां कैसे आए और तुम्हारी बहिन कौन है जिसको तुम बुलाते हो?

बालक—मैं इसी प्रान्त के एक भाग का रहने वाला हूं, मेरे साथ मेरी १ बालक बहिन भी थी जो खबर नहीं किधर चलीगई! हमारी माता न जाने कब मरगई, माता के पश्चात् हमारे बाप के द्वारा हमारा पालन पोषण होता रहा। गत वर्ष इन्हीं दिनों वह साधन भी हमसे छीन लिया गया और हम दोनों अपने चचा के [illegible] के आश्रयमात्र पर रह गए।

हमारे पिता दुकान करते थे। घर के मुखिया थे। [illegible]

हमारा हाथ उन के हाथ में दिया और "इन बालकों की रक्षा तुम्हारे हाथ है" यह कह कर अवाक् होगए।

कुछ दिन तक हमको प्रेमपूर्वक रक्खा गया। हमारी आवश्यकताओं पर दृष्टि रक्खी जाती रही किन्तु वास्तव में हम अभागे इस कृपा के पात्र नहीं थे। जब दैव ही विपरीत हो तो मनुष्य की क्या शक्ति कि सहारा देसके। शनैः २ हमारी चाची आदि हमसे रुष्ट रहने लगीं। हमारा खाना, पहनना, उठना, बैठना सब कुछ बेहूदा समझा जाने लगा और होते२ हमारी ओर से बिलकुल आंख फेरली गई। हम आपको क्या कहें "स्वार्थी दोषं न पश्यती" हमारे मरजाने ही में उन को अपना कल्याण दिखलाई दिया, किन्तु जीवन अवधि शेष रहने से मृत्यु ने भी आंख चुराई। मालूम नहीं अभी क्या २ देखना बदा है इसी प्रकार दरबदर ठोकरें खाते कल यहां आ पहुंचे रात्री में बालक बहिन खबर नहीं किधर चली गई। अब वह क्या जीती होगी!!! इतना कहकर चिरंजीव की हिचकी बंध गई। धर्म्मात्मा जगत्‌बन्धु ने उसे सन्तोष दिलाया और खोजकर उसकी बहिन को (जो रात्री में पासही के एक घर में ठहरी थी) उससे ला मिलाया। किन्तु जगत्‌बन्धु एक साधारण स्थिति के आदमी थे दो बच्चों के पालन पोषण का बोझा उठाना उनके लिये कठिन था और उनको निराधार छोड़देना भी उनके मंधुर गुण का विरोधी था अतएव उन्होंने उचित रीति से राजपत्रों द्वारा उनको श्रीदयानन्द अनाथालय अजमेर में भिजवा दिया।

ओह! टूटी को कौन जोड़ सकता है? प्यारा चिरंजीव कुछ दिनों के पश्चात् कठोरहृदय काल का ग्रास बनगया। उसकी बहिन इस समय तक अनाथालय में उपस्थित है और प्रसन्नता पूर्वक विद्यालाभ कर रही है।

परमात्मा हम सभी को जगत्‌बन्धु ही नहीं जगत्‌सेवक बनावे ताकि देश में कोई भी असमर्थ आश्रय न पाकर धर्म और प्राण न त्यागें।

जिह्वा ॥

कहने को तो मुखके अन्दर जिह्वा केवल दो अङ्गुल का एक मुलायम मांस का लोथड़ामात्र ही है। हमारी साधारण दृष्टि में मनुष्य जीवन में वह कोई ऐसी गौरवप्राप्त चीज़ नहीं है किन्तु यदि विचारदृष्टि से देखा जावे, तो जिह्वा शरीर के अन्य अवयवों में से एक अत्यन्तावश्यक और परमोपयोगी वस्तु है। मनुष्य के लिये शारीरिक तथा आत्मिक दोनों प्रकार की उन्नति की कुंजी यही बिना अस्थी का लिजबिजा २ अंगुल मांस का टुकड़ा है,

के लिये उपयुक्त पदार्थों को इस के अन्दर डालने का हुक्म देना यही जिह्वा है। इसी के सुपुर्द वह ऐसी अलौकिकता परमात्मा की ओर से हुई है कि वह स्पर्शमात्र से पदार्थों के गुण और स्वभाव को जानकर यदि उनका पेट के अन्दर पहुंचना हानिकारक समझे तो कण्ठ से इधर ही रोक दे।

हां! आत्मिकोन्नति का आधार भी इस जिह्वा ही ठहराई गई है। नाना प्रकार के धर्मोपदेशों तथा वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा यही है। जनक जैसे जीवन-मुक्त महाराज की सभा में याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों द्वारा अनेकानेक धार्मिक विषयों की ग्रन्थि इसी के द्वारा खुलती रही है। और निस्सन्देह इसी जिह्वा के द्वारा संसार में घर के घर, नगर के नगर, राज्य के राज्य और देश के देश समूल ऐसे नष्ट होगए कि उनका खोज तक नहीं मिलता। ग़रज़ दुनियां के इतिहास में संसारचक्र को चलाने को एक या दूसरे ढंग पर चला देना इसी तलिकसी जिह्वा का काम है। संसार में जहां२ और जहां२ परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं और होंगे, उन सब की जड़ में इसी जिह्वा का हाथ छुपा हुआ है। यह प्रत्यक्ष विष को अमृत बना देती है, अमृत इस की कुदृष्टि के आगे विष जचने लगता है। बताओ महाराज बीरबल के पास क्या था जो शाहन्शाह अकबर की अग्नि, प्रचण्ड अग्नि को दम की दम में शान्त कर देते थे। सच कहा है:—

"ज़ुबानशीरीं मुल्कगीरी। ज़ुबान टेढ़ी मुल्क बांका" इसीलिये परम नीतिज्ञ महानुभवी पूर्व पुरुषों ने इसके संशोधन पर बड़ा बल दिया है, वह सच कहते हैं कि:—

रोहते सायकैर्विद्धं, वनं परशु-
नाहतम्। वाचादुरुक्तं बीभत्सं, न
संरोहति वाक्क्षतम्॥

अर्थात् फर्सा का कटा हुआ वृक्ष हरा और बाण का लगा हुआ घाव भर भी जाता है, परन्तु वचनरूपी बाणों का घाव कभी नहीं भरता। और

कर्णिनालीकनाराचा निर्हरन्ति
शरीरतः। वाक् शल्यस्तु न निर्हर्त्तुं
शक्यो हृदिशयोहि सः॥

अर्थात् धनुष से लगे हुए बाण शरीर से निकल भी आते हैं परन्तु वाणीरूपी बाण नहीं निकल सकते क्योंकि वह हृदय में प्रवेश होजाते हैं। इसीलिये:—

वाक् सायका वदनान्निष्पतन्ति,
यैराहतः शोचति रात्र्यहानि।
परस्य ना मर्मसु ते पतन्ति,
तान् पण्डितो नाव सृजेत् परेभ्यः॥

क्योंकि, मुख से निकले हुए बाण-रूपी वचन जो कोमल स्थान पर गिरते हैं, मनुष्य को रात दिन सोच में रखते हैं, इसलिये बुद्धिमान् ऐसे वचनों को मुख से न निकालें।

यह सब कुछ वागेन्द्रिय संयम से ही सिद्ध हो सकता है जिसका समय जीवन यात्रा आरम्भ करने के साथ ही से आरम्भ होता है ॥

अनाथालय सम्बन्धी।

रिपोर्ट फरवरी १९१० ई० ॥

फेब्रुअरी के आरम्भ में ८२ लड़के और २८ लड़कियां उपस्थित थीं। १ लड़का अपने वारिसों के पास भेजा गया तथा १ गया हुआ वापस आया और इस प्रकार मास के अन्त में ८२ लड़के और २८ लड़कियां कुल ११० बच्चे अनाथालय में रहे।

निमन्त्रण—अनाथालय की जनरल सभा का जलसा १–२ मई १९१० ई० को निश्चय हुआ है। मन्त्रीजी महाशय ...ण लाइफ मेम्बरों, मेम्बरों तथा सहायक ...ों को उत्सव में पधारने के लिये निमन्त्रण देते हैं। निमन्त्रणपत्र पृथक् भी भेजे जावेंगे।

कारखाना—श्रीमद्दयानन्द अनाथालय (फैक्टरी) कारखाना जो कुछ दिनों से बन्द था, पुनः खोले जाने का आरम्भ होगया है। मौजों की मेशीनें खड़ी की जा चुकी हैं जिन में काम भी शुरू होगया है, आशा है कि शेष कार्य भी शीघ्र ही आरम्भ होजावेंगे। मौजे ।।।) दर्जन से लेकर २॥) दर्जन तक के उपस्थित हैं। मंगाकर देखिये।

याद रखिये—गेहूं की फसल तय्यार है। कहीं२ कटने भी लगी, किसान का दान प्रसिद्ध ही है। जिस दिन से खेत में दाना उत्पन्न होता है अनेक रीति से दान आरम्भ हो जाता है, काटते, गाहते, उठाते घर लेजाते तक दानी का हाथ बराबर चलता रहता है। ऐसे अवसर पर यदि हम उनसे प्रार्थना करें कि आप अपने दानमें श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर को भी याद रखिये तो अनुचित न होगा। आप के लिये सेर दो सेर मन दो मन अपनी शक्त्यनुसार दान पृथक् कर देना साधारण बात है और यहां कितने ही भूखों के पेट की अग्नि शान्त होजायगी।

२५) मुंशी परमेश्वरीलालजी हकीम साकिन सदर बाजार सागर द्वारा गणेशीलालजी क्लर्क आडिट आफिस अजमेर
४) पं० श्रीधरजी की माता द्वारा पं० राजारामजी भाटियों की धर्मशाला कैसरगंज गौशाला
३) सूरजसहायजी गुल्जार कलक्टरी ऐटा
५) रामप्रताप हरिशङ्करजी कस्बा डिवाई जिला बुलन्दशहर
५०) सर्दार बहादुर भक्तसिंहजी साहब सेक्रटरी इजलास खास धौलपुर । मा० चन्दा मध्ये
२) बा० रामचरनजी स्टोरकीपर उदयपुर
१) मि० जगदीशसहायजी माथुर ज्युडिशियल अफसर प्रतापगढ़ (मालवा) मा० चन्दा
१) मास्टर उदयरामजी c/o राधाबाईजी अजमेर
१०) रामेश्वरप्रसादजी शर्म्मा रिलेविङ्ग स्टेशन मास्टर फलेरा
१) मोतीरामजी वैश्य साकिन सराय तरीन जि० मुरादाबाद
५०) डाक्टर नन्दकिशोरजी मिश्र चाकसू वाया जयपुर रियासत
२५) माधवजी जीवनजी कुम्हरिया जि० कच्छ
२) मदकूरामजी मा० देवीरामजी पनवाड़ी छावनी नीमच
१) प० छगनलालजी भरव

१) पं० रामशरणजी मालिक राम प्रेस छावनी नीमच
२५) सेठ फूलचंदजी छावनी नीमच
५) महाशय गोरीसहायजी मुख्तार जि० बदायूं
१) बा० गोरीशंकरजी बी. ए. बैरिस्टर एटला अजमेर
४) द्वारा डा० अयोध्याप्रसादजी चाकसू रियासत जयपुर
२) पटेलान मौजा महाचंदपुरा
२) पं० गोविन्दनरायनजी वैद्य जयपुर निवासी
१) भवँरीलालजी पंसारी बाड़मे
११) मासिक चन्दा मध्ये:—
४) ठकुरानीजी रानावतजी बल्लभ कुंवरजी शिवगढ़ जि० नीमच
५) पं० रामकँवारजी तहसीलदार चाकसू द्वारा अयोध्याप्रसादजी
२) बा० हजारीलालजी अफसर पुलिस चाकसू द्वारा अयोध्याप्रसादजी
१) बा० गोरीशंकरजी बी. ए. बैरिस्टर एटला
-) बा० हरस्वरूप जी कायस्थ मदार अजमेर
१) देवीसहायजी अग्र मंढोली जि० रे...

१) ठाकुर [illegible] [illegible] काण्ड-
[illegible] जि० देहरादून

१) [illegible]सिंहजी [illegible] [illegible] जि०
बदायूं

४) बिहारीलालजी पटवारी नहर [illegible]
[illegible] सितम्बर ०६ से अप्रैल
१९१० तक का चन्दा

५) गयाप्रसादजी [illegible] हैदराबाद
(देकन)

१।।=) गुलाबरायजी मिश्र अमरोहा जि०
मुरादाबाद

२।।=) यवनेरजी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

२) जगन्नाथप्रसादजी टोनीवार सीतापुर

स्थानिक चन्दा देनेवाले दाताओंकी नामावली फरवरी १९१०

१) मि० शोरावजी दादा भाई वकील
=) गोवर्धनजी मदारगेट
२) मुं० देवीदयालजी भार्गव
=) कजोड़ीमलजी सुनार
।) ला० चैनसुखजी मुनीम
२) बा० पुरुषोत्तमदासजी
५) बा० प्रभुदयालजी वकील
२) पं० वंशीधरजी शर्मा वकील
२) मुं० फूलचंदजी साहब जज्ज
=) रा० ब० पं० जी, आर० खांडेकरजी
अजमेर
२) मिस्तरी पीसुलालजी अजमेर
१) मुंशी लाडलीलालजी मुख्तार

।=) कन्हैयालालजी अनाथ द० अ०
।।=) पण्डित गिरवरलालजी शर्मा केसरगंज
=) कन्हैयालालजी अनाथ द० अ०
४) विशम्भरनाथजी बी. ए. एल. एल. बी. वकील अजमेर
१) पं० तुलसीरामजी अध्यापक सद्धर्मप्रचारिणी कन्या पाठशाला चामणौली
।) ला० हुशियारसिंहजी पं० ब्रह्मानन्दजी वैद्य द्वारा ,,
।) मुखतारसिंहजी कन्हेरा
१) चौ० हरजसिंहजी माजरा
१) ,, गीरसिंहजी जिवाणी
१) ला० दलेलसिंहजी विद्यार्थी ,,
२) ,, बलवन्तसिंहजी खेड़ी
१) ,, ईश्वरजी ककड़ीपुर
१) पं० भगवानसहायजी मुदर्रिस अलमा
२) चौ० नत्थूसिंहजी नम्बरदार ,,
१) ला० पन्नालाल पटवारी ,,
१) चौ० चूड़ामणिजी ,,
१) ,, गंगाराम सुखराम ,,
१) रूपरामजी ,,
२) चौ० दुलिचन्दजी ,,
१) ,, अलगचन्दजी ,,
२) ,, किशनलालजी ,,
१) ,, पृथ्वीसिंहजी ,,
२) ,, रामबक्शजी ,,
१) ,, छज्जूसिंहजी ,,
१) चौ० बलदेवसिंहजी ,,
१) ,, रामसिंहजी ,,

१) रामचन्द्रजी रामगढ़
१) जुहारापुरी गुसाई ,,
१) अर्जुनपुरी ,, ,,
१) पं० लज्जारामजी पांडे ,,
१) उमराव कौर जाहाणी ,,
॥) लाली मिश्रानी ,,
१) बालमुकन्दजी पांडे ,,
१) रामजीलाल ब्राह्मण रामगढ़
।) पं० न्यादरदत्तजी चिट्ठीरसा विनोली
=) ला० रामप्रसादजी सिरसिली
=) झंडू भक्त ,,
२५) चो० तेजराय सुनहरा नम्बरदारान पट्टी चोधरान वरीठान सिरसिली
१) रतीराम नथुवा मुलराम हट्टी सिरसिली
२५।) ला० रामनरायनजी रईस बामणोली
।) भगवानदासजी वैरागी सिरसिली
।) अबदुल्लाखां - ,,
।) हीरा तेली ,,
१) चन्दनपुरी ,,
१) गणेशपुरी गुसाई ,,
।) रामशरण दरजी ,,
।) मामराज कहार ,,
३७॥) मावी देशराज रामीराव छल्लूसहना, रामजीलाल पट्टी मावी सिरसिली
।) कपूरसिंहजी ,,
=) झन्डूसिंहजी ,,
=) ला० रामनारायणजी रईस बामणोली (मूती मोढा १)

॥ पं० रूपरामदत्तजी सिरसिली
१) म० भगवानसिंहजी की माता न्यादी बामणोली
॥) ठा० फकीरचन्द की पत्नी बामणोली
।) रामसिंहजी की पत्नी ,,
।) तारीफसिंह की ,, ,,
५) आर्य्यसमाज ,,
१।) पं० रामचंद्रजी वैद्य ,,
२) ,, नित्यानन्दजी सौम्य ,,
१) धर्म कोष से मा०— महाशय भगवानसिंह ,,
॥) पं० शशिरामजी शर्मा ,,
॥) ,, नित्यानन्दजी वैद्य ,,
१) ,, हरदेवसहायजी ,,
१) ,, प्रभुदयालजी आर्योपदेशक सर्व-निवासी का पुत्र बलवंतसिंह ,,
१) तारीफसिंहजी जगाणा (मेरठ)
।) पं० भोलासिंहजी कंडेरा
२) चो० नन्दलाल जहानसिंह कंडेरा
पं० शिवनरायनजी ,,
(ऋ०भा० मू० १ प्रति) बा:पुस्तक
नन्दलालजी की माता (१ पट्ट),,
नन्दलालजी ६ पुस्तकें ,,
१) मुखतारसिंहजी लुहार वेरा सुर्खेहार बामणोली

अभी प्रयाग से १२ कोस पर पृथिवी के नीचे से अकस्मात् खोदे जाने पर एक अत्यन्त प्राचीन नगर तथा मौर्य्यवंश के अनेक चिन्ह प्रकट हुए हैं ॥

क्या खबर धरती माता के गर्भ में इस प्रकार के कितने नगर और वश छिपे पड़े हैं! और कौन और कब इस आनन्द दायिनी माता की सुखद गोद में सोने को धन्य होगा ॥

गुरुकुल कांगड़ी । का अष्टम वार्षिकोत्सव २५-२६-२७ मार्च १९१० ई० को होगा। प्रथम के ३ दिवस तक सरस्वती सम्मलन (विद्वानों की सभा) होगी जिस में अनेक बाहर के विद्वान तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी निवंध पढ़ेंगे ।

इन्हीं दिनो में "गुरुकुल" महाविद्यालय ज्वाला पुर का भी वार्षिक समारम्भ होगा जिस में कितने ही प्रसिद्ध आर्य्य विद्वानों के व्याख्यान होंगे ।

गुरुकुल काँगड़ी के साथ "सार्व देशिक सभा" तथा महाविद्यालय के साथ "आर्य्य विद्वत्सभा" के अधिवेशन भी होंगे । यात्रियों के लिये आनन्द लाभ का उत्तम अवसर है।

दूध का दूध और पानी का पानी । आर्य्य समाज ने अपने स्पष्ट भाषण के कारण

प्रत्येक मतानुयायी को अप्रसन्न करालिया है यह प्रतिवादी जब अपने २ मतों की स्थापना ... युक्तियों द्वारा नहीं कर सकते तो नाना प्रकार की गुप्त चालों से अपने मतोद्देश्य ... समाज को पदाक्रान्त करने का प्रयत्न करते हैं। पाठक अभी इटावे के ... भूले न होंगे जो श्रीमान् लेफ्टीनेण्ट साहिब बहादुर आगरा व अवध ... दूरदर्शिता से उठते ही बैठा दिया गया। यदि तनिक शीघ्रता से काम ... कई निरपराधी कठोर दण्ड के भागी ठैरजाते। इसी प्रकार पंजाब प्रान्त के ... में ऐन श्रीमहाराजा बहादुर के राज्याभिषेक के दिन आर्यसमाज और ... पक श्री १०८ महर्षि दयानन्दजी सरस्वती पर राज्यविद्रोह का अभियोग ... गया। अभियोग के सम्बन्ध में जो २ कार्यवाही हुई जिस प्रकार ४ ... ७०—८० निरपराध आर्य्य पुरुष अपने इष्ट मित्रों तथा परिवार से जुदा रक्खे ... ३० मनुष्यों पर से स्वयम् ही अभियोग उठा लिया गया और जिसप्रकार ... उठाकर निरपराध जानते हुए भी केवल संदेह में देश निकाले का दण्ड दिया ... अपने २ समय पर पाठक देख और सुन चुके हैं, अब यह मालूम करके ... आनन्द होगा कि श्रीमान् महाराज साहिब बहादुर ने अपनी प्रभु भक्त ... आज्ञा को मन्सूख कर दूध का दूध और पानी का पानी जुदा दिखला दि... आशा है कि श्रीमान् शीघ्र ही उन सब को अपने २ पद पर भी ...

इस अभियोग ने आर्य्यसमाज को बिलकुल उजाले में ला ... अब भी विरोधी उस के विषय में वैसी ही धूल उड़ाते रहेंगे, वैसी ... चाहिये ॥

महात्मा बुद्ध की अस्थी—जिनके लिये देश में झगड़ा ... मेरठ हिज ने उनको अब देश की राजधानी माण्डले में ... उन पर बनवाने का निश्चय कर दिया। ... को लेने के लिये ... डेपुटेशन ... से कलकत्ते जावेगा।

प्रकट करने के लिये केवल अपनी जातीय महानता को ही आधार रखते हैं वहां कई दूरदर्शी ऐसे सज्जन भी उपस्थित हैं जो काल विशेष के प्रभाव में न बहकर असलियत को नहीं भुलाते। वह गैत्रिक सम्मान पर निज गुणों द्वारा प्राप्त प्रतिष्ठा को बड़ाई देते हैं। इसी प्रकार के मुसलमानों में मुम्बई के एक सर करीमभाई इब्राहीमभी हैं। आप ने मुसलमानों में पदार्थ विद्या के प्रचारार्थ साढ़ेचार लाख रुपया एक पत्र के साथ छोटे लाट साहिब की सेवा में भेजा है। जिसके लिये भारत के बड़े लाट महोदय ने उदारचित्त दाता को सम्मान सूचक शब्दों में धन्यवाद दिया है।

वास्तव में देश और धर्म के लिये ऐसे ही दानशील विद्याप्रिय सज्जनों की आवश्यकता है और धन इन्हीं के पास पहुंच कर शोभा को प्राप्त होता है। नहीं तो गाड़ रखने के लिये सोना और पत्थर [illegible] से हैं।

देने की अपेक्षा दिलाना कठिन है ॥

जब कि खेत पर आकर [illegible] [illegible] अपने साथ भी, बच्चे और कुटुम्ब के लिये [illegible] [illegible] ले जाते हैं तो अपने देश और कौम के निराश्रय बच्चों की प्राणरक्षा के लिये दान देने में वे संकोच करेंगे यह समझना ही व्यर्थ है। हां! आवश्यकता यह है कि कोई सज्जन अपने पड़ोसी पड़ोसी किसान महाशयों से ठीक समय पर अन्न एकत्र कर भिजवाने का प्रबन्ध करदें। इसमें संदेह नहीं कि गिरह से देदेने की अपेक्षा यह काम ज़रा कठिन अवश्य है किन्तु उतना ही महत्त्वपूर्ण और धर्म विशेष भी है ॥

स्थानिक समाचार

वार्षिक चुनाव—अजमेर आर्य्यसमाज के अधिकारियों का वार्षिक चुनाव निम्नानुसार हुआ है:—

प्रधान श्री. पं. बंशीधरजी शर्मा एम.ए.
उपप्रधान ,, बा. रघुवीरसिंहजी
मन्त्री ,, बा. केशवदेवजी गुप्त
उपमन्त्री ,, पं. जयदेव शर्मा सम्पादक अनाथरक्षक
कोषाध्यक्ष श्री० बा० लादूरामजी
पुस्तकाध्यक्ष ,, बा० [illegible]
प्रतिष्ठित सभासद ,, बा० [illegible] भार्गव बी० ए०

होली—यह बात [illegible] है कि अब हमारे [illegible] [illegible] अपने कर्तव्य [illegible] पर दृष्टि डालने लगे हैं और समय के [illegible] [illegible] में उन्हें [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] में समर्थ बना दिया है। [illegible]

[illegible] कहीं [illegible] हवने
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हमने अनेक
अनेक स्थानों पर सुगन्धित, पुष्पादिक
[illegible] पदार्थों द्वारा यज्ञ धूम
से वायु मण्डल परिपूरित नज़र आता है। कहीं त्रिसपद गीत गाये जाते हैं, कहीं व्याख्यानों द्वारा कुरीतिनिवारण का यत्न होरहा है । हमें बड़ी प्रसन्नता हुई जब हमने मान्यवर मु० देवीदयालजी भार्गव ऑनेरेरी मजिस्ट्रेट के गृह पर रामायण मण्डल द्वारा श्री मर्य्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्रजी के गुण वर्णन होते देखा। अब आशा रखनी चाहिये कि देश के अगुवा इस उन्नति की घुड़दौड़ के समय में आगे बढ़ने के लिये सरतोड़ कोशिश करेंगे ।

नामकरण संस्कार—२८-१-१० रविवार के प्रातःकाल १० बजे से श्री बा० मिट्ठनलालजी भार्गव प्रधान आ० समाज अजमेर के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार हुआ, बालक का नाम देवदत्त रक्खा गया । उक्त बाबू साहिब ने १०) विविध स्थापनाओं के लिये दान दिया। आगत पुरुषों का पान तथा मिठाई से सत्कार किया। १) बा० परमानन्दजी की ओर से भजनमण्डली के लिये दिया

वार्षिकोत्सव—आर्य्यसमाज फलौदी (?)। जंक्शन का प्रथम वार्षिकोत्सव २६-२७ मार्च १९१० ई० शनिवार तथा रविवार को होली की छुट्टियों में हुआ। सविस्तर वृत्तान्त प्राप्त होने पर लिखा जावेगा ॥

शोक के साथ प्रकट कियाजाता है कि अनाथालय के श्रद्धालु सहायक श्रीमान् बा० माधोप्रसादजी फ़ारेस्ट आफ़िसर मेरवाड़े का स्वर्गवास (डायरिया) दस्त रोग से ब्यावर के स्थान पर होगया। आप का समस्त परिवार ही अनाथालय के साथ अत्यन्त प्रेम रखता है । कदाचित् ही कोई सप्ताह जाता हो जब इन बच्चों के लिये भोजन, वस्त्र तथा अन्य कुछ न कुछ दान न आता रहा हो, ऐसे अनाथसहायक धर्मात्मा महाशयों का अपने परिवार को असमय छोड़ जाना बड़े दुःख की बात है, ओह ! आपने अभी अपने एकमात्र पुत्र को सिविल सर्विस के लिये वलायत भेजा था उनको कृतकार्य्य देखने की इच्छा आप के मन की मन ही में रही । हम आपकी धर्म्मशीला अर्द्धाङ्गिनी तथा सुयोग्य पुत्रादि सम्बन्धियों के साथ उन के असह्य दुःख में सम्मलित हो कर परमात्मा से मृतात्मा की सद्गती की

वार्षिकोत्सव ॥

आर्य्यसमाज अजमेर का सत्ताइसवां वार्षिकोत्सव ३० अप्रेल व १—२ मई १९१० ई० शनि, रवि तथा सोमवार को होना निश्चय हुआ है। इसी अवसर पर श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान, स्त्री-समाज तथा श्रीमद्दयानन्द अनाथालय के उत्सव भी होंगे। जिनमें प्रसिद्ध २ साधु, संन्यासी, उपदेशक और भजनीक महाशय पधारकर अपने मनोहर सत्योपदेशों द्वारा धर्म्मलाभ कराएंगे। प्रार्थना है कि आप भी अपने इष्ट मित्रों सहित इस अवसर पर सम्मिलित होकर उत्सव की शोभा को बढ़ावें और धर्म्मलाभ करें।

नगरकीर्तन १ मई १९१० को प्रातःकाल ६ बजे समाजभवन से चलकर मदारदरवाज़ा, पुरानीमण्डी, नयाबाज़ार, कड़क्काचौक, धानमण्डी, नलाबाज़ार, घसेटी बाज़ार, डिग्गीबाज़ार और चांदबावड़ी होता हुआ समाजभवन में वापस आवेगा, जहां छात्रों को मिठाई दी जायगी।

गुरुकुल महोत्सव—गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक महोत्सव सानन्द समाप्त होगया श्रीमान् पं० तुलसीरामजी स्वामी, पं० हरप्रसादजी स्वामी, पं० आर्य्यमुनिजी इत्यादि अनेक विद्वानों के उपदेश हुए। सरस्वती सम्मेलन का समारोह भी सन्तोष-रहा। ४७०००) से ऊपर ही दान गुरुकुल को प्राप्त हुआ। गंगा के किनारे प्रसिद्ध विद्वान् (फ़ाज़िल) मौलवी गुलाम हैदर साहिब ने जो (मुद्दतों अरब इत्यादि में रहे हैं) सहस्रों स्त्री पुरुषों की उपस्थिती में वैदिक धर्म्म को ग्रहण किया। ३० नवीन ब्रह्मचारी लिये गए।

महाविद्यालय ज्वालापुर—इ तिथियों में महाविद्यालय (गुरुकुल ज्वालापुर का भी उत्सव हुवा। श्रीम पं० गणपतिजी शर्म्मा रायबहादुर म आत्मारामजी, श्री० स्वामी सच्चिदानन्द इत्यादि अनेक महाशयों के उत्तम व्याख्य हुए। विद्यालय के लिये आठ सहस्र न सहायता के अतिरिक्त वार्षिकमन्ने बहुत कुछ प्रतिज्ञा हुई। १९ ब्रह्मच नवीन प्रविष्ट हुए।

पेशावर का विद्रोह–बड़े दुःख विषय है कि हिन्दू मुसलमानों के बीच आए दिन भेद बढ़ताही जाता है। बहु समय नहीं गुजरा कि अब विशेष क गावों के अन्दर इन दोनों में परस्पर भाई का जैसा प्रेम विद्यमान था, एक का दूस की खुशी में खुशी और क्लेश में क्लेश मान साधारण बात थी। एक की बहु बेट दूसरे की उसी प्रकार बहू, बेटी समझ जाती थी, किन्तु बड़े खेद की बात है कि अब वह बात बिल्कुल भूलती जाती है पक्षपाती और स्वार्थी लोग एक दूसरे के

राजपूत

(२००६)

क्षत्रिय-महासभा का पाक्षिक पत्र ।

कुंवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी के निरीक्षण में सम्पादित ।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥

अर्थ—उसी पुरुष का संसार में जन्म लेना सफल है जिसके द्वारा अपनी जाति की उन्नति हो, नहीं तो इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं जन्म लेता और मरता है ।

विषय सूची ।

राजपूत एंग्लो-ओरियंटल प्रेस, आगरा ।

श्रीमद० अना० अजमेर के मासिक आयव्यय का नक्शा फरवरी सन् १९१०ई.

आय.

४४६।।।=) दान
२०।।=) मासिक चन्दा स्थानिक
६३) ,, बाहर का
१८।।=) किराया
४०।=) अनाथरक्षक
।) शिक्षा विभाग
३०) भजनमण्डली
४) गोशाला
२८।)॥ अमानत
-)॥ फुटकर

४५३।।-)।।। पीपल्स बैंक से निकलवाये
६९) अलाइन्स बैंक से ,,
१३०।।।-)६½ पिछला शेष

१३३१।।=)६½ पाई योग

व्यय.

३०२) खुराक
३२।।) गोशाला
१०५।-) अनाथरक्षक
२७।।=)।।। शिक्षा
१०)।। पोस्टेज
-।।।) औषधालय
१३।=)।।। सफाई
१०।-)।। रोशनी
८५-)।। वेतन
३) पानी
२०।।।=)।। फुटकर
-) वस्त्र
।।।=)। बर्तन
१०) पारितोषिक
९।।)।।। डाकव्यय
४-) सूद लौटाया
३) विवाह संस्कार
४९।।।=)॥ भजन मण्डली
१९-)॥ अनाथों को वेतन
२।=) मकानात
१००) सेठ लादूरामजी को मकानातमद
३) अनाथरक्षा

८९४=)६ योग

३९०) पीपल्स बैंक को भेजे
४७।।।)½ पाई शेष रहे

१३३१।।।=)०९

राजपूत के नियम।

(१) यह पत्र मास में दो बार १५ और अन्तिम तारीख को प्रकाशित होता है।

(२) इस पत्र का अगाऊ वार्षिक मूल्य २) है परन्तु ६ नये ग्राहकों का मूल्य भिजवाने वालों को उस समय तक जब तक कि वे ६ ग्राहक बने रहेंगे पत्र मुफ्त दिया जायगा।

(३) इस पत्र में क्षत्रिय जाति उपयोगी विविध विषयक लेख छपा करेंगे।

(४) इस पत्र का मूल्य और प्रबन्ध-सम्बन्धी पत्र मैनेजर 'राजपूत' आगरा और लेख आदि सम्पादक 'राजपूत' आगरा के पते पर भेजने चाहिये।

(५) क्षत्रिय वर्ग उपयोगी विज्ञापन मुफ्त छपा और बँटा करेंगे परन्तु अन्य प्रकार के विज्ञापनों की छपाई और बंटाई की शरह मैनेजर राजपूत से लिखकर पूछना चाहिये।

*

* *

by H. S. Raghuwanshi at 'Rajput Anglo-Oriental Press, Agra.

राजपूत

भाग ११ | सम्वत् १९६६ वि० | संख्या २०

श्रीमान् महाराजा मेजर जनरल सर प्रतापसिंह जी साहब जी. सी. ऐस. आई. इन्द्र महेन्द्र सिपरे सल्तनत दौलते इंगलिशिया जम्मू व कशमीराधिपति प्रेसीडेन्ट क्षत्रिय महासभा की वक्तृता का भाषान्तर।

राजपूत भ्रातृ व महानुभाव गण ! मैं आप का बहुत ही कृतज्ञ हूं कि आपने मुझे इस क्षत्रिय महासभा के वार्षिक अधिवेशन के सभापति होने के लिये निमन्त्रित किया है। इस सम्मान को जो आप ने मुझे अर्पित किया मैं बड़े गौरव की दृष्टि से देखता हूं विशेषतः इसलिये कि मेरे पूर्वज शताब्दियां व्यतीत हो चुकीं अयोध्या से पंजाब प्रान्त में आये और आप से दूर रहने के कारण उतना पारस्परिक सम्बन्ध न रहा जितना कि रहना चाहिये था परन्तु आप ने जातीय उत्साह से मुझ को अपना ही समझ कर मेरा यह सम्मान किया है।

मैं उन विषयों पर कुछ कहने से पहले जो कि इस अधिवेशन में विचारार्थ पेश होंगे मैं आप से अनुमति चाहता हूं कि मैं कुछ और आरम्भिक विचार भी प्रकट करूं। आज हम तेरहवां वार्षिक अधिवेशन क्षत्रिय महासभा का कर रहे हैं जिस में हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न भागों के राजपूत सरदार उपस्थित हैं। विचार होता है कि

यह कौन सी बात है जिस से प्रति वर्ष ऐसे अधिवेशनों का होना सम्भव हो गया। क्या ऐसे जलसे पहले भी हुआ करते थे? राजपूत युद्ध करते थे, रक्त बहाते थे, अपनी जन्मभूमि व धर्म्म की रक्षा के लिये सहर्ष अपने प्राण अर्पण करते थे परन्तु क्या कभी दूर २ प्रान्तों से आकर स्वजातिहित की बातों का विचार करने और परस्पर का भेद भाव दूर करने के लिये नियमित रूप से एकत्रित हुआ करते थे? इस का उत्तर नकार में होना चाहिये क्योंकि पहले कभी भी ऐसे जलसे नियमानुसार नहीं हुए और महासभाओं के अधिवेशन अंगरेज़ी गवर्नमैण्ट के शान्तिमय राज्य में सम्भव हुए हैं। हम, जैसा कि आप सब जानते हैं, अंगरेजी सरकार के अत्यन्त कृतज्ञ हैं और जो लाभ ब्रिटिश राज्य में हम को प्राप्त हुए हैं उन का विवरण घण्टों किया जा सकता है। सारांश यह कि मैं इस राज्य को दैवी देन समझता हूं जो भारतवासियों को मूर्खता और अवनति से बचाने और सभ्यता के उच्चपद पर पहुंचाने के लिये, जो इन को एक समय प्राप्त था, मिला है।

आप को यह एक शुभअवसर प्राप्त हुआ है और आपको इससे बहुत लाभ उठाने की चेष्टा करनी चाहिये। ऐसा करने में आप को अपने राजराजेश्वर का राजभक्त उसी प्रकार रहना चाहिये जैसा कि अब तक रहे हैं। हमारी स्वर्गवासिनी महाराणी विक्टोरिया, जो सदैव अपने सुख व शान्तिमय राज्य के कारण स्मरणीय रहेंगीं, ने चिरकाल तक सफलता पूर्वक राज्य-शासन करके अपने ज्येष्ठ पुत्र हमारे वर्त्तमान राजराजेश्वर के हाथों में छोड़ा, जो कि अपनी माता के ही सिद्धान्तों पर चल रहे हैं। आप देशीय राज्याधीश्वरों व प्रजा वर्ग के उपकार का पिता तुल्य विचार रखते हैं। श्रीमान् ने जिन घोषणाओं द्वारा अपनी राजगद्दी पर बिराजने के समय तथा भारतवर्ष के ब्रिटिश राज्य के आधीन होने की पचाससाला यादगार में महाराणी विक्टोरिया की सन् ५८ की घोषणा सहित राजा महाराजाओं व सर्व साधारण भारतवासियों को स्मरण किया है उस से सब भारतवासियों को

बड़ा सन्तोष प्राप्त हुआ है। इस से नवीन आशा और उत्साह का संचार हुआ है। आप में से बहुतों को अपने राजराजेश्वरों के सद्गुण अवगत होंगे। जब आप भारतवर्ष में प्रिन्स आव वेल्स की हैसियत से सन् १८७६ ई० में भारतवर्ष में पधारे थे और आप ने इस देश के बहुत से भागों में परिभ्रमण किया था तो मुझे भी जम्मू में, जहां कि मेरे स्वर्गवासी पिता के मिहमान हुए थे, आप के दर्शन हुए थे और मैं इसलिये आप की सहानुभूति व प्रेम से जो प्रजा के प्रति है भली भांति परिचित हूं। भारत के इस विशाल राज्य पर आप बड़ी अवस्था में अधिकृत हुए हैं परन्तु आप अपने सुख का विचार न कर राज्यशासन के दायित्व को समझ कर उस में प्रवृत्त रहते हैं। केवल राज्यशासन की ओर ही आप का ध्यान नहीं रहता किन्तु मनुष्य जाति के उपकार का विचार भी आप के हृदय में रहता है। आप ने कई वार अन्य राज्यों से परस्पर के सम्बन्ध को दृढ़ करके बड़े बड़े युद्धों के भयंकर परिणामों से संसार की रक्षा की। श्रीमान् राजराजेश्वर के ज्येष्ठ राजकुमार प्रिन्स आव वेल्स, जिन्होंने अपने पूज्य पिता की भांति ३ वर्ष हुए इस देश को अपने भ्रमण से सन्मानित किया है, प्रशंसित राजराजेश्वर की भांति ही हम से सहानुभूति रखते हैं और उन में वे उदार व उच्च भाव व सर्वोच्च उमंगें वर्त्तमान् हैं जो कि संसार भर के अच्छे बादशाहों में पाई जाती हैं। यह सर्वप्रशंसित गुण उस परिवार के हैं जिनकी आधीनता हमको उचित है। और स्वभावतः हम भारतवासी बृटिश राज्य से अपना दृढ़ सम्बन्ध समझते हैं क्योंकि प्राचीन समय से भारतवासियों को यही शिक्षा दी जाती रही है कि राजा को देवता समान जानें और तन मन से उसके आधीन रहें। प्रत्येक राजपूत के हृदय में राजभक्ति सब से बढ़ कर जागृत रहती है। प्राचीन समय में राजपूत युद्ध-क्षेत्र में सब से बढ़ कर थे, अब भी भारतीय सेना में उनका गौरवान्वित भाग है। वह रक्त जो प्राचीन [illegible] उन में संचरित है और यदि [illegible] की सेवा के लिये

शस्त्र धारण करने और आत्मसमर्पण करने के लिये सदैव उद्यत हैं। राजपूत भ्रातृगण ! अंगरेजी राज्य ने इस देश में नवीन जीवन व सार्वजनिक उत्साह उत्पन्न किया है जो चारों ओर दृष्टिगति होता है। सब जाति अपनी अधोगति को जान कर अपनी उन्नति करने या उच्च पद प्राप्त करने में एक दूसरी का मुकाबिला कर रही हैं।

मुझे बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ कि यह जाति जिस में मुझे भी सम्मिलित होने का गर्व है इस अवसर पर असावधान नहीं है। यदि यह चुपचाप रहती तो मुझे आश्चर्य होता क्योंकि यह इतिहासप्रसिद्ध जाति है जो किसी समय बहुत उच्च और उन्नत दशा में थी। अब काम करने का अवसर है, दूसरे परिश्रम से क्या करने की चेष्टा कर रहे हैं केवल यही देखते रहने से इस समय हमको सन्तोष प्राप्त नहीं हो सकता। एक समय था कि राजपूतों के युद्ध कार्यों की प्रसिद्धता किसी और जाति की सुख्याति से कम न थी। वृटिश गवर्नमेंट के शांतिमय राज्य में राजपूतों का जो कर्त्तव्य है उसका विचार कर अपनी उन्नति के उपायों के अवलम्बन करने में प्रशंसनीय कार्य्य किया है। यदि ये अपने कर्त्तव्य पालन में दृढ़ रहेंगे तो वह सफलता प्राप्त करेंगे जो इनका नाम अधिक प्रसिद्ध करेगी।

क्षत्रिय महासभा के मुख्य उद्देश्य ३ हैं अर्थात् परस्पर मेल मिलाप, विद्या प्रचार और सामाजिक सुधार।

प्रथम उद्देश्य जो पारस्परिक मेल मिलाप का है यह प्रत्येक समूह को सफलता के साथ काम करने के लिये आवश्यक है। संसार में सब काम एकता से होते हैं और अनैक्य से बने काम बिगड़ जाते हैं। यदि कोई ऐसी बातें हैं जिन में राजपूत एक दूसरे से सहमत नहीं तो उन पर मिल कर विचार करना चाहिये और विरोध भाव दूर करना चाहिये। यदि राजपूतों के नेताओं में ही अनैक्य, वा विरोध होगा और जातीय उपकार का विचार न कर के छोटी छोटी बातों पर आग्रह करेंगे तो मेरी तुच्छ बुद्धि में वे [illegible] सब नहीं सकते। खेद के साथ सुना है कि [illegible] की महासभा में परस्पर

बलवन्तसिंह जी साहब सी. आई. ई. रईस अवागढ़ ने, जिन की मृत्यु का सब ही उपस्थित सुजनों को शोक है, उक्त स्कूल के लिये १० लाख रुपयों की वसीअ़त की है, जिस ने सदैव को उसकी बुनि दृढ़ कर दी है।

राजा उदयप्रतापसिंह जी साहब सी. एस. आई. भिनगाधिपति उदारता से राजपूत विद्यार्थियों के लिये एक और हाईस्कूल बनारस स्थापित किया है। ये बातें राजपूत जाति की जागृति के लिये संतो जनक हैं। हार्दिक भाव से यह आशा और प्रार्थना की जाती है अपनी जाति के उभय प्रशंसित महानुभावों ने जो आदर्श स्था किया है उसका अनुकरण यथाशक्ति अन्य अन्य महानुभाव भी जिस से सभ्यता-क्षेत्र में जातीय उन्नति हो सके। मुझे हर्ष पूर्व ज्ञात हुआ है कि क्षत्रिय शिक्षा फंड के बोर्ड के पास प्रायः२ लाख रु कालेज स्थापित करने के लिये हैं। यह द्रव्य प्रस्तावित कालेज के लि काफी नहीं है परन्तु मुझे आशा है कि राजपूत जाति इस आरंभि फंड की वृद्धि कर अपने महत् उद्देश्य की पूर्त्ति करेगी।

जातीय उन्नति के लिये उपर्युक्त बातें आवश्यक हैं। इस थो समय में, जब से कि महासभा स्थापित हुई है, राजपूतों ने जाती प्रेम से जिन जिन कार्य्यों को आरम्भ किया है यद्यपि उन में वे तत्प हैं परन्तु उनकी सफलता के लिये नेताओं की ओर से बड़े उद्योग क आवश्यकता है। जिससे शिक्षा को दूर तक फैलाने के लिये अधि साधन हस्तगत हो सकें। आत्मसहायता के समान कोई बात न है परन्तु अपने कालेजों, स्कूलों और बोर्डिंगहौसों के स्थापित करने औ वज़ीफ़ों के क़ायम करने का यत्न करते हुए भी राजपूतों को शिक्षा प्राि के उद्देश्य से मेरे विचार में सरकारी विद्यालयों से भी यथा आवश्यक ला उठाना चाहिये। सरकार ने उदारता से विद्या के द्वारों को कुशादगी खोल रक्खा है और सब जाति के लोगों के लिये समान सुविधाएं कर रक्खी हैं। राजपूत यद्यपि योद्धा-जाति है परन्तु इन दिनों शारी रिक बल से बढ़ कर मानसिक बल की क़दर है इसलिये सर्वसाधार

राजपूतों को उत्साहित किया जाय कि अपने बच्चों को मदरसों में पढ़ने भेजें। मैंने अपनी रियासत में राजपूतों के शिक्षा प्राप्त करने में उत्साह बढ़ाने के हेतु एक बोर्डिंगहाउस की मंज़ूरी दी है और वज़ीफे भी नियत किये हैं।

शेष आगामी बार।

सदाचार।

सदाचार हमारे जीवन की रक्षा के लिये वैसा ही आवश्यक है जैसा कि शरीररक्षण के लिये सुदृढ़ और सुखदायक वस्त्र प्रयोजनीय हैं। सदाचार से ही जीवन संरक्षित रह कर आनन्दमय बना रहता है। वस्त्रहीन मनुष्य जैसे अपने शरीर की रक्षा करने में असमर्थ होता है उसी प्रकार मनुष्य बिना सदाचार के भी अपनी जीवन यात्रा का कदापि सुख पूर्वक निर्वाह नहीं कर सकता। इस संसार में जितने मनुष्यों से इस विश्व के प्राणियों का कल्याण हुआ है प्रायः वह सब ही सदाचारी पुरुष थे। इतिहास के पृष्ठों में उनकी कीर्त्ति अक्षरों द्वारा रचित की गई है। उनकी कीर्त्तिलता आज भी हरी भरी बनी हुई है। अच्छे चाल चलन वाले स्त्री पुरुष ही दुनिया में कुछ काम कर जाते हैं। इन के सुकार्य्यों से और पुरुषों को भी सत्कार्य्यों का उत्साह होता है और वे भी सदाचार का पथ ग्रहण कर अपना जीवन सफल करते हैं। मनुष्य को सदाचार कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि सदाचारहीन मनुष्य भ्रष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

सदाचार द्वारा ही मनुष्य उदार बन कर अपनी जाति और देश की दशा की ओर ध्यान देता है। यह अपना है यह पराया है यह भेद भाव उसके हृदय से अलग होता है। वह संसार भर के श्रेयस्कर कार्य्य करने में अपने जीवन को दे डालता है। असदाचारी पुरुष अपनी स्वार्थपरता को दिन रात बढ़ाता रहता है। अपने स्वार्थ के वृत्त को वह इतना समेट कर तंग कर लेता है कि वहां पर सिवाय उस की आत्मीयता के और किसी की गुज़र ही नहीं हो सकती।

चरित्रहीन पुरुष अपने निकृष्ट सुख स्वार्थ के लिये अपने माता पित पुत्र कलत्र सब को छोड़ बैठता है। जीवन काल में चरित्रहीनत से बड़े बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं इसलिये सच्चरित्र या सदाचारी होना प्रत्येक मनुष्य का परम धर्म्म है। जीवन के वास्तविक सुख के लिये सदाचार ही प्रयोजनीय है।

जो देश, जाति या समाज का किसी तरह का उपकार करना चाहते हैं उनका सदाचारी बनना सब से पहिला कर्त्तव्य है। सदाचार ही मनुष्य में दृढ़ता और काम की शक्ति प्रदान करता है। चरित्र-हीन होने से स्वयं रुकना चहिये और आप सदाचारी बन कर अन्य-जनों को भी सदाचारी बनाने का यथाशक्ति प्रयत्न करना चाहिये। जाति का मूल सदाचार ही में स्थित रहता है। सदाचाररहित जाति नष्ट होने से कभी नहीं बच सकती। प्रकृति का यह अटल नियम है।

आज कल भारत में सदाचार शिक्षा का कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। स्कूलों व कालेजों में इस शिक्षा का नितान्त अभाव है। ऐसी दशा होने से हमारे युवा बड़ी भयानक अवस्था में हैं। इन सब बातों से व्यथित हो कर एक लेखक मार्मिकता से लिखता है "चाहे कोई कितना ही शिक्षित बन जाओ, चाहे कोई कितनाही उन्नत पद प्राप्त कर जाओ, चाहे कोई किसी जाति का नेता भी हो जाओ परन्तु यदि उसका चाल चलन उत्तम नहीं है तो वह जाति का उपकार करने वाला नहीं प्रत्युत जाति की हत्या करने वाला है।" सदाचार से गिरा मनुष्य सब से नीच मनुष्य है, उसके हाथों से कोई अच्छा काम बनना असम्भव है। क्या कोई शराब पीकर किसी मद्य निषेधक सोसाइटी (Temperance society) की तरफ से व्याख्यान देकर लोगों को मदिरा पान करना छुड़ा सकता है?

चरित्रहीन लोग कभी जाति का उद्धार नहीं कर सकते। धर्म्म ही सब की रक्षा करता है। धर्म्म को त्याग कर कोई देश-उपकार या जाति-उपकार नहीं कर सकता। चाहे कोई कितना ही योग्य क्यों न हो, चाहे यूरोप का दर्शन शास्त्र और राजनीति का पूरा

[illegible] हो [illegible] और [illegible]
[illegible] किसी काम का भी
[illegible] नहीं कर
[illegible] होता था।
[illegible] । [illegible] हम से [illegible] है।
[illegible] कि लोग कर्महीन और
[illegible] । एक और [illegible] दम उन पोलीटि-
कल [illegible] है। पवित्रता, सत्यता, और उदा-
रता के [illegible] होती है। जिन मनुष्यों में यह गुण
[illegible] हैं वही जाति के उद्धारक हैं, चाहें वह राजनैतिक (पोलि-
टिकल) बातों पर बहस करना और नासिक (न्याय शास्त्र) की
[illegible] भी जानते हों। निस्संदेह सदाचार ही
[illegible] की जड़ है।

जिस मनुष्य को झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है, जिस के कर्म व वचन एक से नहीं हैं, जो अपने छोटे २ घरेलू झगड़ों में असत्य बोलता है क्या वह किसी समुदाय का नेता या किसी समाज का पदाधिकारी होकर सत्य बोल सकने का दावा कर सकता है? क्या वह प्लेटफार्म पर खड़ा होकर अपने को नया आदमी बना लेगा? क्या वह अपने आचार रूपी वस्त्रों को दिन में तीन बार बदल सकेगा? जो अपने घरेलू जीवन में सत्य व्यवहार नहीं कर सकता है क्या वह सार्वजनिक जीवन व्यतीत करने में सत्यता का व्यवहार कर सकता है? कदापि नहीं। क्या हम एक साथ किसी आदमी की पूजा और उसका अनादर कर सकते हैं? जाति का नेता बनने से हम अपने पुत्रों को उसके सम्मान करने का अनुरोध करें तथा उसके अनाचारी होने से पुत्रों को उसके कुसंग से बचे रहने का उपदेश करें ये दोनों बातें एक साथ कैसे हो सकती हैं? जो सत्य सिद्धान्तों का प्रचार करता हो और उन के अनुसार आप भी व्यवहार करता है अर्थात् जो मन से, वचन से और कर्म्म से सत्य का ही अनुकरण कर सके वही नेता होने योग्य है।

सदाचार की हीनता ही ने हमारे घरों को सुखहीन कर दिया है। गृहस्थ का जीवन आनन्द से व्यतीत होना जाति के अभ्युदय का मुख्य लक्षण है। जिस जाति ने अपने गृहस्थ-जीवन का सुख खो दिया वह जाति उन्नतिशील जातियों के बीच नहीं ठहर सकती। सदाचार मानव जाति की आत्मा है। व्यापार, राजनीति, साहित्य और गार्हस्थ्यजीवन उसका शरीर है। सदाचारी पुरुषों में ही सच्चा प्रेम होता है और मेल जोल बढ़ता है। मेल मिलाप का कारण भी सदाचार ही है। जो सदाचार की ओर से असावधान होकर अपनी उन्नति करने के प्रयासी हैं वे उन मनुष्यों के समान हैं जो किसी मनुष्य की छाया द्वारा उसका पकड़ना मान लेते हों। बिना सदाचार की उन्नति के सब उन्नतियां निस्सार हैं।

जिस मनुष्य का चाल चलन ठीक नहीं है वह अपने साथियों पर कुछ प्रभाव नहीं डाल सकता। सत्य सिद्धान्त की बात भी चरित्रहीन मनुष्य के मुख से बोली जाने से अपना प्रभाव खो बैठती है जैसे गङ्गाजल मोरी में बह जाने से अपनी पवित्रता को खो बैठता है। जिसका जीवन हमारे हृदय में श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकता उस का शिक्षा देना हमारे लिये निष्फल है। उपदेशक को पूरा सदाचारी बनना जरूरी है चाहे वह किसी समुदाय में काम करे। सदाचारी उपदेष्टा का ही प्रभाव श्रोताओं पर पड़ा करता है।

कुछ अविचारशील पुरुष हमारे सदाचार पर इतना अधिक ज़ोर देने पर हंस भी सकते हैं। वह चाहें हंसें परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि बड़े कामों के करने वाले सब स्थानों में सदाचारी पुरुष ही हुए हैं। राम, भीष्म, प्रताप, शिवाजी सदाचारी थे। क्रामवेल ने अपनी सेना में से मद्यप और चरित्रहीन पुरुषों को निकाल दिया था। सिक्ख भी अपने कीर्तिकाल में पवित्रता से जीवन व्यतीत करते थे। बाबर ने राना सांगा से युद्ध करने से पूर्व शराब पीने की क़सम खाई थी। अंगरेज उच्च पदाधिकारियों का चरित्र सब पर विदित ही है। सदाचारी ही सदैव विजय प्राप्त करते हैं।

किसी देश के उद्धार के लिये, किसी जाति के उत्थान के लिये, किसी भी राज्य की दृढ़ता के लिये मनुष्यों के सदाचारी होने की बड़ी आवश्यकता है। यद्यपि भारत एक समय सदाचार और सच्चरित्रता का संसार भर के लिये आदर्श था परन्तु अब हम में अनेक अवगुण वास करने लगे हैं। हमारा कर्त्तव्य है, हमारा धर्म और सब से बड़ा प्रत्येक स्वजाति-हितैषी या स्वदेश-हितैषी के लिये यही काम है कि वह स्वजाति या स्वदेश की उन्नति के लिये अपने जीवन से दूसरों को सदाचार की शिक्षा देवे। जीवन और मरण दोनों के लिये सदाचार ही एक मात्र महौषधि है।

महाभारत विषयक निवेदन।

भारतवर्ष के क्षत्रिय राजाओं के प्रधान और प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ केवल दो हैं अर्थात् वाल्मीकि मुनि कृत रामायण और महर्षि व्यास लिखित महाभारत। रामायण और महाभारत दोनों ग्रन्थ संस्कृत में हैं और बहुत बड़े हैं। इन के जो हिन्दी अनुवाद छपे हैं वे सर्वसुलभ मूल्य पर नहीं मिलते और सम्पूर्ण महाभारत का आद्योपान्त पढ़ना तथा सब ऐतिहासिक विवरण को समझना और स्मरण रखना भी कठिन है इसलिये हम ने महाभारत की ऐतिहासिक मूल कथा का सार सरल हिन्दी भाषा में लिखा है। हम चाहते हैं कि 'राजपूत में इस प्राचीन चन्द्रवंशी क्षत्रियों के इतिहास को इतिहासप्रेमी पाठकों के मनोरंजनार्थ तथा सर्वसाधारण क्षत्रियों के उपदेशार्थ क्रमशः प्रकाशित करें। अभी हम इसे राजपूत के प्रत्येक अङ्क के चार २ पृष्ठ में छापते हैं, यदि हमारे पाठकों की इच्छा होगी तो दो एक मास पश्चात् प्रति अंक में आठ आठ पृष्ठ छापने का प्रबन्ध करेंगे। इस अंक में चन्द्रवंशी राजाओं की जो वंशावली छपी है सम्भव है कि वह बहुधा पाठकों को कुछ मनोरंजक न हो, परन्तु आगे जो ऐतिहासिक वृत्तान्त छापेंगे वह अवश्य ही रुचिकर होगा।

जब हमने वाल्मीकीय रामायण का सार सीता जी के जीवन-चरित्र के रूप में राजपूत में छापना आरम्भ किया था तो हमारे पाठकों ने उस को बहुत पसन्द किया था और पश्चात् राजपूत से सम्पादकीय सम्बन्ध परित्यक्त करने पर बहुधा पाठकों के अनुरोध से ही उस को यथासम्भव शीघ्र पुस्तकाकार छपा दिया था। हम आशा करते हैं कि उस वाल्मीकीय रामायण के सार की भांति इस महाभारत-सार को भी हमारे पाठक पसन्द करेंगे क्योंकि रामायण जैसे सूर्य्यवंशी क्षत्रियों के पूर्वजों का प्रधान ऐतिहासिक ग्रन्थ है वैसे ही प्राचीन चन्द्रवंशी क्षत्रियों का महाभारत है। महाभारत की सम्पूर्ण ऐतिहासिक कथाएँ बड़ी ही उपदेशजनक और रोचक हैं। इस में भीष्म पितामह और युधिष्ठिर आदि आदर्श क्षत्रिय महात्माओं के अनुकरणीय धर्म्मकार्य्यों का जैसा विवरण उपदेशपूर्ण है वैसे ही दुर्योधन के दुस्वभाव व दुष्कर्म्म की बातें, जिन के कारण महाभारत युद्ध हो कर क्षत्रियों का सर्वनाश हुआ, उपदेशजनक हैं। उस समय के असाधारण वीर, पराक्रमी और बलशाली क्षत्रिय महारथी योद्धाओं के युद्ध का वर्णन भी पढ़ने योग्य होगा। कुन्ती, द्रौपदी व गान्धारी आदि क्षत्रिय महिलाओं के चरित्र स्त्रियों के लिये व अभिमन्यु आदि के बालचरित्र क्षत्रिय बालकों के लिये शिक्षाजनक होंगे। सारांश यह कि महाभारत का यह पुरावृत्त आबाल वृद्ध वनिता सबही के लिये रोचक व उपदेशजनक होगा। जिस दुर्योधन व दुःशासन आदि के दुस्वभाव, दुराग्रह व दुष्कर्म्मों के कारण सर्वसंहारी महाभारत युद्ध हुआ उनके से दुष्टस्वभाव व दुश्चरित्र पुरुष आज भी इस क्षत्रिय जाति में कम नहीं हैं। हमारी ऐसे महापुरुषों से प्रार्थना है कि आप की और आप की। क्षत्रिय जाति की बहुत कुछ अधोगति हो चुकी अब तो आप अपने स्वभाव व चरित्र सुधार की ओर ध्यान दीजिये। महाभारत में दुर्योधन आदि के चरित्रों को पढ़ कर सम्भव है कि ऐसे लोग भी कुछ शिक्षा ग्रहण करें तथा अन्य लोग समझ सकेंगे कि पारिवारिक विरोध कैसा हानिकारी होता है और एक २ दुष्ट पुरुष से कहां तक

किसी जाति या देश को हानि पहुंच सकती है ।

क्षत्रियों के अधःपतन का आरम्भ जिस महाभारत युद्ध से हुआ है वह केवल दुर्योधन के अनुचित लोभ और दुराग्रह से हुआ था । जो पाण्डव सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी थे उन्होंने पारिवारिक विरोध को शान्त करने के विचार से अंत में केवल ५ ही गांव पांचों भाइयों के लिये मांगे परन्तु दुर्योधन ने सब के समझाने पर भी श्रीकृष्ण को यही उत्तर दिया था कि ५ गांव तो क्या सुई की नोक बराबर भी भूमि न दूंगा । परिणाम यह हुआ कि सब भाई, भतीजों, पुत्रों, व अन्य आत्मीय जनों सहित आप मारा गया और लाखों दूसरे मनुष्यों का नाश-घात कराया । १८ दिन तक महाभारत युद्ध हुआ जिस में बड़े २ शूर वीर और विद्वान् योद्धा बड़े पराक्रम के साथ युद्ध करते हुए मारे गये । कौरव व पांडव दोनों पक्ष की १८ अक्षौहिणी सेना में से केवल ६ योद्धा पांडव दल के और ३ योद्धा कौरव दल के बचे थे । क्षत्रियों के अधःपतन का सूत्रपात महाभारत युद्ध से ही हुआ है, इस से पहिले क्षत्रिय वर्ण पूर्ण उन्नत दशा में था, परन्तु उस समय से अब तक इन का नीचे को गिराव होता ही चला जाता है, अभी तक इनकी अधोगति की स्थिति का अवसर नहीं प्राप्त हुआ, न जाने परमात्मा को इनकी और क्या हीन अवस्था स्वीकार है ।

महाभारत ।

आदि पर्व ।

चन्द्रवंशी क्षत्रियों के आदि पुरुष पुरुरवा हैं । पुरुरवा के ६ पुत्र हुए थे; उन के नाम आयु, धीमान्, अमावसु और दृढ़ायु हैं । आयु के नहुष, वृद्धशर्मा, रजी, गय और अनेना हुए । नहुष बड़े धीमान् और पराक्रमी थे । इन्होंने उत्तम रीति से राज्य-शासन और प्रजा-पालन किया था । यह अपने तेज, बल और विक्रम से देवों पर विजय प्राप्त कर इन्द्र के पद पर आरूढ़ हुए थे । इनके याति, ययाति, संयाति,

आयाति, अयति और ध्रुव ६ पुत्र हुए। यति योग साधन करके प्रसिद्ध मुनि हुए थे। ययाति सम्राट् हुए। ये सम्पूर्ण प्रजा पर दयाभाव प्रकट करते रहे और धर्मानुसार राज्यशासन व प्रजापालन कर अनेक यज्ञ किये। ययाति के दो रानी थीं। शुक्र की पुत्री देवयानी और विश्वपर्वा की पुत्री शर्म्मिष्ठा। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्वसु और शर्म्मिष्ठा के गर्भ से द्रुह्यु, अनु और पुरु उत्पन्न हुए थे। आगे ज्येष्ठ पुत्र यदु की सन्तान यादव और पुरु की पौरव कहलाई। राजा के जरावस्था को प्राप्त होने पर भी विषय-भोग से तृप्ति न हुई थी अतः राज्यशासन अपने सब से छोटे पुत्र पुरु को सौंप कर आप विषय-भोग में लिप्त हो गये और जब अनेक वर्षों तक अपनी दोनों रानियों के साथ विषय विलास में निरत रहने पर भी भोग से उनकी तृप्ति न हुई तब उन्होंने एक दिन इस आशय के श्लोक पढ़े, कि जिस प्रकार अग्नि में घृत छोड़ने से आग न बुझ कर बढ़ती ही जाती है, उसी प्रकार काम्य वस्तुओं के उपभोग से काम निवृत्त न होकर बढ़ जाया ही करता है। रत्नों से परिपूर्ण पृथ्वी, सुवर्ण, पशु और स्त्री ये सब वस्तु एक मनुष्य के भोग में आने से भी पूरी तृप्ति नहीं हो सकती यह विचार कर शान्ति का आश्रय लेना ही उचित है। महाराजा ययाति ने इस प्रकार, काम की तुच्छता पर विचार कर पुरु को राज्याधिकार देकर कहा कि तुम्हीं से मैं पुत्रवान् हुआ हूं; तुम्हीं मेरे वंशतिलक पुत्र हो, यह राजवंश तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगा। ययाति पुरु को राज्याभिषिक्त करने के अनन्तर वाणप्रस्थ आश्रम धारण कर भृगुतुङ्ग पर्वत पर चलेगये।

पुरु बड़े यशस्वी राजा हुए हैं। इन के पीछे इनके पौरव वंश में भी बड़े २ प्रतापी राजा हुए हैं जिनका वंशविवरण यथाक्रम नीचे लिखा जाता है।

पुरु की भार्य्या कौशल्या से जन्मेजय ने जन्म लिया। जन्मेजय ने ३ बार अश्वमेध और एक बार विश्वजित यज्ञ किया था। अन्त में इन्होंने वाणप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया। था। इनके माधव की पुत्री अनन्ता नाम की रानी से प्राचिन्वान् नामक पुत्र हुआ। माची (पूर्व)

[illegible] इनका नाम प्राचिन्वान् हुआ था। प्राचिन्वान् के अश्मकी नाम की रानी से संयाति की उत्पत्ति हुई। संयाति ने दृषद्वान् की कन्या वराङ्गी से विवाह किया था, उसके गर्भ से अहंयाति ने जन्म लिया था। अहंयाति ने कृतवीर्य की कन्या भानुमती का पाणिग्रहण किया जिस के गर्भ से सार्वभौम की उत्पत्ति हुई। सार्वभौम ने कैकयराज को जीत कर उनकी पुत्री सुनन्दा को हर लिया। पीछे उससे व्याह विवाह करने पर उसके गर्भ से जयत्सेन का जन्म हुआ। जयत्सेन ने विदर्भ राजकुमारी सुश्रुवा का पाणिग्रहण किया, उससे अवाचीन का जन्म हुआ। अवाचीन के वैदर्भी मर्य्यादा नाम्नी से अरिह का जन्म हुआ। इसी प्रकार अरिह से महाभौम, महाभौम से अयुतनायी, अयुतनायी से अक्रोधन, अक्रोधन से देवातिथि, देवातिथि से अरिह, अरिह से अंगराज, अंगराज से ऋक्ष, ऋक्ष से मतिनार, मतिनार से तंसु, तंसु से ईलिन, ईलिन से दुष्यन्तादि५ पुत्रों ने जन्म लिया। राजा दुष्यन्त ने विश्वामित्र की परम रूपवती कन्या शकुन्तला विवाही थी, उसी से भरत का जन्म हुआ, जिन के नाम से आज तक यह देश भारतवर्ष या भरतखंड प्रसिद्ध है और इस ग्रन्थ का नाम भी महाभारत भरत की सन्तान, जो भारत कहलाती है, का वर्णन होने के कारण हुआ है। भरत के पहिले ८ अयोग्य पुत्र हुए जिनका वध किया गया। पश्चात् काशिराज सर्वसेन की पुत्री सुनन्दा के गर्भ से भूमन्यु की उत्पत्ति हुई और यही भरत के उत्ताधिकारी हुए। भूमन्यु के सुहोत्र और सुहोत्र के हस्ती नामक सुपुत्र हुए। महाराज हस्ती ने निज नाम से हस्तिनापुर बसाया। पीछे यही हस्तिनापुर सब पुरुवंशी राजाओं की राजधानी रहा।

राजा हस्ती के पीछे विकुण्ठन, अजमीढ़, संवरण, कुरु (जिन की सन्तान कौरव प्रसिद्ध हुई) विदूरथ, अनश्वा, परीक्षित, भीमसेन, प्रतिश्रवा और प्रतीप राजा हुए। प्रतीप के ३ तीन पुत्र देवापि, शान्तनु और वाह्लीक हुए। देवापि बाल्यावस्था में ही वन को चले गये, अतः शान्तनु राजा हुए। शान्तनु ने गंगा से विवाह किया। रानी

आयाति, अयति और ध्रुव ६ पुत्र हुए। यति योग साधनकरके ब्रह्म मुनि हुए थे। ययाति सम्राट् हुए। ये सम्पूर्ण प्रजा पर दयाभाव प्रकट करते रहे और धर्म्मानुसार राज्यशासन व प्रजापालन कर अनेक यज्ञ किये। ययातिके दो रानी थीं। शुक्रकी पुत्री देवयानी और विरूपर्वाकी पुत्री शर्म्मिष्ठा। देवयानी के गर्भ से यदु और तुर्व्वसु और शर्म्मिष्ठा के गर्भ से द्रुह्यु, अनु और पुरु उत्पन्न हुए थे। आगे ज्येष्ठपुत्र यदु की सन्तान यादव और पुरु की पौरव कहलाई। राजा के जरावस्था को प्राप्त होने पर भी विषय-भोग से तृप्ति न हुई थी अतः राज्यशासन अपने सब से छोटे पुत्र पुरु को सौंप कर आप विषय-भोग में लिप्त हो गये और जब अनेक वर्षों तक अपनी दोनों रानियों के साथ विषय विलास में निरत रहने पर भी भोग से उनकी तृप्ति न हुई तब उन्होंने एक दिन इस आशय के श्लोक पढ़े, कि जिस प्रकार अग्नि में घृत छोड़ने से आग न बुझ कर बढ़ती ही जाती है, उसी प्रकार काम्य वस्तुओं के उपभोग से काम निवृत्त न होकर बढ़ जाया ही करता है। रत्नों से परिपूर्ण पृथ्वी, सुवर्ण, पशु और स्त्री ये सब वस्तु एक मनुष्य के भोग में आने से भी पूरी तृप्ति नहीं हो सकती यह विचार कर शान्ति का आश्रय लेना ही उचित है। महाराजा ययाति ने इस प्रकार काम की तुच्छता पर विचार कर पुरु को राज्याधिकार देकर कहा कि तुम्हीं से मैं पुत्रवान् हुआ हूं; तुम्हीं मेरे वंशतिलक पुत्र हो, यह राजवंश तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगा। ययाति पुरु को राज्याभिषिक्त करनेके अनन्तर वाणप्रस्थ आश्रम धारण कर भृगुतुङ्ग पर्वत पर चलेगये।

पुरु बड़े यशस्वी राजा हुए हैं। इन के पीछे इनके पौरव वंश में भी बड़े २ प्रतापी राजा हुए हैं जिनका वंशविवरण यथाक्रम नीचे लिखा जाता है।

पुरु की भार्य्या कौशल्या से जन्मेजय ने जन्म लिया। जन्मेजय ने ३ वार अश्वमेध और एक वार विश्वजित यज्ञ किया था। अन्त में इन्होंने वाणप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया था। इनके माधव की पुत्री अनन्ता नाम की रानी से प्राचिन्वान् नामक पुत्र हुआ। प्राची (पूर्व)

दिशा में विजय प्राप्त करने के कारण इनका नाम प्राचिन्वान् हुआ था। प्राचिन्वान् के अश्मकी नाम की रानी से संयाति की उत्पत्ति हुई। संयाति ने दृषद्वत की कन्या वराङ्गी से विवाह किया था, उसके गर्भ से अहंयाति ने जन्म लिया था। अहंयाति ने कृतवीर्य्य की कन्या भानुमति का पाणिग्रहण किया जिस के गर्भ से सार्वभौम की उत्पत्ति हुई। सार्वभौम ने केकयराज को जीत कर उनकी पुत्री सुनन्दा को हर लिया। पीछे उसके साथ विवाह करने पर उसके गर्भ से जयत्सेन का जन्म हुआ। जयत्सेन ने विदर्भ राजकुमारी सुश्रुवा का पाणिग्रहण किया, उस से अवाचीन का जन्म हुआ। अवाचीन के वैदर्भी मर्य्यादा भार्या से अरिह का जन्म हुआ। इसी प्रकार अरिह से महाभौम, महाभौम से अयुतनायी, अयुतनायी से अक्रोधन, अक्रोधन से देवातिथि, देवातिथि से अरिह, अरिह से अंगराज, अंगराज से ऋच, ऋच से मतिनार, मतिनार से तंसु, तंसु से ईलिन, ईलिन से दुष्यन्तादि५ पुत्रों ने जन्म लिया। राजा दुष्यन्त ने विश्वामित्र की परम रूपवती कन्या शकुन्तला विवाही थी, उसी से भरत का जन्म हुआ, जिन के नाम से आज तक यह देश भारतवर्ष या भरतखंड प्रसिद्ध है और इस ग्रन्थ का नाम भी महाभारत भरतकी सन्तान, जो भारत कहलाती है, का वर्णन होने के कारण हुआ है। भरत के पहिले ८ अयोग्य पुत्र हुए जिनका वध किया गया। पश्चात् काशिराज सर्वसेन की पुत्री सुनन्दा के गर्भ से भुमन्यु की उत्पत्ति हुई और यही भरत के उत्ताधिकारी हुए। भुमन्यु के सुहोत्र और सुहोत्र के हस्ती नामक सुपुत्र हुए। महाराज हस्ती ने निज नाम से हस्तिनापुर बसाया। पीछे यही हस्तिनापुर सब पुरुवंशी राजाओं की राजधानी रहा।

राजा हस्ती के पीछे विकुण्ठन, अजमीढ़, संवरण, कुरु (जिन की सन्तान कौरव प्रसिद्ध हुई) विदूरथ, अनश्वा, परीक्षित, भीमसेन, प्रतिश्रवा और प्रतीप राजा हुए। प्रतीप के ३ तीन पुत्र देवापि, शान्तनु और वाह्लीक हुए। देवापि बाल्यावस्था में ही वन को चले गये, तब शान्तनु राजा हुए। शान्तनु ने गंगा से विवाह किया। इन्हीं

गंगा के गर्भ से देवव्रत, जिन का नाम पीछे भीष्म प्रसिद्ध हुआ, ने जन्म लिया। इन्हों ने सांगोपांग वेदों का अध्ययन करते हुए शस्त्रविद्या में पूर्ण अभ्यास किया था। उस समय इन के समान रणकुशल और पराक्रमी योद्धा एक भी न था। सब विद्याओं में जैसे पारंगत थे वैसे ही सत्यशील और चरित्रवान् भी थे। राजा ने युवराज पद के योग्य देख कर युवावस्था में इन का यौवराज्याभिषेक किया। युवराज पद प्राप्त होने पर देवव्रत प्रजा पालन में राजा को बहुत कुछ सहायता देने लगे। क्रमशः

माता का पुत्री को उपदेश।*

बेटी! कल तुम मुझ से विदा होगी। तुम्हें अलग करते मुझे दुःख तो होता है परन्तु बेटी संसार की यही चाल है। हमारे घर से तुम्हारा इतना ही सम्बन्ध था। विवाह होते ही तुम दूसरे घर की हो गईं। अब तुम मेरी जगह अपनी सास को और अपने पिता की जगह अपने सुसर को समझना। सुशीला लड़की वही है जो अपने सासरे में पहुंच कर वहां के सब लोगों का मन अपने गुणों से मोहित कर ले। जो चतुर होती हैं उन की माताओं की भी प्रशंसा हो जाती है और जो गुणहीना और दुश्शीला लड़की होती हैं वे सुसराल में जा कर अपने पीहर वालों का नाम धराती हैं। बेटी! मैं ने तुम्हें सब आवश्यक बातों की शिक्षा दी है और भगवान की कृपा से तुम पढ़ लिख भी गई हो परन्तु फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि तुम्हें अब किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।

---

* बिना स्त्रियों के विचारों के सुधरे कभी किसी जाति का सामाजिक सुधार हो नहीं सकता इसलिये ऐसे स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी लेख जिनसे कम अवस्था की स्त्रियों व लड़कियों के विचार सुधरें हम छापना आरम्भ करते हैं। प्रत्येक अंक में एक लेख विशेषतः स्त्रियों के लिये छापा जाया करेगा।

[इस] सम्बन्धी बातों का कुछ अनुभव न होने से तुम अभी मेरे लिये [अ]बोध बालिका के तुल्य ही हो इस से आज तुम्हें विदा करने से [प]हले वे सब बातें फिर दुहराना चाहती हूं जिन की मैं ने समय [स]मय पर तुम्हें शिक्षा दी है।

मधुर भाषण में कुछ खर्च तो नहीं होता परन्तु उस के बदले में वे २ चीजें मिल जाती हैं जो रुपयों के खर्च से भी बहुधा नहीं मिलतीं। किसी विद्वान् का कथन है कि जो मधुरभाषी है उसके लिये देश परदेश सब एकसा ही है। ऐसा आदमी कहीं भी चला जावे सदैव सुख से रहता है। जो मीठे बचन नहीं बोल सकता, चाह विद्वान् हो चाहे धनवान् कभी बड़ाई को प्राप्त नहीं होता। मधुर बचन बोलने से गैर अपने हो जाते हैं और कटु बचनों से अपने गैर होजाते हैं। जो आत्मीय जनों से मधुर बचन बोलते हैं वे सुख शान्ति का बीज बोते हैं। बेटी! कल जब तुम यहां से विदा होगी तो तुम्हें यह जान पड़ेगा कि मैं अन्य लोगों में अन्य स्थान को जा रही हूं। यद्यपि वह स्थान इस समय प्रदेश जैसा है परन्तु तुम्हारे जीवन-सर्वस्व उसी स्थान में वास करते हैं इसलिये अब तुम्हारा प्रिय स्थान वही है। तुमको समझना चाहिये कि तुम्हारे माता पिता ने तुम्हारे सुख समृद्धि के लिये वह स्थान खोजा है। बेटी अब तुम समझदार हो इससे हम दोनों तुम को सुखी देखने के लिये तुम्हे विदा करते हैं। बेटी का पीहर तो एक पाठशाला के समान है और श्वशुर-गृह ही असली घर है। जो पीहर में अच्छी शिक्षा नहीं पाती वह सासरे में आनन्द से नहीं रह सकती हैं। प्रत्येक माता का यह धर्म्म है कि अपनी पुत्री को यथाशक्ति गुणवती बनावे और प्रत्येक पुत्री का धर्म्म है कि पीहर में रह कर ऐसी अच्छी २ बातें सीखे जिससे पति-गृह में सब प्रसन्न रहें।

अब बेटी पति-गृह को ही अपना सच्चा घर समझना। सुसराल के सब मनुष्यों से आत्मीय जनों के तुल्य प्रेम व्यवहार करना। वहां पहुंचने पर तुम्हें सास सुसर के दर्शन होंगे, पति-परिवार के स्त्री पुरुष मिलेंगे तथा पति देव के चरण कमलों में आश्रय मिलेगा। सास तुम्हारी केवल

माता ही का दर्जा नहीं रखतीं किन्तु वह मुझ से अधिक माननीया हैं। वह तुम्हारे जीवन-सर्वस्व प्राणपति की माता हैं। तुम्हारे माननीय की पूजनीया हैं तुम मुझसे जितना प्यार करती रही हो उस से अधिक उन से प्यार करना। सच्चे हृदय से किसी को प्रेम करने से बड़ा आनन्द मिलता है। ससुर तुम्हारे पतिदेव के पूज्य पिता हैं इसलिये तुम्हारे भी पूजनीय हैं, उन को सब प्रकार सन्तुष्ट रखना। नौकरों व टहलनी आदि से कोमल वचन बोलना और सद्व्यवहार करना। सास के नित्य प्रातःकाल चरण छूना और उन के काम काज करने के लिये सदैव उद्यत रहना। नई बहू का जरा सा आलस्य भी बड़ नाम धराता है सो बेटी किसी काम में आलस्य न करना। तुम सौ बात की एक ही बात बताए देती हूं कि जितना तुम सास ससु की सेवा कर लोगी उतना ही भविष्य में अपने लिये सुख शान्ति लाभ करने का उपाय कर लोगी। बड़ों की सेवा करने का फल भी बड़ा होता है। बेटी! तुम पढ़ चुकी हो कि सब देशों की ललनाओं में भारत महिलाओं का अधिक महत्व है। इस का कारण हमारे देश की स्त्रियों का अपने पतियों के प्रति विशेष प्रेम ही है। इस पातिव्रत धर्म्म के पालन करने में भारत की स्त्रियां क्या नहीं कर सकीं? तन, मन, धन पति प्रेम के आगे तुच्छ समझती रहीं हैं। इसका प्रभाव हिन्दू समाज पर ऐसा पड़ा कि जब और देशों में स्त्रियों को केवल मनुष्य के लौकिक जीवन की सहयोगिनी माना है तब भारतीय महिलाएं पतिकी अर्द्धाङ्गिनी मानी जाकर लोक परलोक दोनों को सँभालने वाली समझी जाती रहीं हैं। भारत में पति पत्नी का सम्बन्ध केवल सांसारिक सुख के लिये ही नहीं किन्तु परमार्थ साधन के लिये भी है। उत्तम स्त्रियों का यही धर्म्म है कि जिस प्रकार अपने पति प्रसन्न रहें वही काम करें। पति ही उन के एक मात्र आराध्य देव और ईश्वर तुल्य पूजनीय हैं। स्व० बां०

क्रमशः

प्रतिपत्र।

बिहारी क्षत्रियों की शोचनीय दशा।

परम हर्ष का विषय है कि भारत की समस्त जातियों की उन्नति उनकी जातीय सभाओं द्वारा हो रही है। उन सब जातियों में सभा द्वारा एकता, सुकर्म्मरता, एवं भ्रातृस्नेह इत्यादि गुणों का प्रचार हो रहा है। किन्तु हाय! शोक का स्थान है कि हमारे क्षत्रिय भाइयों के हृदय में स्वजातीय प्रेम स्थापित नहीं होता। अन्यान्य प्रान्तों के क्षत्रिय भाइयों की ऐसी शोचनीय दशा नहीं है जैसे कि बिहार प्रान्त के क्षत्रिय भाई हीनावस्था को प्राप्त हैं क्योंकि जातीय उन्नति जैसे उत्तम कार्य्य में अग्रसर न होकर सदैव दुःखद व्यवहार में प्रवृत्त रहा करते हैं। जैसा कि जातीय हित और उत्साह माननीय मुख्तार बाबू ललित नारायणसिंह जी पूर्निया का है और जिस हेतु मैं मुख्तार साहिब को अनेकानेक धन्यवाद देता हूं यदि ऐसा ही जातीय प्रेम बिहार प्रान्त के अन्य अन्य भ्रातृगण में, जो इस समय वकील मुख्तार हैं या राजकीय उच्च पदों पर सुशोभित हैं, या बड़े बड़े जिमीन्दार हैं, होता तो बिहार की समस्त क्षत्रिय जाति आप-त्तियों से दूर होकर स्वर्गीय सुख को उपलब्ध करती। खेद है कि कितने ही उच्च स्थानीय भाइयों की लालसा है कि अपने गरीब भाइयों तथा निज कुल के भाई भतीजों को अपने ऐश्वर्य्य के जूतों की एड़ से कुचलें और इसी में अपनी मान मर्य्यादा समझते हैं। ऐसे ऐसे व्यवहार बर्ताव से पारिवारिक प्रेम के बजाय पारस्परिक द्वेष उत्पन्न कर अपने कुल के कोमल बच्चों के हृदय में शुरू से ही ईर्ष्या द्वेष के भाव उत्पन्न करते हैं। कलंकित चन्द्रमा तुल्य होकर चकोर रूपी गरीब भाइयों के हृदय में दुःख उत्पन्न करते हैं। ऐसी अवस्था में बिहारी क्षत्रिय दुःख व दारिद्र्य में क्यों न हों?

इस बार के सोनपुर के मेला में क्षत्रिय प्रान्तिक सभा स्थापन करने के उपलक्ष में जो सभा की गई थी उसका वर्णन न करना ही

अच्छा है। खास सोनपुर के क्षत्रिय भाई ही सभा तक नहीं पहुंच सके। ३१ वीं दिसम्बर के 'राजपूत' से प्रकट होता है कि सोनपुर सभा में ४०० व ५०० क्षत्रिय भाइयों की उपस्थिति हुई थी। परन्तु ध्यान देने की बात है कि इतने उपस्थित भाइयों में केवल १५ क्षत्रिय भाई चन्दा देने को आल्हादित हुए। जिस दिये हुए द्रव्य का जोड़ २१॥।) है। इस से सर्व साधारण को ज्ञात हो सक्ता है कि विहारी क्षत्रिय भाइयों में जातीय उत्साह तथा प्रेम कितना और कैसा है।

श्री धर्म्मदेव नारायणसिंह
मुजफ्फरपुर (तिर्हुत)

हरदोई जिले में सफलता।

एक वर्ष में ही हरदोई की क्षत्रिय सभा ने आशातीत सफलता प्राप्त कर ली। कई विवाह महासभा के मन्तव्यानुसार हुए। रंडी भांड़ आतिशबाजी आदि का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर दिया गया। अब क्षत्रिय विद्यार्थियों के विद्याध्ययन के लिये दृढ़ता के साथ उद्योग हो रहा है। "क्षत्रिय बोर्डिंगहाउस" के लिये धरती का प्रबन्ध हो गया। ५ मार्च १९१० को नींव भी रख दी जायगी। वर्ष के भीतर यह उद्योग कम नहीं है। इस में यदि हमारे श्रीमान् राजा रुक्मांगदसिंह साहब सहायता न देते तो क्या कभी सम्भव था या कि यह दिन हमें देखने को प्राप्त होता? क्षत्रिय जातिहितैषियों में श्रीमान् का नाम भी उच्च स्थान पावेगा।

मैं प्रस्ताव करता हूं कि बोर्डिंगहाउस "रुक्मांगद क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस" के नाम से विख्यात हो जिस से क्षत्रिय जातिहितैषी महाराज का नाम अगली सन्तति के हृदय में बना रहे। अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि श्रीमान् न केवल जिले की ही सभा में किन्तु महासभा में भी तत्परता दिखला कर अपने नाम को दीर्घायख्यात करें।

दुर्गासिंह वर्म्मा

नवयुवकों से प्रार्थना।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि अब राजपूत जाति में भी जागृति के चिन्ह दीख पड़ते हैं। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण क्षत्रिय महासभा इत्यादि है। परन्तु न जाने इस जाति के नवयुवक, जिनके ऊपर इस जाति की भविष्य उन्नति निर्भर है, क्यों हाथ पर हाथ दिये गफ़लत की निद्रा में शयन कर रहे हैं। समयानुकूल इस समय एक "राजपूत यंगमैन एसोसिएशन" की अत्यन्त आवश्यकता है। इस हेतु पंजाब तथा बिहार के कुछ युवक गण यथेष्ट चेष्टा भी करते दीख पड़ते हैं तथा कुछ अन्य अन्य प्रान्तों के युवकों ने भी साथ देने का वचन दिया है। परन्तु संयुक्त प्रान्त से, जहां क्षत्रियों की भारी आबादी है, अभी तक नवयुवक क्षत्रिय तैयार नहीं हुए हैं और इसी कारण इस श्रेष्ठ कार्य्य में कुछ विलम्ब है। आशा है कि मेरे निवेदन की ओर संयुक्त प्रान्त वासी युवक क्षत्रियों का ध्यान आकर्षित होगा। जो युवक इस सभा में योग देना चाहते हैं कृपया शीघ्र ही निम्न पता से निज सुमति भेज बाधित करें॥

कु० प्रतापसिंह

षष्ठ मास्टर "राजपूत दुआबा स्कूल"

नदालों—होशियारपुर।

जिस समय क्षत्रिय महासभा बनारस में हुई थी तो नवयुवक क्षत्रिय विद्यार्थियों ने "क्षत्रिय स्टुडेन्ट्स एसोसियेशन" स्थापित की थी और उसके वार्षिक अधिवेशन क्षत्रिय महासभा के साथ गत वर्ष तक होते रहे थे, इस वर्ष उस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था नहीं हम को ज्ञात नहीं हुआ क्योंकि उस एसोसियेशन के सेक्रेटरी आदि पदाधिकारी पूर्वीय जिलों के ही विद्यार्थी थे।

यदि नवीन स्थापन होने वाली "राजपूत यंगमैन एसोसियेशन" का सम्बन्ध साधारणतः सब ही युवाओं से रहे तो अच्छा है। इस सभा के उद्देश्य भी प्रायः वही हों जो महासभा के हैं और इस के द्वारा विशेषतः नवयुवाओं के शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति करने का तथा जातीय अनुराग बढ़ाने का यत्न किया जाय।

सम्पादक।

जातीयप्रसंग

राजपूत हाईस्कूल आगरा से २२ विद्यार्थी मैट्रीकुलेशन परीक्षा में भेजे गये हैं। मिस्टर कोरसाइद एम. ए. के निरीक्षण में स्कूल में शिक्षा का प्रबन्ध बहुत ही उत्तम है। आप जैसे उत्तम शिक्षक हैं वैसे ही सु-प्रबन्धक भी हैं।

श्रीमान् ठाकुर उमराव सिंहजी रईस कोटिला जिला आगरा व प्रेसीडेन्ट क्षत्रिय महासभा के तृतीय पुत्र कुंवर महेन्द्रपाल सिंह का विवाह मारवाड़ के चांपावत राठौरों के एक प्राचीन ठिकाने रवासी से हुआ। यह वैवाहिक कार्य्य महासभा के नियमानुसार हुए। २५०) महासभा को विवाह के उपलक्ष में प्रदान किये जाने की सूचना हमको दी गई है। चिरंजीव वर वधू को बधाई है।

हरदोई जिले की क्षत्रिय सभा के उद्योगी और उत्साही पदाधिकारियों और सभासदों के उद्योग से तथा श्रीमान् राजा साहब भानेपुर कटियारी की विशेष सहायता से क्षत्रिय विद्यार्थियों के लिये हरदोई में बोर्डिंग हाउस स्थापित होने वाला है। इस के मकान की नींव ५ मार्च को रक्खी जावेगी, उस समय हरदोई सभा का वार्षिक अधिवेशन भी अच्छे समारोह के साथ होने वाला है। उसी समय हरदोई में वार्षिक प्रदर्शनी भी है। हरदोई तथा आस पास के जिलों के क्षत्रियों को सभा के वार्षिकोत्सव में सम्मलित होना चाहिये।

क्षत्रिय स्थानीय सभा हरदोई के सेक्रेटरी के अनुरोध से ठाकुर भगवानसिंह जी उपदेशक क्षत्रिय महासभा हरदोई के जिले में उपदेश करने के लिये भेजे गये हैं। यथा अवकाश आस पास के जिलों में भी उपदेश करने जा सकते हैं। जो समीपवर्ती स्थानों के स्वजाति हितैषी क्षत्रिय उनको बुलाना चाहें वे सेक्रेटरी क्षत्रिय सभा हरदोई या सेक्रेटरी क्षत्रिय महासभा, आगरा, को पत्र लिख कर बुला सकते हैं।

कुंवर हीरासिंह जी हरथला जिला शाहजहांपुर ने प्रस्तावित क्षत्रिय
लिये २२) क्षत्रिय महासभा के वार्षिकोत्सव पर अलीगढ़
प्रदान किये। इन में से ११) वे हैं जो सन् १९०८ में देने

की प्रतिज्ञा की थी। आप ने स्वतः ही स्वजाति-हितैषिता से यह द्रव्य प्रदान किया इसलिये आप विशेष धन्यवाद के योग्य हैं।

निम्न लिखित महानुभावों ने क्षत्रिय महासभा की मेम्बरी का चन्दा प्रदान किया। धन्यवाद है। अन्य महानुभावों से भी महासभा के वार्षिक चन्दा भेजने की प्रार्थना है।

६) मियां मोतीसिंह जी दुनेरा (पंजाब)
६) कुंवर सुरेन्द्रसिंह जी खिमसेपुर जि० फर्रुखाबाद
६) कुंवर हरहरदत्तसिंह जी ग्रीहटबीरम जिला सीतापुर
६) कुंवर जवाहरसिंह जी ग्रीहटबीरम „ „

राजपूत दुआया स्कूल के क्षत्रिय शिक्षक बड़े उत्साही और स्वजाति-प्रेमी मालूम होते हैं। इस के सेक्रेटरी ठाकुर सुर्जन सिंहजी भी बड़े स्वजातिहितैषी हैं और इसलिये हम आशा करते हैं कि यदि ऐसा ही उत्साह रहा तो यह स्कूल अच्छी उन्नति करेगा और आस पास के क्षत्रियों की सन्तानों के लिये बड़ा उपकारी सिद्ध होगा। आगामी मार्च मास में इस स्कूल के मकान की नींव रखने का उत्सव धूमधाम से होने वाला है।

ठाकुर गदाधर सिंह जी पो०मा० हरदोई एक भजन मंडली बनाने के प्रयत्न में हैं जो कि क्षत्रिय भाइयों के निमन्त्रित करने पर उन के विवाहादिक उत्सवों पर जा कर गान किया करे और साधारणतः उपदेशमय भजन गाकर महासभा के मन्तव्यों का प्रचार हरदोई आदि जिलों में किया करे। ऐसी भजन मंडली के लिये आप को एक अच्छे गायक की आवश्यकता है। जो गाना जानते हों और इस कार्य्य को करना चाहें वे उक्त ठाकुर साहब से मासिक वेतन आदि के विषय में पत्र व्यवहार करें।

निवेदन।

महासभा की प्रबन्धकारिणी कमेटी का जो अधिवेशन अलीगढ़ में हुआ उसका विवरण आगामी अंक में छपेगा। सेक्रेटरी क्षत्रिय महासभा अपने भाई के विवाह के कारण आगरे न ठहर सके इसलिये उक्त सभा का कार्य्यविवरण छपने के लिये देर से मिला।

विज्ञापन।

क्षत्रिय स्थानीय सभा बुलन्दशहर का मासिक अधिवेशन ता० १६ जनवरी के बजाय ता० ६ फरवरी सन् १९१० ई० को ग्रामबामनपुर डाकघर ग्रहार में १२ बजे दिन के कुंवर रामचरन सिंह जी सभासद के प्रबन्ध से होगा। मेम्बरान व क्षत्रिय गण पधार कर कृतार्थ करें।

ठाकुर नवलसिंह वर्म्मा—मन्त्री सभा।

विज्ञप्ति।

राजपूत के जिन ग्राहक महाशयों का पता चिट पर ठीक न छपा हुआ हो या पता बदल गया हो वे कृपा कर अपना पता ठीक होने के लिये शीघ्र सूचना दें। बहुधा ग्राहकों के पते ठीक न होने से पैकट वापिस आते हैं।

मैनेजर राजपूत।

सूचना।

'राजपूत' के ग्राहकों से जो वार्षिक मूल्य प्राप्त हुआ है वह कई मास तक का छपने को शेष है। हम साधारण कागज के आठ पृष्ठों पर ग्राहकों का मूल्य छाप कर आगामी अंक में जुड़वा देंगे और यदि इन २४ पृष्ठों में से कुछ पृष्ठों पर नाम छापते तो फिर यथेष्ट स्थान लेखों के लिये न रहता।

विज्ञापन।

जो विद्यार्थी "मित्र महिमा" पर ४ पेज का लेख भेजेंगे उन में से सर्वोत्तम लेखक को २॥) की उत्तम पुस्तक पुरस्कार में दी जायगी। लेख १५ अपरैल तक अवश्य पहुंच जाना चाहिये। स्वीकृत लेख पर सम्पूर्ण अधिकार पुरस्कार दाता का रहेगा। फल शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

विज्ञापक—कुंवर युगलकिशोरनारायणसिंह चौहान
पोइग्रायां (गढ़)

लेख भेजने का पताः—
ठाकुर शिवरत्नसिंह जी जिमीन्दार—पोइग्रायां (गढ़)
पोस्ट—औरंगाबाद जिला गया।

सु
सुख
संचारक
को० मथुरा का
सि
सुधासिंधु
धु
सरकार से रजिस्ट्री
किया हुआ
की० सिर्फ
॥)
धा
१९ वर्ष की परीक्षित है
हमारे यहां के "सुधासिंधु„ से कफ, खांसी, जाडे का बुखार, दमा, बच्चों व बडों की कुकर खांसी और सर्दीकी खांसी अच्छी होती है.
हैजेकी यह खास दवा है
तथा कै, दस्त, आंवलाहूयं दस्त, संग्रहणी, अतिसार हड़िया का दर्द, पेट का दर्द, बच्चों का दूध पटक देना और रोना. इनकी जारवेरंद दवा है ॥)
सब दवा बेचनेवालों के पास मिलताहै.
१५००से ऊपर इसके एजेंट हैं.